सामाजिक अध्ययन
कक्षा - सात

परिचय

यह पाठ्य सामग्री 'एकलव्य' ग्रुप ने राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, मध्य प्रदेश के कुछ स्कूलों के लिए प्रयोगात्मक रूप से पढ़ाने के लिए तैयार की है। शिक्षकों व विद्यार्थियों के निरन्तर सहयोग व फीडबैक से यह सामग्री लगातार बदलती रहेगी और बेहतर होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। ग्रुप के कार्यकर्त्ता शालाओं में नियमित अनुवर्तन इसी उद्देश्य से करते रहते है।

पाठ्य सामग्री विकसित करने में हमें मध्य प्रदेश के कई महाविद्यालयों, दिल्ली विश्वविद्यालय व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के व्याख्याताओं का सहयोग बराबर मिलता रहा है।

पुस्तक का चित्रांकन कैरन, गणेश दुबे, शोभा अग्रवाल, राजेश यादव तथा अर्चना श्रीमाली ने किया व लिखाई कमलेश दुबे और गोपाल ने की है।

एकलव्य ग्रुप

एकलव्य
अध्ययन केन्द्र मालाखेड़ी
होशंगाबाद फोन- 277267

विषय सूची

इतिहास

१. प्राचीन काल में भारत भ्रमण १-७
२. महाराजाधिराज समुद्र गुप्त ८-१४
३. गांव ही गांव खेत ही खेत १५-२१
४. कुछ प्रमुख लोग कुछ प्रमुख बातें २२-२५
५. हर्ष के समय में शबर वनवासी २६-३०
६. राजवंश और सामंत ३१-३७
७. ब्राह्मणों को भूमिदान ३८-४१
८. गांव और शहर के लोग ४२-५२
९. उत्तर भारत के गांव ५३-५८

भूगोल

१. स्कूल का मानचित्र ५९-६३
२. ऊंचा पहाड़ नीचा मैदान ६४-६७
३. वर्षा आई नदी बही ६८-७९
४. भू जल भण्डार ८०-८५
५. जीवन दायिनी मिट्टी ८६-९२

नागरिक शास्त्र

१. शहर में उद्योग धन्धे ९३-९४
२. बीड़ी और बीड़ी बनाने वाले ९५-१०४
३. चमड़ा बनाने की कहानी १०५-११०
४. कारखानों में क्या होता है १११-१२१

Class No ----
Book No. ----
Shelf No ----
Acc. No. ----

इतिहास

1

प्राचीन काल में भारत भ्रमण

अगर तुमसे कोई पूछता कि भई तुमने अपने देश के इतिहास के बारे में सबसे पहले क्या पढ़ा, तो तुम यही कहते न, कि सबसे पहले शिकारी मानव के बारे में पढ़ा। फिर उस समय के बारे में पढ़ा जब खेती होनी शुरू हुई और ..... पाले जाने लगे। फिर गांव बसे। फिर सिन्धु घाटी के क्षेत्र में ..... बने। उसके बाद ..... आर्यों का समय देखा, फिर वो समय देखा जब आर्य ..... करने लगे। फिर जनपदों के युग में पहुँचे जिसमें ..... और ..... नाम के राजाओं के बारे में जाना, और ....., ..., ..., ... जैसे शहरों को देखा।

फिर यह देखा कि ..... का राज्य धीरे-धीरे बढ़ने लगा और वहाँ मौर्य वंश के राजाओं का शासन हुआ। इस वंश के जो प्रमुख राजा हुए वे थे ..... व ..... व ..... ।

यह सब होते-होते कितना समय बीत गया होगा। दरअसल कई हज़ार साल का लंबा समय गुज़र गया।

नक्शा - 1

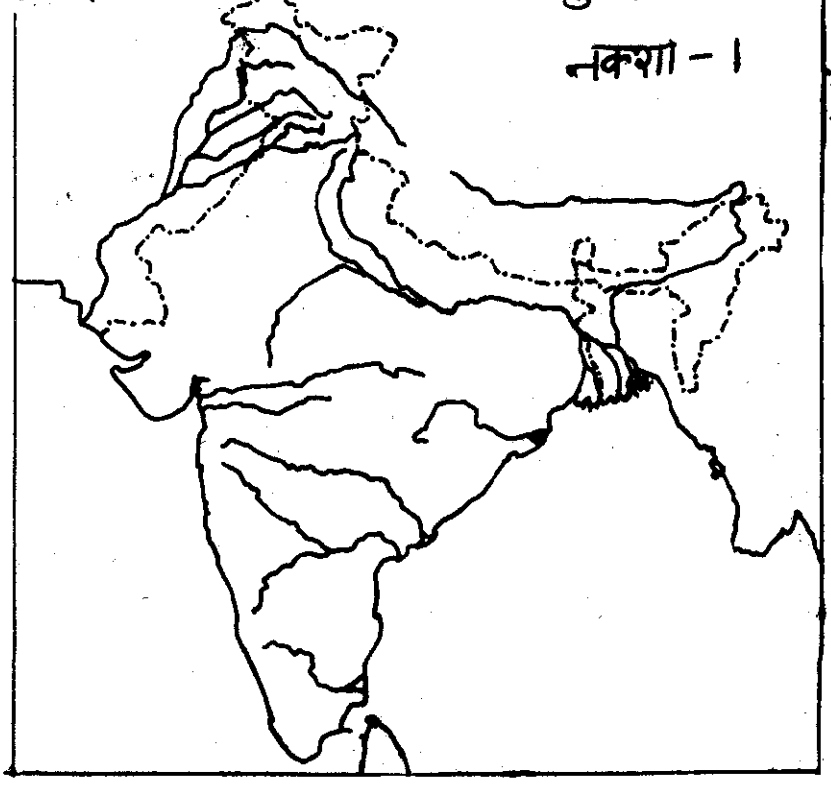

जनपद राजा और शहर हुए - पर कहाँ ? पूरे भारत में या किसी खास क्षेत्र में ?

इस क्षेत्र को तुम अच्छी तरह पहचान गए होगे। इसलिए साथ दिए नक्शे में उस क्षेत्र को अपनी पेन्सिल से हल्के-हल्के रंग देने में तुम्हें मुश्किल नहीं होगी।

देखें उसे तुम कितने सही ढंग से रंग पाते हो।

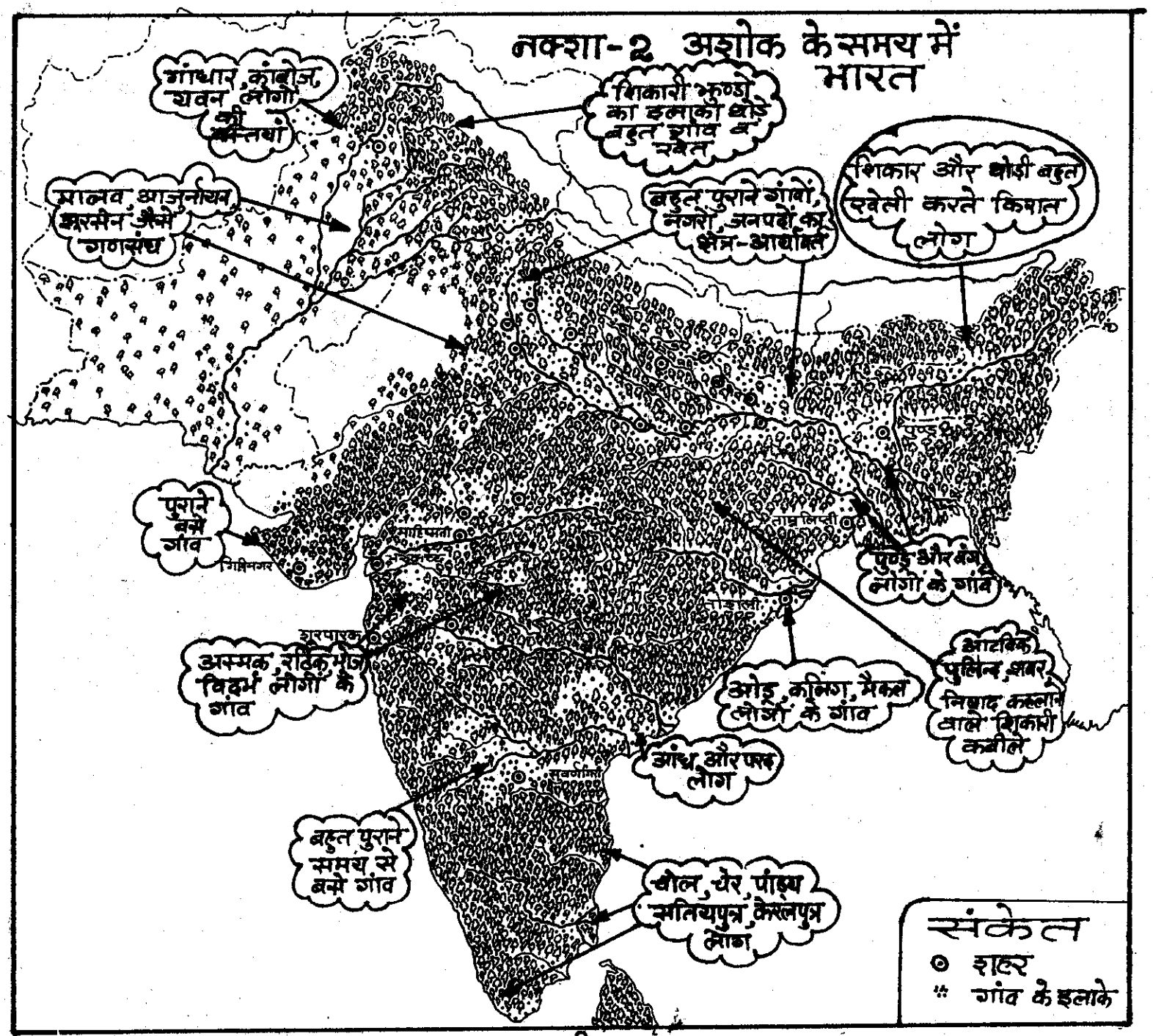

नक्शा-2 अशोक के समय में भारत

गाँव नगरों व राजाओं की चहल-पहल वाले इस क्षेत्र से अगर हम निकलते और भारत की एक लम्बी यात्रा पर जाते तो क्या पाते ? पर पहली बात तो यह है कि यात्रा पर जाएँ कैसे ? उस समय के किसी यात्री ने पूरे भारत का भ्रमण कर के हमारे लिए कोई पुस्तक भी नहीं लिख छोड़ी है।

हाँ एक उपाय है। पुराने समय के कुछ ग्रंथो और राजा अशोक के शिलालेखों से कुछ जानकारी बटोरी जा सकती है। इसी के सहारे चलो हम अशोक के समय भारत भ्रमण पर निकलें। देखें, कहाँ कौन लोग रहते थे, क्या करते थे।

चलो अपनी यात्रा शुरु करें।

मौर्य राजा अशोक की राजधानी पाटलिपुत्र छोड़कर जब हम ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी में आएँ तो हम वहाँ पहुँच गए जहाँ आज आसाम प्रदेश है। पर मौर्यों के समय इसे आसाम प्रदेश कोई नहीं कहता। यहाँ बहुत घने जंगल हैं। और उनमें किरात लोग शिकार कर के जीते हैं। बहुत ही थोड़े से गांव व खेत हमें दिख रहे हैं। शहर जैसा भी यहाँ कुछ नहीं दिखता। यहाँ के लोगों का कोई राजा हुआ हो - ऐसा कुछ सुनने को नहीं मिलता।

ब्रह्मपुत्र नदी के साथ-साथ हम दक्षिण में उतरे और गंगा नदी के मुहाने की तरफ बढ़े तो घने जगलों के बीचों-बीच कई गाँव और खेत दिखाई देने लगे। यहाँ पुण्ड्र और वंग लोगों की बस्ती है। उनके भी किसी राजा का ज़िक्र सुनने में नहीं मिलता। हां मगध के मौर्य राजा उन पर शासन करते हैं। यहाँ के दो प्रसिद्ध शहर हैं - पुण्ड्र और ताम्रलिप्ती। जब हम समुद्र-तट पर पहुँचते हैं तो ताम्र-लिप्ती नगर आता है। यह एक बन्दरगाह है। यहाँ व्यापारी अपना सामान जहाजों पर भर रहे हैं।

(यात्रा में तुम भटक तो नहीं रहे ? साथ दिए नक्शे की मदद लेते रहो।)

समुद्र तट के साथ-साथ जब हम दक्षिण को बढ़ते गए तो रह-रह कर बहुत से गाँव व खेत दिखने लगे। महानदी के मैदान में ओड्र, कलिंग, उत्कल, मेकल लोगों के गाँव हैं। उनका एक शहर भी है - तोशाली

यहाँ अशोक के अधिकारी रहते हैं। अशोक ने कलिंग लोगों को डराया था न!

तट से अन्दर जो पहाड़ियाँ दिख रही हैं और दूर दूर तक जो जंगल हैं, उनमें कई शिकारी कबीले रहते हैं। उन्हें निषाद, पुलिन्द, शबर या आटविक जैसे नामों से जाना जाता है।

हम कुछ और दक्षिण को चले तो गोदावरी और कृष्णा नदियों के मुहाने में पहुँच गए। यद्यपि हमें यहाँ भी कई गांव व खेत दिखाई देते हैं, हमें रह-रह कर घने जंगलों से गुज़रना पड़ता है। जंगल में आन्ध्र और परद लोग शिकार कर के जीते हैं। कुछ आन्ध्र और परद लोगों ने खेती भी शुरु कर दी है। हम उन्हीं के गांवों से गुज़रे थे।

अब हम चलते-चलते काफ़ी दूर दक्षिण में पहुँच गए हैं। कावेरी नदी के मैदान में। इस क्षेत्र में कई लोगों के गाँव व खेत हैं- जैसे चोल, चेर, पांड्य, केरलपुत्र, सतियपुत्र। गाँवों के बीच जंगलों में शिकारी और पशुपालक कबीले हैं। समुद्रतट पर रहने वाले कुछ लोग मोती चुनते, मछली मारते, नमक बनाते और इन चीज़ों का व्यापार करते नज़र आते हैं। ये रुयिनर लोग हैं।

कितने अलग-अलग तरह के लोग रहते मिले हमें! इन सबकी अपनी बोली है, अपने-अपने देवी-देवता, और रीति रिवाज़ हैं। हाँ इनके बीच कहीं कहीं बौद्ध श्रमण या जैन मुनि और कुछ ब्राह्मण भी पहुँच गए हैं। पर इन लोगों के बीच वैदिक यज्ञ संस्कार करने की चाल फैली हो, ऐसा नहीं लगता। जितने लोग हमने देखे, उनके बीच अपना कोई बड़ा राजा हुआ हो, जिसने कोई राज्य बनाया हो, ऐसा भी नहीं लगता।

अब अपन यात्रा का दूसरा चरण शुरु करें। भारत के दक्षिण से वापिस उत्तर दिशा में चलें। पहले तो समुद्र का किनारा छोड़कर ज़रा दक्कन के पठार पर जा कर देख लें कि वहाँ क्या हो रहा है। हम कृष्णा नदी के मैदान में पहुँचे। बहुत सारे गाँव व खेत हैं। ये काफी समय से बसे हुए हैं।

इनके बीच एक शहर भी है - सुवर्णगिरी। हाँ यहाँ भी राजा अशोक के अधिकारी रहते हैं। चलते-चलते हमें अशोक के शिलालेख भी दिख जाते हैं। इस इलाके में सोने की अच्छी खदानें हैं। लोग इनमें से सोना निकालकर उसका व्यापार करते हैं। यहाँ के लोगों का भी अपना कोई राजा नहीं हुआ है।

कुछ और उत्तर को बढ़े तो हम भोज, रठिक, अस्मक, विदर्भ लोगों के गाँवों के बीच पहुँच गए। कहीं-कहीं खेती हो रही है और कहीं कहीं शिकार। विदर्भ लोगों के यहाँ लोहा निकालने व गलाने का काम खूब होता है।

दूर-दूर तक यहाँ कोई शहर है तो बस एक - प्रतिष्ठान। पर जब हम समुद्र तट की तरफ़ बढ़ने लगे तो देखा बैलगाड़ियों और खच्चरों पर लदकर कहीं दूर का सामान भरुकच्छ और सूरपारक नाम के बन्दरगाहों की तरफ़ जा रहा है - दूर व्यापार के लिए। भोज, रठिक, विदर्भ लोगों का भी अपना कोई राजा नहीं हुआ। मौर्य राजा ने जरूर इस क्षेत्र पर अधिकार किया हुआ है।

आओ अब हम दक्षिणापथ से विदा लें। नर्मदा नदी से दक्षिण में पड़ने वाला यह सारा इलाका दक्षिणापथ कहलाता है।

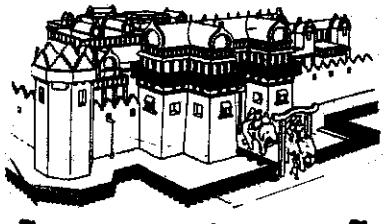

नर्मदा पारकर के हम फिर एक जाने पहचाने इलाके में पहुँच जाते हैं। यह पुराने अवंति जनपद का इलाका है। यहाँ गाँव तो गाँव पर उज्जयिनी, विदिशा, माहिष्मती जैसे बड़े नगर हैं। जनपदों के समय यहाँ राजा हुए थे, जो मगध राज्य से हार गए थे।

अवंति से पश्चिम की तरफ़ कुछ कारवाँ जा रहे हैं। हम साथ हो लिए तो पहुँचे गिरिनगर शहर। यहाँ भी काफी पुराने गाँव बसे हैं। यहाँ के किसी राजा का ज़िक्र सुनने को नहीं मिलता। पर यह क्षेत्र मौर्य राज्य

में आता है।

फिर जब हम गिरिनगर से उत्तर की ओर चलने लगे तो अहसास हुआ कि अब हम घने जंगलों के बीच नहीं हैं। अब हल्के-हल्के जंगल हैं, झाड़ियों, घासों का सूखा सा इलाका है। यहाँ के लोग पशुपालन ज्यादा करते दिखे। यहाँ खेती बहुत कम होती दिखी।

यहाँ कई गण संघ हैं-मालव, यौधेय, आर्जुनायन, मत्स्य, शूरसेन मद्रक। पुरानी परम्परा के अनुसार गण-संघों में कोई एक व्यक्ति राजा नहीं होता। वंश के सब पुरुष या प्रमुख लोग मिलकर राज्य चलाते थे। ये गण संघ अभी मौर्य राजा के आधीन हैं।

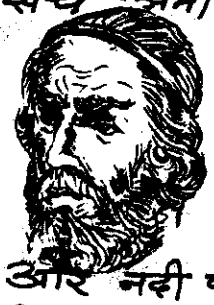

चलो कुछ और उत्तर में जहाँ पहाड़ दिखने लगे हैं। लो, फिर एक पुराना परिचित नगर आ गया— तक्षशिला। यहाँ गांधार, कांबोज और यूनानी लोगों की बस्तियाँ हैं।

चलते-चलते हम कश्मीर के ऊँचे, ठंडे पहाड़ों, और नदी घाटियों में पहुँचे हैं। यहाँ जो लोग दिखे वे ज्यादातर शिकारी लोग थे। कहीं-कहीं कुछ खेती होती है, थोड़े बहुत गाँव हैं। यहाँ भी न कोई शहर है, न राजा।

कश्मीर की घाटियों से हम उतरे तो गंगा, यमुना, सिन्धु नदियों के मैदान में लौट आए। यहाँ दूर-दूर तक खेत व गाँव हैं। यह कई सारे पुराने शहरों और जनपदों का इलाका है। बीते हुए सालों में यहाँ के कई राजा कितने ही युद्ध लड़ चुके हैं। अपने राज्य घटा बढ़ा चुके हैं। और अब यह मौर्य वंश के राज्य का बहुत महत्व-पूर्ण क्षेत्र है। लोग इसे आर्यावर्त के नाम से जानते हैं। यहाँ के लोगों के बीच जैन व बौद्ध धर्म का असर है और वैदिक धर्म का भी।

अब यह यात्रा समाप्त करें।

वैसे तो हमने कहा कि हम राजा अशोक के समय भारत भ्रमण पर निकले थे। पर, उस समय हम जितने लोगों से मिले, उनमें से कोई भी यह न कहता कि वो भारत देश में रहता है और

भारतवासी है। वो शायद कहता मैं भोज हूँ, मैं रठिक हूँ, मैं पुलिन्द हूँ, या मैं अवन्ती का रहने वाला हूँ, या मैं चोल देश का रहने वाला हूँ। लोग जिस क्षेत्र मे रहते थे वही उनके लिए उनका देश था। जिन लोगों से हम मिले, उनमें से कईयों के बीच आपस मे कोई सम्पर्क ही न था, कुछ लोग जंगलों के बीच खोए थे। कुछ जंगल के इस तरफ़ खेती करते थे, कुछ जंगल के उस तरफ़।

नक्शे मे तुम्हें हल्के बिन्दुओं से खेतीहर इलाके दिख रहे हैं। कितने कम हैं ये! गंगा-यमुना सिन्धु के मैदान को छोड़कर, बाकी जगह शहर भी गिने चुने हैं। और जहाँ राजा, मंत्री, अधिकारी हों, ऐसी जगहें भी बहुत कम हैं।

अभ्यास

नक्शा देखो और बताओ:-

1- राजा अशोक के समय खेतीहर इलाके सबसे ज्यादा किन नदियों के मैदान में थे?

2- अलग-अलग क्षेत्रों में खेती करने वाले लोग कौन-कौन थे- यानि, वे क्या कहलाते थे?

3- जंगल में रहने वाले शिकारी कबीले किन नामों से जाने जाते थे?

4- मौर्यों के समय में बन्दरगाह और नगर कौन-कौन से थे?

5- कौन सी बात सही है?-
(अ) मौर्यों के समय 'भारत' के अधिकांश क्षेत्रों के लोगों के बीच वैदिक धर्म फैला हुआ था।
(ब) मौर्यों के समय पूरे भारत में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ही गांव व शहर मिलते थे।
(स) मौर्यों के समय अधिकांश क्षेत्रों में राजा नहीं बने थे।
(द) हर क्षेत्र के लोगों की अपनी बोली और अपने रीति रिवाज थे।

महाराजाधिराज समुद्रगुप्त 2

राजा अशोक के लगभग 500 सालों बाद सन् 350 में एक और बड़ा राजा हुआ - समुद्रगुप्त। उसकी राजधानी भी पाटलिपुत्र थी। उसके द्वारा जारी किए गए सिक्कों में से एक सिक्का यहाँ देखो। राजा समुद्रगुप्त वीणा बजा रहे हैं, निश्चय ही समुद्रगुप्त को संगीत प्रिय था। उनके दरबार में अच्छे से अच्छे कवि व कलाकार भी हुआ करते थे।

समुद्रगुप्त के बारे में जितनी यह बातें प्रसिद्ध हैं, उतनी ही प्रसिद्ध हैं उनकी युद्ध विजय की बातें। महाराजा समुद्रगुप्त ने किन राजाओं को युद्ध में हराया और किन राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया - यह पूरा ब्यौरा हमें हरिसेन देता है। हरिसेन समुद्रगुप्त के दरबार का एक अधिकारी और कवि था। उसने समुद्रगुप्त की प्रशंसा में एक लम्बी प्रशस्ति लिखी। यह प्रशस्ति एक लम्बे पत्थर के खम्बे पर खुदवाई गई। यह खम्बा आजकल इलाहाबाद के किले में रखा हुआ है। हरिसेन ने प्रशस्ती संस्कृत में लिखी थी, सो हमने उसको हिन्दी में लिखकर तुम्हारे लिए यहाँ दी है। इसे पढ़ते-पढ़ते तुम एक बार फिर भारत की यात्रा पर निकल पड़ोगे। देखना कैसा फ़र्क आ गया है। तुम्हारी मदद के लिए नक्शा क्र.3 साथ दिया है।

"समुद्रगुप्त पराक्रमी होने के साथ-साथ उदार भी हैं। इस कारण उसने सारे दक्षिणापथ के राजाओं को युद्ध में हराकर उनके राज्य उन्हें लौटा दिए। ये दक्षिणापथ के राजा हैं - कोशलराज्य के महेन्द्र, महाकान्तार के व्याधराज, कुराल के मण्डराज, पिष्टपुर का महेन्द्रगिरी, कोट्टूर का स्वामीदत्त, एरण्डपल्ली का दमन, कांचीपुरम का विष्णुगोप, अवमुक्त का नीलराज, वेंगी का हस्तिवर्मन, पालक्क का उग्रसेन, देवराष्ट्र का कुबेर और कुष्टलपुर का धनंजय"

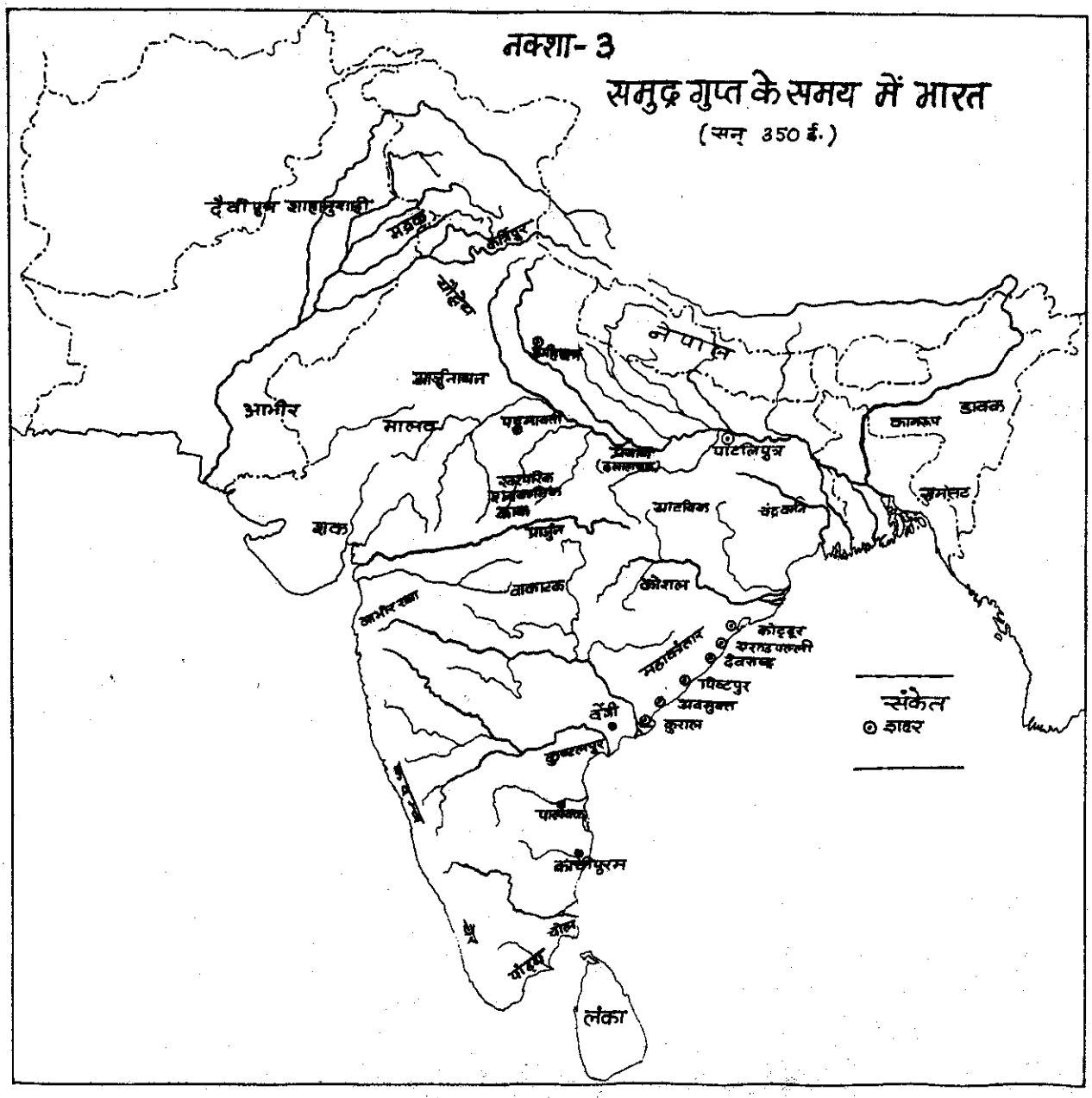

नक्शा- 3
समुद्र गुप्त के समय में भारत
(सन् 350 ई.)
नेपाल
आभीर
मालव
आर्जुनायन
पद्मावती
पाटलिपुत्र
कामरूप
डावक
समतट
आटविक
कोशल
वाकाटक
प्रार्जुन
शक
महाकान्तार
कोट्टूर
एरण्डपल्ली
देवराष्ट्र
पिष्टपुर
अवमुक्त
कुराल
वेंगी
कुस्थलपुर
कांचीपुरम
लंका
संकेत

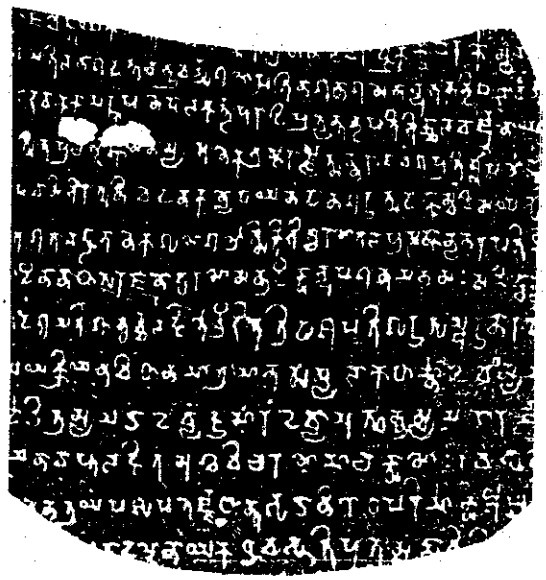

तुम नक्शा नं०3 में ये स्थान ढूंढते चलो। इनके नीचे एक रेखा भी खींचते जाओ। इस तरह तुमने एक बार फिर से भारत के पूर्वी तट की यात्रा कर ली है। अशोक के समय तुमने जब यह यात्रा की थी तो यहाँ क्या-क्या पाया था? और अब 500 साल बाद समुद्रगुप्त ने उसी पूर्वी तट पर कितने सारे राजाओं को हराया-झट से गिनकर बताओ।

जहाँ अशोक के समय कोई राजा नहीं थे, वहाँ 500 सालों बाद समुद्रगुप्त के समय बहुत से राजाओं के छोटे-छोटे राज्य थे। 500 सालों में ये राज्य कैसे बने होंगे-सोचने की बात है।

हरिसेन का वर्णन आगे पढ़ो। देखो क्या पता चलता है।

"समुद्रगुप्त ने अपने अपार बाहुबल से आर्यावर्त के अनेक राजाओं को खत्म करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। ऐसे राजा थे-माटिल, रुद्रदेव, नागदत्त चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युतनन्दिन और बलवर्मन।"

भई, यहाँ तो हरिसेन ने हमें कठिनाई में डाल दिया। आर्यावर्त के राजाओं के नाम तो गिना दिये, पर यह नहीं बताया कि ये राजा कहाँ के थे। दूसरी जगहों पर खोजबीन करके यह पता चल पाया है कि इनमें से कुछ राजा कोटा, अहिच्छत्र, पद्मावती और बंगाल में राज्य करते थे।

नक्शे में इन जगहों को भी ढूँढो। इस क्षेत्र के ये पहले राजा थे या इस क्षेत्र में पहले भी राजा हो चुके थे? याद करके बताओ। इन राजाओं के साथ समुद्रगुप्त ने वो नीति नहीं अपनाई जो दक्षिणापथ के राजाओं के साथ अपनाई थी। यह फ़र्क तो तुम ज़रूर महसूस कर रहे होगे।

आर्यावर्त और दक्षिणापथ के राजाओं के बीच समुद्रगुप्त की नीति में क्या फ़र्क था। लिखकर समझा दो।

अब देखें हरिसेन हमें और किस क्षेत्र की झलक दिखाता है। प्रशस्ति के बाकी अंश भी पढ़ो—

"समुद्रगुप्त ने सारे आटविक राजाओं को अपना सेवक बना लिया है।"

ज़रा रुको! 'आटविक राजा'। पर अशोक के समय तो शिकारी कबीले आटविक कहलाते थे लगता है इनके बीच भी राजा होने लगे। चलो अब आगे पढ़ें।

समुद्रगुप्त को खुश करने के लिए पड़ोसी राजा भेंट लेकर आते हैं, उसे प्रणाम करते हैं, और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। ऐसे पड़ोसी राज्य हैं- समतट, डावक, कामरूप, नेपाल और कर्त्रिपुर।

ऐसे ही आज्ञाकारी पड़ोसी गणसंघ हैं मालव, आर्जुनायन यौधेय, माद्रक, आभीर, प्रार्जुन, सनकानिक, काक, खरपरिक आदि।

पड़ोसी राज्यों को नक्शे में ढूँढते-ढूँढते कहाँ-कहाँ पहुँच गए हम। तुम्हें भी ये राज्य मिल गए हों तो उनके नीचे एक रेखा खींचते चलो। भई अशोक के समय में जब हमने इन क्षेत्रों की यात्रा की थी तब तो यहाँ कोई राज्य नहीं दिखे थे। सही है न? गणसंघों में भी कई नए गणसंघ दिखते हैं। अगर तुम अशोक के समय के नक्शे को पलट कर देखोगे

तो पहचान जाओगे कि कौन से गणसंघ नए बने हैं। उनके नाम के नीचे भी रेखा खींच दो।

इन पड़ौसी राज्यों और गणसंघों को समुद्रगुप्त ने हराया होगा- ऐसा तो नहीं लगता। हराया होता तो हरिसेन बताने से नहीं चूकता।

फिर क्या सोच के ये पड़ौसी राज्य और गणसंघ समुद्रगुप्त की आज्ञा मानने लगे होंगे? कोई कारण समझ आता है?

ये तो फिर भी पड़ोसी राज्य व गणसंघ थे। हरिसेन तो यहाँ तक लिखता है कि दूर देश के राजा जैसे शक राजा, दैवीपुत्र शाहनुशाही वंश के राजा, श्री लंका के राजा- भी समुद्रगुप्त से दोस्ती करना चाहते हैं। यही नहीं वे अपनी बेटियों का विवाह समुद्रगुप्त से करने में गर्व व खुशी महसूस करते हैं।

समुद्रगुप्त के सिक्के

यह सब पढ़कर तो ऐसा ही लगता है, कि चारों तरफ समुद्रगुप्त का खूब रौब था। बड़ा दबदबा था। इस बात से हमें जरूर सावधान होना चाहिए कि हरिसेन अपने सम्राट की प्रशंसा लिख रहा था तो कुछ बातें उसने बढ़ा-चढ़ा कर लिखी होंगी। पर यह तो समझ में आता ही है कि समुद्रगुप्त जैसा राजा अपने राज्य की ताकत बढ़ाने के लिए एक विशेष तरीका अपना रहा था। उसने बहुत से राजाओं को हराया पर उन सबके राज्य पर खुद शासन तक नहीं किया। जिन राजाओं को हराया उनमें से बहुतों को उनके राज्य में राजा बना रहने दिया। इस तरह हारे हुए राजा उसका बड़प्पन मानने लगे थे। कई राजा जो उससे हारे भी नहीं थे वे भी समुद्रगुप्त का बड़प्पन स्वीकार करने लगे। इसकारण समुद्रगुप्त के प्रति उनका व्यवहार कैसा था, यह तुम बताओ। नतीजा यह रहा कि जिन क्षेत्रों पर समुद्रगुप्त खुद शासन नहीं करता था वहाँ भी उसका रौब रहता था।

ये बातें तो पुराने दिनों से बहुत फर्क थीं। पुराने दिनों में अजातशत्रु, महापद्मनन्द और अशोक जैसे राजा जब दूसरे किसी

राजा को हराते थे तो उसका राज्य अपने राज्य में मिला लेते थे। और उस पर खुद शासन करते थे। पर समुद्र गुप्त की नीति कुछ और ही नज़र आती है।

हालांकि राज्य लौटा देने की नीति उसने सब राजाओं के साथ नहीं अपनायी। ऐसा लगता है कि जो राज्य उसके राज्य के पास थे, उन्हें हराने पर उसने भी अशोक की तरह उन राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया। और उन पर खुद शासन किया।

क्या यह बात तुम्हें भी सही लगती है? जिन राज्यों को समुद्रगुप्त ने अपने राज्य में नहीं मिलाया क्या वे उसके राज्य से दूर थे?

हरिसेन की प्रशस्ति पढ़ते-पढ़ते राजाओं की अलग-अलग नीतियों की बातें पता चलती हैं। पर साथ ही यह भी तो पता चलता है कि समुद्रगुप्त के समय भारत में पहले से कितने ज़्यादा राज्य और गणसंघ हो गए थे। नक्शे में इनके नामों के नीचे तुम रेखा खींचते चले थे। अब मानचित्र क्रं. 1 पर फिर से किताब रखो लो। और जहाँ-जहाँ समुद्रगुप्त के समय में नए राज्य बने हुए थे, उन जगहों को मानचित्र क्रं. 1 में पेन्सिल से रंगकर दिखाओ।

देखो भूल न जाना। समुद्रगुप्त के नक्शे में 5 ऐसे राज्य बने हैं जिनका ज़िक्र तुमने हरिसेन की प्रशस्ति में नहीं सुना। पर उस समय यह राज्य थे, यह बात और कहीं से पता चलती है। इनका क्षेत्र भी मानचित्र 1 में दिखाना। तुम्हारा मानचित्र अब धीरे-धीरे भरता जा रहा है। यानी भारत के कई क्षेत्रों में अब राज्य बन गए थे। जहाँ पहले शिकारी कबीले रहते थे, या जहाँ खेती थोड़ी बहुत शुरू हुई थी वहाँ अब राजा महाराजा होने लगे थे। उनके राज्यों में बहुत से गांव व शहर थे।

समुद्रगुप्त के बाद.....

समुद्रगुप्त का पुत्र चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य राजा बना..... उसने शक राजा को हराकर अपना साम्राज्य गुजरात तक फैला लिया।..... पाटलीपुत्र के अलावा उसने उज्जैनी को भी अपनी राजधानी बनाया।..... चन्द्रगुप्त के

बाद कुमार गुप्त और फिर स्कन्दगुप्त राजा हुए। उनके शासन काल में मध्य एशिया के हूण नामक कबीलों ने कई बार आक्रमण किए। गुप्त राजा हूणों से लड़े। पर धीरे-धीरे इस कारण उनकी ताकत कमज़ोर होती गई। करीब सन् ५५० तक आते-आते गुप्त वंश का शासन खत्म हो गया।

अभ्यास

(1) समुद्रगुप्त की राजधानी _____ थी।

(2) समुद्रगुप्त को _____ बजाना पसन्द था।

(3) हरिसेन ने जो प्रशस्ती लिखी उससे समुद्रगुप्त की _____ के बारे में पता चलता है।

(4) समुद्रगुप्त ने कहाँ के राजाओं को हराकर उनके राज्य लौटा दिए? आर्यावर्त के / दक्षिणापथ के / पड़ोसी राज्य के गणसंघ

(5) समुद्रगुप्त ने कहाँ के राजाओं को हराकर उनके राज्य अपने राज्य में मिला लिए- आर्यावर्त के / दक्षिणापथ के / पड़ोसी राज्य के गणसंघ

(6) कौन राजा समुद्रगुप्त से हारे बिना ही उसका बड़प्पन मानते थे? आर्यावर्त के / दक्षिणापथ के / पड़ोसी राज्य व गणसंघ के।

(7) दूर देश के राजा समुद्रगुप्त से कैसे संबंध बनाना चाहते थे?

(8) अगर कोई तुमसे पूछे कि अशोक के समय की तुलना में समुद्रगुप्त के समय भारत में जो नए राज्य थे - वे कहाँ थे? मानचित्र 1 की सहायता से तुम बताने की कोशिश करो।

(9) राजा अशोक के समय और समुद्रगुप्त के समय में किन बातों में फ़र्क आया?

(10) स्कन्द गुप्त के समय में किन लोगों ने कई हमले किए?

सिंचाई की बात आजकल गांवों में सब करते हैं। कुएँ से सिंचाई, नहर से सिंचाई, तालाब से सिंचाई। क्या तुम्हें आश्चर्य होगा अगर हम यह बताएँ कि समुद्रगुप्त और उसके बाद के समय में भी गांवों में सिंचाई के उपायों पर चर्चा होती रहती थी?

सिंचाई की बात करना तब बहुत ज़रूरी हो गया था। ये वो समय था जब लोग खेती फैला रहे थे। नए-नए गाँव बसा रहे थे।

राजा अशोक के समय में तो खेतीबाड़ी अक्सर नदियों के किनारे ही होती थी। ऐसी नदियों के किनारे जिनमें सालभर पानी रहे, और ज़रूरत पड़ने पर नहरों से खेतों की सिंचाई हो सके।

पर सालभर बहने वाले नदी नाले तो बहुत कम हैं। अधिकांश नदी नाले बारिश में बहते हैं, फिर सूख जाते हैं। जो लोग खेती फैलाने की कोशिश कर रहे थे उन्हें ऐसे इलाकों के लिए सिंचाई का कोई उपाय ढूँढना पड़ा, जहाँ सालभर बहने वाले नदी नाले नहीं मिलते थे।

लोगों ने बहुत प्रयत्न किए, बहुत प्रयोग किए, और सिंचाई के नए-नए तरीके खोज निकाले।

तालाब: पठारी ज़मीन पर खेती फैलाने की कोशिश करने वालों ने तालाब बनाकर सिंचाई करने का तरीका खोजा। उन्होंने पाया कि ज़मीन ऊँची-नीची है—कहीं ढलान है, तो कहीं चढ़ाई। बरसात का पानी ऊँची जगहों से बहकर निचली जगहों में इकट्ठा हो जाता है। लोगों ने सोचा

होगा कि ऐसी जगह अगर बाँध बना दिया जाए तो पानी रुका रहेगा, और सालभर सिंचाई के काम आएगा।

उस पुराने समय में दक्कन के पठार (यानी कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु) में सैकड़ों तालाब बनाए गए थे। तालाब से नहरें निकालकर ज़मीन सींची गई। खेती बढ़ी, और फैली। नए-नए गाँव बसे। कई गांवों के नाम ही तालाब शब्द पर पड़ गए। जैसे गाँव अरसियगेरे (कन्नड़ में गेरे का मतलब तालाब), गाँव मारनेरी (तमिल में एरी का मतलब तालाब)

यह सब वास्तव में था, इस बात का हमें पता ऐसे चलता है कि उस समय की कई बातें ताँबे के पट्टों पर या पत्थर के खम्भों, चट्टानों पर खुदी मिलती हैं। उन्हें हम अभिलेख कहते हैं। उनको पढ़ो तो कहीं न कहीं तालाब के होने का ज़िक्र आ ही जाता है।

उदाहरण के लिए यह देखो कर्नाटक के कलिकत्ती गांव के सन् 1209 के एक अभिलेख का कुछ अंश:-

"महाप्रधान कुमार पंडितैय के पुत्र बिट्टैय ने कालीदेव के उत्तर में एक तालाब बनवाया। और वहाँ अपने नाम से बिट्टेन हल्ली नाम का गाँव बसाया। उसने एक और तालाब भी बनवाया - बिट्टेय समुद्रम नाम का।"

तो बिट्टेय ने एक नया गाँव बसाने के लिए सबसे पहले क्या किया?

अधिकतर तालाब तो गांव के लोगों ही ने बनाए होंगे। पर, कभी-कभी राजा भी तालाब बनवाते थे। कहा जाता है, कि भोपाल का बड़ा तालाब और भोजपुर का तालाब (जो अब सूख गया है) राजा भोज ने सन् 1000 के आसपास बनवाया था।

कुएँ, बावड़ी, अरघट्ट: जो लोग समतल मैदानों में खेती फैलाने की कोशिश कर रहे थे, उनके लिए तालाब बनाना क्यों मुश्किल था, यह तुम सोच ही सकते हो। इन

लोगों ने कुएँ और बावड़ियाँ खोदीं। पठार में ज़मीन के नीचे का पानी निकालना कठिन होता है, क्यों कि नीचे चट्टान होती है, और पानी कहीं-कहीं चट्टानों की दरारों में ही मिलता है। या फिर चट्टान के नीचे मिलता है।

पर मैदान में ज़मीन के नीचे का पानी अगर हो तो आसानी से मिल जाता है। यह और बात है कि कुएँ और बावड़ियां खोदने पर भी लोगों को पानी उठाने के लिए तरह-तरह के यंत्र खोजने पड़े। सबसे पहले शायद ढेंकली का उपयोग हुआ फिर बैलों को जोतकर मोट से पानी निकाला जाने लगा।

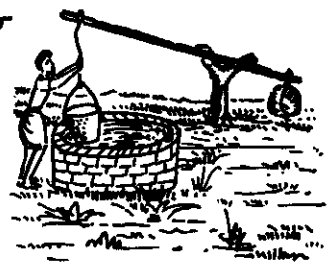

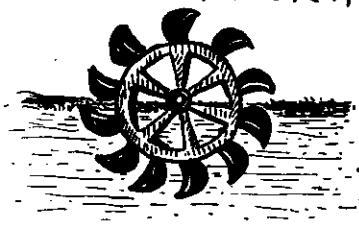

फिर एक नया यंत्र बना - अरघट्ट। जहां पानी ऊपर ऊपर ही मिल जाता था, वहाँ इस यंत्र से पानी निकाला जाता था। पर किस तरह? यह तुम चित्र देखकर बताओ।

पर गहरे कुओं से पानी कैसे निकालें? इसके लिए लोगों ने चक्के से एक लम्बी रस्सी गोल बांधकर लटकाई। रस्सी के साथ कई बाल्टियां बाँध दीं। जब चक्का घूमता रस्सी के साथ बाल्टियां कुएँ में उतरतीं और पानी ले कर ऊपर आ जातीं।

सिंचाई के ये तरीके महँगे थे। कुएँ, बावड़ियां, अरघट्ट बनाने में काफी धन लगता था। ज़ाहिर है, कि अधिकतर गांव के धनी लोग ही ये साधन जुटा पाते थे।

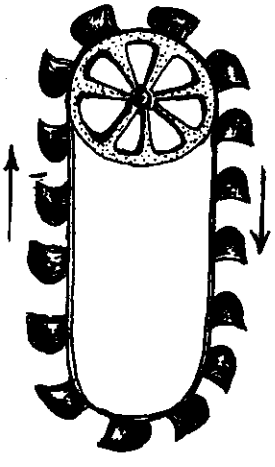

राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार और मालवा में सैकड़ों कुएँ व बावड़ियाँ बनाई गईं और अरघट्ट लगाए गए। इनका ज़िक्र राजाओं के अभिलेखों में खूब आता है। जैसे किसी अभिलेख में यह लिखा मिलेगा कि- "राजा ने इस गांव से हर अरघट्ट पर तीन हारक जौ मन्दिर को दान में दीं" या "राजा ने रामशर्मा को एक खेत दान में दिया- खेत के उत्तर में सिलुक की बावड़ी है, पूर्व में गोविंद का खेत है और दक्षिण में नारायण का कुआँ है, पश्चिम में मन्दिर की अरघट्ट है।"

ऐसे जब सिंचाई के उपाय होने लगे तब दो सौ-तीन सौ--चार सौ सालों में कई नए गांव बसे, नई ज़मीन पर खेत बने। फिर, लोगों की आबादी भी ज़रूर बढ़ी होगी।

<u>बंधान और नहरें:</u> चलो अब नदियों के मुहानों और डेल्टा पर बसे लोगों की कोशिशों को देखें। कावेरी, गंगा, ब्रह्मपुत्र जैसी नदियां जहाँ सागर में मिलती हैं, वहाँ बहुत ही उपजाऊ मिट्टी बिछ जाती है। यही क्षेत्र डेल्टा कहलाता है। पर साथ ही वहाँ इतना पानी जम जाता है, कि खेती करना मुश्किल हो जाता है। इन इलाकों में बाढ़ भी खूब आती है। जिससे फसलें और गाँव नष्ट हो जाते हैं। ऐसी जगहों पर जो लोग खेती फैला रहे थे, उन्होंने नदियों के किनारों पर बंधान बनाए, ताकि खेतों में पानी न भरे। फिर बंधान में से नहरें निकालीं- जिससे सिंचाई के लिए पानी खेतों तक पहुँचे। और खेतों में फिर भी ज़्यादा पानी जमा हो जाए तो उसके निकास के लिए गहरे नाले बनाए। इन नालों में से होकर पानी फिर नदी में पहुँच जाता था।

इतने उपाय करने पर नदियों के मुहानों और डेल्टा की उपजाऊ मिट्टी पर लोग सालभर में दो-दो, तीन-तीन फसलें लेने लगे। धान की फसल ऐसी जगहों पर बहुत होती थी।

जो लोग पहाड़ी भागों में रहते थे, वहाँ सिंचाई करना बड़ा कठिन था। क्योंकि पानी तेज़ी से बह जाता था। पर वहाँ भी खेती के प्रयास हुए। ऐसे पहाड़ी भागों के जंगलों में शिकारी कबीले ही रहा करते थे। पर किसी तरह ऐसे कई लोगों ने वो फसलें अपनाईं जो बिना सिंचाई के आसानी से उग जाएँ। जैसे शायद कोदो, कुटकी, समा, ज्वार आदि की फसलें। जंगलों से शिकार, फल आदि बटोरने के साथ साथ पहाड़ों व जंगलों में रहने वाले लोग इन फसलों की खेती करने लगे। खेतों के साथ उनके छोटे-छोटे गांव भी बस गए।

उस समय के किसानों के प्रयास से कितने ही गाँव बसे और खेतों की उपज बढ़ी। गांवों के बीच-बीच छोटे-बड़े शहर भी उभर आए।

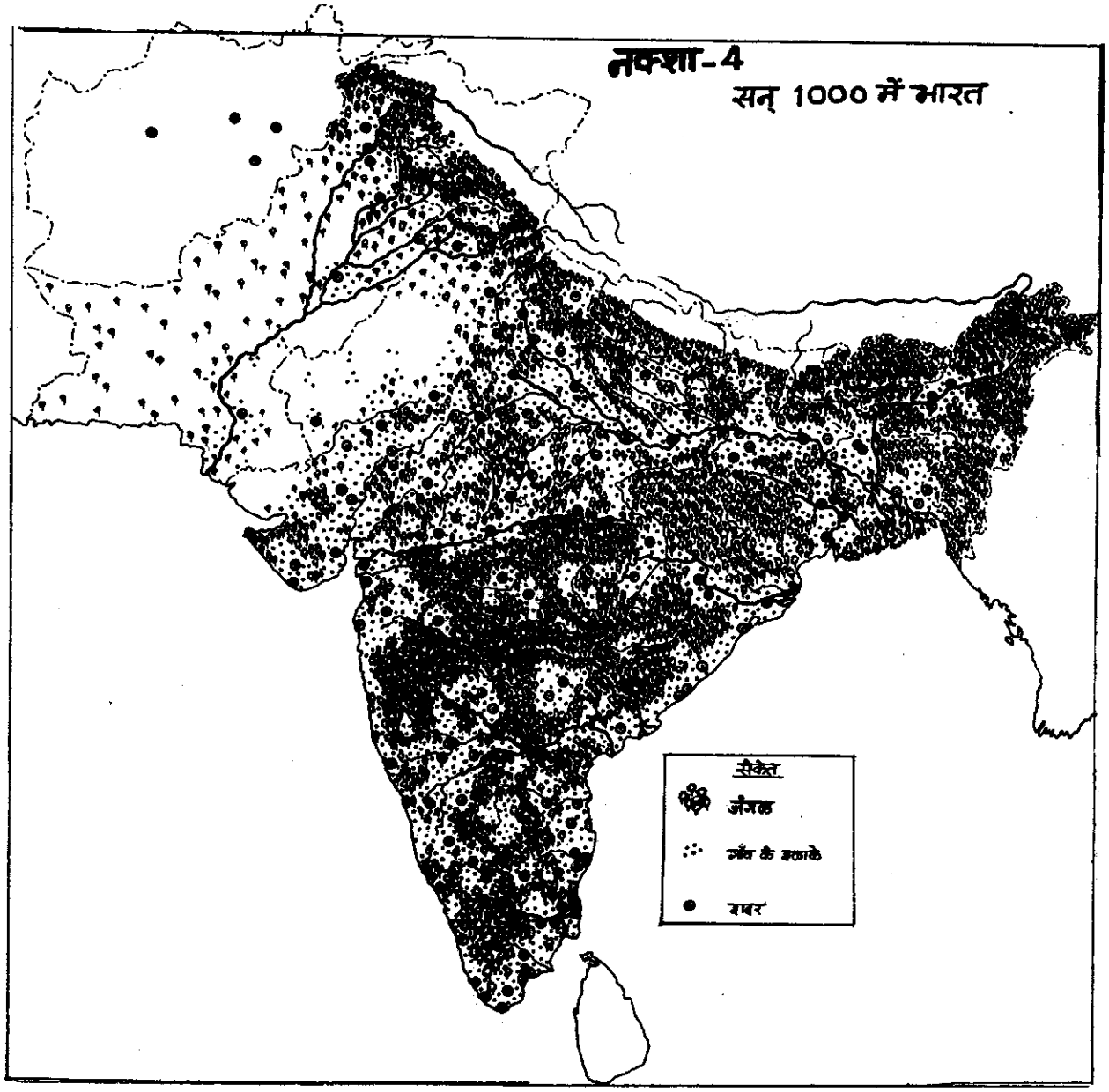
नक्शा-4
सन् 1000 में भारत
संकेत
जंगल
गाँव के इलाके
शहर

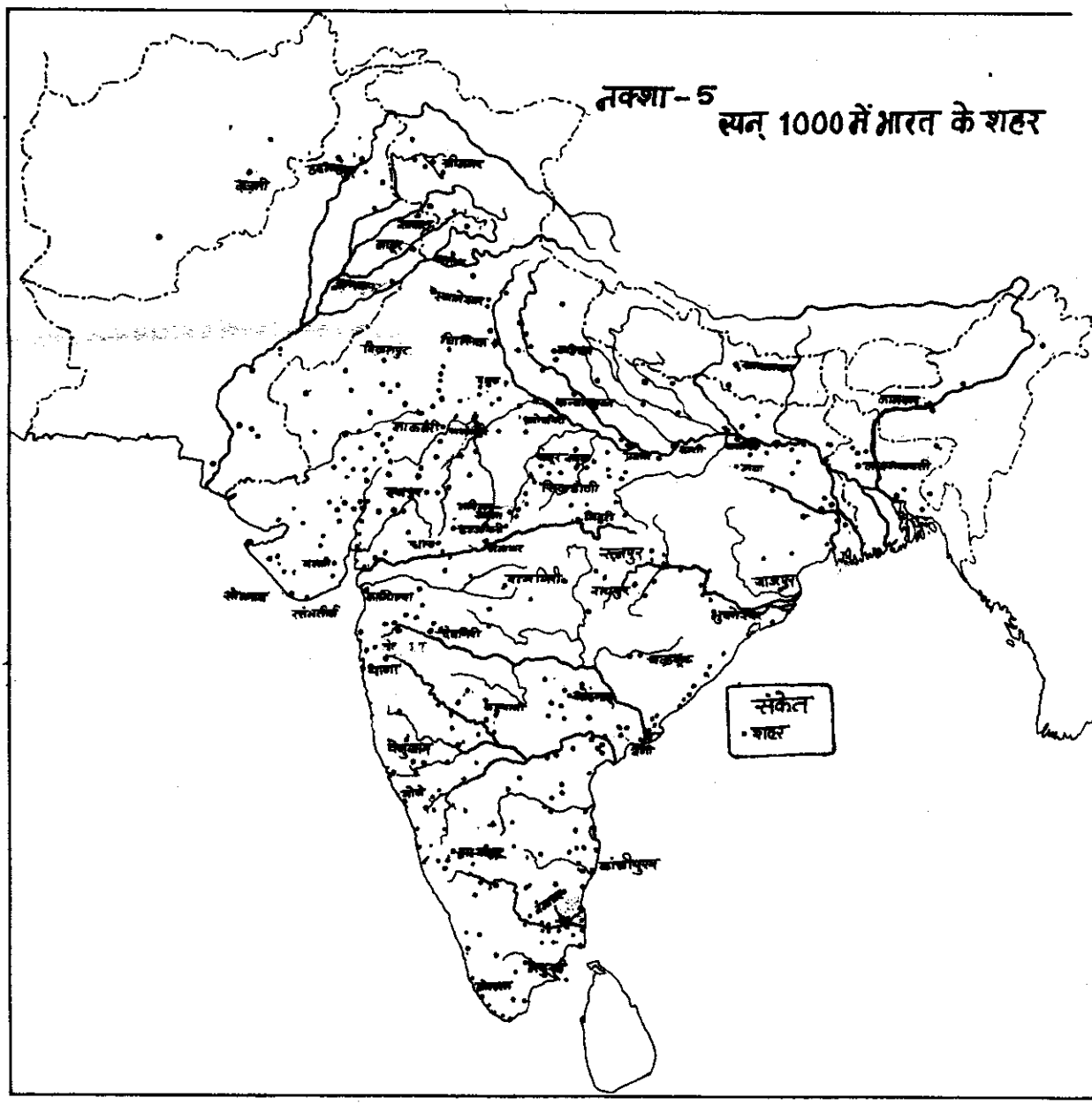
नक्शा - 5
सन् 1000 में भारत के शहर
संकेत
• शहर

अब अगर तुम मानचित्र 4 देखो तो इस बात का अहसास कर पाओगे कि कैसे भारत धीरे-धीरे गावों और शहरों से भरने लगा।

अशोक के समय के मानचित्र और सन् 1000 के इस मानचित्र में तुम्हें क्या फर्क नज़र आ रहा है - कुछ वाक्यों में लिखो। (खासकर दोनों नक्शों में खे तीन इलाकों और नगरों की तुलना करो)।

सन् 1000 के मानचित्र क्रं० 5 में नगरों के नाम देखो। कई नगर राजा अशोक के समय में भी बसे हुए थे। उन्हें पहचानो और घेरा बनाकर अलग दिखाओ।

मानचित्र 5 में दिख रहे बाकी सब नगर राजा अशोक के समय के बाद और सन् 1000 के बीच बसे। मानचित्र 5 में इन नगरों के नाम भी पढ़ो। क्या कोई नाम तुम्हारी पहचान का है? ऐसे नगरों के नीचे रेखा खींच दो।

सन् 1000 में जो नगर बसे थे उनमें से कई आज भी बसे हैं। कभी मौका मिले तो पता लगाना ऐसे कौन कौन से नगर हैं।

अभ्यास

(1) मौर्यों के समय से सन् 1000 तक आते-आते खेती किस चीज की सहायता से फैली?

(2) राजस्थान, गुजरात, मालवा में सिंचाई के क्या तरीके अपनाए गए?

(3) तामिलनाड़, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र के पठारी भागों पर सिंचाई के क्या तरीके अपनाए गए?

(4) नदी के मुहानों व डेल्टा पर रहने वाले किसानों ने सिंचाई का क्या इंतजाम किया

(5) मानचित्र 5 देखकर बताओ कि अशोक के समय के बाद—

(क) मध्यप्रदेश के क्षेत्र में कौन-कौन से नगर बने? ऐसे 6 नगरों के नाम बताओ।

(ख) सन् 1000 तक नर्मदा नदी के दक्षिण में भारत में कौन-कौन से नगर बने जो अशोक के समय नहीं थे? ऐसे 12 नगरों के नाम बताओ।

कुछ प्रमुख लोग और कुछ प्रमुख बातें 4

बहुत सारे गाँव और नगर कैसे बस रहे थे - यह हमने देखा। तो चलो उन गाँवों और नगरों पर राज्य करने वाले कुछ राजाओं से भी मिलें।

गुप्त वंश के राजाओं के बाद तीन राजा बहुत प्रसिद्ध हुए थानेश्वर के हर्षवर्द्धन, वातापी के पुलकेसिन और कांचीपुरम् के महेन्द्रवर्मन। इन नगरों को तुम पिछले नक्शे में देख न चुके हो तो अब देख लो।

थानेश्वर के हर्षवर्द्धन का वंश पुष्यभूति नाम से जाना जाता था। हर्षवर्द्धन सन् 606 में राजगद्दी पर बैठा। समुद्रगुप्त की तरह उसने भी एक बड़े क्षेत्र पर राज्य करने की कोशिश की। उसने आसाम, नेपाल, कश्मीर, पंजाब, राजस्थान के क्षेत्रों तक अपना अधिकार फैलाया। उसने हारे हुए राजाओं को उनके राज्य में शासन करने दिया। शर्त यह थी कि वे सब हर्ष के बड़प्पन को मानें।

हर्ष की यह नीति क्या किसी अन्य राजा से मिलती जुलती है?

एक ताम्रपत्र पर खुद हर्ष के हाथ से किया उसका अपना दस्तखत- इसमें लिखा है- "स्वहस्तो मम महाराजाधिराजस्य श्री हर्षस्य"

उत्तरापथ के राजाओं पर धाक जमाने के बाद हर्ष दक्षिणापथ पर विजय करने के इरादे से युद्ध पर चला। नर्मदा के पार एक दूसरा ताकतवर राजा राज्य करता था- चालुक्य वंश का पुलकेशिन। दक्षिणापथ के क्षेत्र पर सर्वेसर्वा होने की इच्छा पुलकेशिन की भी थी। उसने हर्ष से टक्कर ली और नर्मदा के किनारे पर ही उसे रोक दिया। हर्ष दक्षिणापथ विजय करने की अपनी इच्छा पूरी न कर सका।

पर पुलकेशिन को अकेले हर्ष की चुनौती ही नहीं थी। कुछ और दक्षिण की ओर पूर्वी तट पर पल्लव वंश का राज्य था। पल्लव राजा महेन्द्रवर्मन भी उससे टक्कर लेने को तत्पर था। दोनों राजाओं की आँख एक ही उपजाऊ क्षेत्र पर लगी थी-

वेंगी नगर और उसके आस-पास के गांव व खेतों का इलाका। दो बड़ी नदियों के मुहाने के बीच यह क्षेत्र था-और इस कारण बहुत उपजाऊ। यह कौन सी दो नदियां थीं-नक्शा देखकर बताओ।

पर पुलकेशिन ने ठान रखी थी कि वह किसी भी तरह वेंगी पर महेन्द्रवर्मन का अधिकार नहीं होने देगा। वह महेन्द्रवर्मन को भी हराने में सफल रहा। उसने पल्लवों के राज्य के कुछ हिस्सों पर अपना अधिकार जमा लिया।

महेन्द्रवर्मन अपने जीवन में इस पराजय का बदला नहीं ले सका। उसके बाद उसके पुत्र नृसिंहवर्मन ने पुलकेशिन का मुकाबला किया। नृसिंहवर्मन ने श्रीलंका के राजा की सहायता ली और पुलकेशिन की राजधानी बदामी (या वातापी) पर कब्जा कर लिया। बड़े गर्व से उसने अपने आपको वातापीकोण्डान (वातापी का विजेता) घोषित किया।

राजा युद्ध करने और अपनी शक्ति बढ़ाने में तो लगे ही रहते थे पर उनकी और भी चीजों में रुचि थी। हर्ष और महेन्द्रवर्मन दोनों अच्छे नाटककार थे। और उन्होंने खुद नाटक लिखे। महेन्द्रवर्मन को चित्र बनाने और वीणा बजाने का शौक था।

हर्ष को बौद्ध धर्म से लगाव था। उसने नालन्दा में बने बौद्ध विहार को बहुत दान दिया।

तुम्हें याद होगा कि बौद्ध धर्म के साथ-साथ जैन धर्म भी विकसित हुआ था। और जैसे बौद्ध धर्म को कई लोग मानते थे, वैसे ही जैन धर्म को मानने वाले भी बहुत से लोग थे। राजा महेन्द्रवर्मन और पुलकेशिन खुद जैन धर्म को मानते थे।

पर इस समय में कुछ और धर्म उभरकर आ रहे थे। जैसे वैष्णव धर्म (विष्णु की भक्ति), और शैव धर्म (शिव की भक्ति)।

राजा महेन्द्रवर्मन ने एक सन्त के प्रभाव में आकर जैन धर्म छोड़ दिया और शैव धर्म अपना लिया। उसने बड़ी-बड़ी चट्टानों को खुदवाकर बहुत सुन्दर मंदिर भी बनवाए। इन बातों के लिए राजा महेन्द्रवर्मन बहुत प्रसिद्ध है।

- **एक चीनी यात्री:** इस समय की एक और बात बहुत प्रसिद्ध है। राजा हर्ष के समय में चीन से एक यात्री भारत आया। उसका नाम था ह्यूनत्सांग। दूर चीन से पहाड़ों, नदियों, रेगिस्तानों को पार करता हुआ, यह चीनी आदमी हजारों मील चलकर भारत क्यों आया? कारण यह था कि ह्यूनत्सांग बौद्ध धर्म को मानता था। तुम्हें ध्यान है न कि बौद्ध श्रमण व्यापारियों के साथ मध्य एशिया और चीन देश तक जाया करते थे। इनके माध्यम से बौद्ध धर्म दूसरे देशों में भी फैलने लगा था।

बौद्ध धर्म को मानने वाले कई चीनी लोग भारत की यात्रा पर आते थे। वे बौद्ध विहारों में पढ़ने आते; बुद्ध के जीवन से जुड़ी जगहों को देखने आते। ह्यूनत्सांग भी इसी कारण भारत आया। वह हर्ष के दरबार में भी गया और उसकी हर्ष से अच्छी दोस्ती हो गई।

ह्यूनत्सांग भारत में दूर-दूर तक घूमा। उसने अपनी यात्रा में जो कुछ देखा उसे लिखा। ह्यूनत्सांग की लम्बी यात्रा का विवरण आज भी लोग पढ़ते हैं, और उन बीते दिनों के बारे में तरह-तरह की बातें पता लगाते हैं।

ह्यूनत्सांग का चित्र देखकर बताओ कि उसने अपनी यात्रा आसान बनाने के लिए क्या-क्या इन्तजाम किया हुआ है।

- **कुछ अरबी और फारसी लोगों का बसना:** इस समय, दूसरे देशों से आने वालों में चीनी लोग नहीं थे। तुम एशिया या संसार के नक्शे में अरब देश ढूंढो। अरब लोग इन दिनों बहुत व्यापार किया करते थे। कई अरब व्यापारी दक्षिण भारत के तटों पर जगह-जगह बस गए। यहाँ से वे अपना व्यापार चलाते थे। इन लोगों के वंशज आज भी केरल राज्य में रहते हैं। वे मपिल्ला कहलाते हैं।

एक तरफ जहाँ अरब व्यापारी अपना व्यापार चला रहे थे वहाँ दूसरी तरफ़ अरब लोग अपना राज्य फैलाने की कोशिश कर रहे थे। सन् 712 के करीब एक अरब सेनापति मुहम्मद-बिन-कासिम ने सिन्ध पर कब्ज़ा कर लिया। सिंध से लगा हुआ क्षेत्र है गुजरात का। एशिया के नक्शे में देख लो यह सही है न ?

उन दिनों वहाँ चालुक्य वंश के ही राजा राज्य करते थे। उन्हें अरबों से खतरा पैदा हुआ। चालुक्य राजा ने अरब सेनाओं से टक्कर ली और उन्हें रोकने में सफल रहा।

अरबों का राज्य जब सिन्ध तक बढ़ आया था तो जाहिर है कि बीच में पड़ने वाले देश-फारस (आज का ईरान) पर उसका कब्ज़ा हो गया था। अरबों के डर से कई फारसी लोग भाग निकले थे। भागकर वे भारत के पश्चिमी तट पर आए। चालुक्य राजा ने उन्हें मदद दी। फारसी लोग यहाँ बसकर व्यापार करने लगे। इन्हीं लोगों के वंशज आज पारसी कहलाते हैं।

अभ्यास

(1) हर्षवर्द्धन, महेन्द्रवर्मन, पुलकेशिन, ह्यूनत्सांग-इनके बारे में तुम्हें जो दो-तीन बातें महत्वपूर्ण लगीं, लिखकर बताओ।

(2) मापिल्ला और पारसी लोगों का भारत में कैसे बसना हुआ- समझाओ।

हर्ष के समय में शबर वनवासी

5

हमने देश विदेश के लोगों का आना जाना देखा। जो बातें हमने पढ़ीं ये उन दिनों होने वाली बहुत महत्वपूर्ण बातें थीं। इनका पता हमें बहुत से ग्रंथों और आलेखों से मिल जाता है।

अगर हम ऐसा एक ग्रंथ पढ़ते-पढ़ते अचानक पहाड़ी जंगलों के बीच स्थित गाँवों और आदिवासियों का खूबसूरत वर्णन लिखा पाएँ! तो हमें आश्चर्य ज़रूर होगा। फिर मन में यह विचार उठ आता है कि जिन दिनों भारत के इतिहास में वो सारी बातें हो रहीं थीं जो हमने ऊपर पढ़ीं, उन्हीं दिनों गहरे जंगलों के बीच भी लोग रहते थे। उनका देश-विदेश की इन घटनाओं से शायद ही कुछ लेना देना रहा हो।

विन्ध्य पर्वत के जंगलों में रहने वाले शबर वनवासियों का वर्णन हमें 'हर्षचरित' में मिलता है। 'हर्षचरित' उसी राजा हर्षवर्द्धन की जीवनी है जिसके बारे में तुम अभी हाल ही में पढ़ चुके हो। हर्ष की यह जीवनी कवि बाणभट्ट ने लिखी थी।

बाणभट्ट लिखता है कि जब हर्ष की बहन राज्यश्री के पति की युद्ध में मृत्यु हुई, तो वह दुःख न सह सकी और कहीं चली गई। हर्ष उसे ढूंढते-ढूंढते विन्ध्य पर्वतों पर पहुँचा। हाँ वही विन्ध्य पर्वत जो भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में पड़ते हैं। इन पर्वतों के जंगल में हर्ष अपनी बहन को ढूंढता रहा। यूं तो अक्सर हम भी इन जंगलों से गुज़रते हैं। पर हर्ष ने आज से 1400 साल पहले इन जंगलों में क्या देखा?

हर्ष ने देखा कि जंगल में कोई सड़क नहीं बनी है- केवल पगडंडियाँ हैं। मगर ये पगडंडियाँ भी साफ़ नज़र नहीं आती हैं- जंगलों में गुज़रने वाले बहुत कम हैं- शायद इसलिए।

इन्हीं पगडंडियों पे चलते-चलते उसे कई दृश्य देखने को मिले। कहीं उसने देखा शेर को पकड़ने

के लिए पेड़ों के बीच जाल बिछे हैं। जगह जगह लोग लकड़ी जलाकर, काठकोयला बना रहे हैं।

जंगल में बीच बीच में कुछ शिकारी भी उसे दिखाई दिये। जानवरों और पक्षियों को पकड़ने के लिए वे तरह-तरह के जाल व फन्दे लिए हुये हैं। ये जाल व फन्दे जानवरों की शिराओं और तंतुओं से बने हैं। कुछ बहेलिये भी मिले। उनके पास पिंजरे में तीतर और शाहबाज़ बंद हैं। यहां वहां छोटे बच्चे भी टहनियों में गोन्द लगाकर छोटी चिड़ियों को मारने की कोशिश कर रहे हैं।

पगडंडियों पर जंगल के लोग जंगल से मिली चीज़ों का गट्ठर सर पर लादकर उन्हें बेचने जाते मिले। कई सारी चीजें वे ले जा रहे थे- सियाडु पेड़ की छाल, फूल, सन के गट्ठे, शहद, मोरपंख, मोम, खदीर पेड़ की लकड़ी, खस घास, जड़ें, गुग्गल (धूप) सेमल की रुई आदि।

बस्तियों के आसपास बरगद पेड़ के चारों तरफ सूखी लकड़ी से घेरा बना है- इनमें लोगों के पशु रहते हैं। कहीं दूर-दूर पर खेत दिख जाते हैं। हाँ- यहाँ के जंगलों में खुली जगह की कमी है- इसलिए खेत बहुत कम हैं और बिखरे हुए हैं।

यहां ज़मीन साफ कर के हाल ही में खेत बनाए गए हैं। कटे हुए पेड़ों के ठूँठ दिख रहे हैं, कुछ ठूँठों में तो पत्ते फिर से फूटने लगे हैं।

खेत जोतने के लिए ये लोग हल बैल का उपयोग नहीं करते हैं। यहाँ की मिट्टी लोहे की तरह काली और कठोर है। इसे वे कुदाल से खोदते हैं।

खेतों के बीच मचान बने हुए दिख रहे हैं- निश्चय ही यहां जंगली जानवरों का फसलों को खतरा रहता होगा।

ऐसे चलते-चलते शाम हो रही थी, तो लूषे एक बस्ती में आ पहुँचा। उसने देखा कि वनवासियों के घर एक

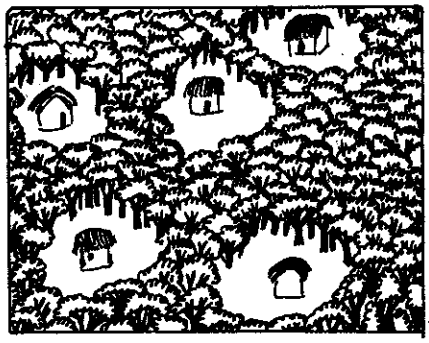

दूसरे से कुछ दूर-दूर बने हैं। हर घर के चारों तरफ झाड़ियों और कांटों का बाड़ा बना है। कहीं-कहीं बांस का झुरमुट भी है। इन्हीं से शायद वे अपने धनुष बनाते होंगे।

हर घर के साथ एक बाड़ी है। उसमें कुछ न कुछ उगता रहता है। अरण्डी, बैंगन, तुलसी, सिगक (प्याज जैसी सब्जी) सरकण्डा, कोदो, कुटकी, लौकी आदि। लम्बे डंडो पर लौकी की बेलें चढ़ी हैं। बाड़ी में एकाध खदिर या बेर के पेड़ भी हैं। इनके नीचे बछिये बंधे हैं। घरों की छतों पर मुर्गे आवाज लगा रहे हैं।

हर्ष ने देखा कि इन वनवासियों के घर बाँस की खपच्चियों, पत्तों, व सरकण्डों के बने हैं। घरों में यहाँ वहाँ बहुत सी चीजें रखी हुयी हैं। इनमें से कई चीजें औरतों ने जंगल से इकट्ठी की हैं। वाकई कितनी सारी चीजें हैं। सेमल की रुई, जंगली धान, सिंघाड़े, गुड़, मखाने, बाँस, चटाई, दवाई की जड़ी-बूटियाँ, खिरनी के बीज महुआ आदि। बड़ी मात्रा में महुआ की शराब भी जमा की हुई है।

हर्ष उस रात इसी गाँव के पास रुका। अगले दिन सुबह उठकर फिर अपनी बहन को ढूंढने निकला। चलते-चलते उसकी भेंट शबर कबीले के एक युवक से हुई। वह शबर कबीले के मुखिया का बेटा था। शबर युवक काले रंग का था उसकी नाक चपटी और होंठ मोटे थे। उसके कानों में तोते के पंख लगे थे कांच के मनके की बालियाँ वह कानों में पहने था। उसकी कलाई पर सूअर के बालों में साँप के जहर की काट बंधी हुयी थी। हाथों में उसके टिन के कड़े थे। उसकी तलवार का हत्था किसी जानवर के सींग का बना था। तलवार खाल की म्यान में बंद थी।

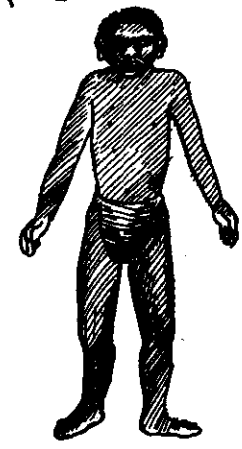

शबर युवक की पीठ पर भालू और चीते की खाल से बनी तरकश लटक रही

थी। उसमें जहरीले बाण रखे हुए थे। उसके बाएँ कन्धे पर धनुष टंगी थी। धनुष से एक तीतर और एक खरगोश लटक रहा था।

शबर युवक ने हर्ष को प्रणाम किया और उसे तीतर और खरगोश भेंट में दिया। हर्ष ने उससे पूछा- "क्या तुमने मेरी बहन को इस जंगल में देखा है?" शबर ने कहा- "महाराज हम इस जंगल का चप्पा-चप्पा पहचानते हैं। मगर हमने आपकी बहन को नहीं देखा। यहीं पास में एक नदी है। उसके किनारे कुछ मुनि रहते हैं। उनके आश्रम में शायद आपको कोई खबर मिलेगी।"

हर्ष जब उस आश्रम में पहुँचा तो मुनियों ने उसका स्वागत किया। उन्होंने बताया कि "पास में ही एक भद्र महिला आग जलाकर उसमें जलमरने की तैयारी कर रही है। शायद वह आपकी बहन हो।"

हर्ष भागता-भागता उस अग्नि कुण्ड के पास जा पहुँचा। वहाँ उसने पाया कि वास्तव में वह उसकी बहन राज्यश्री ही थी जो जीवन से निराश होकर आत्महत्या कर रही थी। हर्ष और मुनियों ने राज्यश्री को खूब समझाया और रोकने में सफल हुए। फिर हर्ष अपनी बहन के साथ थानेश्वर लौट आया।

यह कहानी पढ़ते-पढ़ते आज से तेरह चौदह सौ साल पहले विन्ध्य पर्वत के जंगलों में रहने वालों का जीवन हमारी आंखों के सामने तैर आया है। उन लोगों के जीवन की कितनी सारी छोटी-छोटी बातों पर बाणभट्ट का ध्यान गया था- और कैसे बड़ी बारीकी से उसने विन्ध्यवासियों के जीवन का वर्णन लिखा है। पढ़कर आश्चर्य होता है। ऐसा वर्णन कि हम उसे पढ़ते जाएँ और खुद चित्र बनाते जाएं तो हमें कुछ कठिनाई नहीं होगी।

क्या तुम शबर युवक का एक चित्र बनाना नहीं चाहोगे? चित्र में क्या क्या दिखाना है- बाणभट्ट ने तुम्हारे लिए

विस्तार से लिखा है। तो फिर चित्र बनाओ भई। यहाँ शबर युवक का जो चित्र बना है, वो तो अधूरा है, उसमें वो सब नहीं दिखाया है जो हर्ष ने देखा था। तुम इस शबर युवक के हाथ, कान, पीठ, कन्धे आदि को पूरी तरह सजाकर दिखाओ।

घर का आंगन

शबर वनवासियों के जीवन के ये दृश्य भी बनाओ–

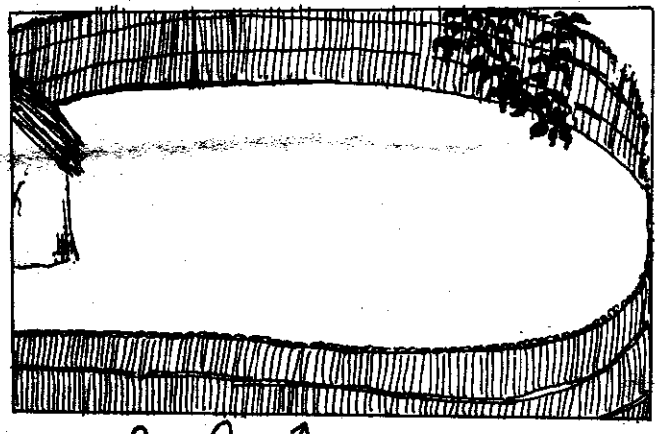

घर की बाड़ी

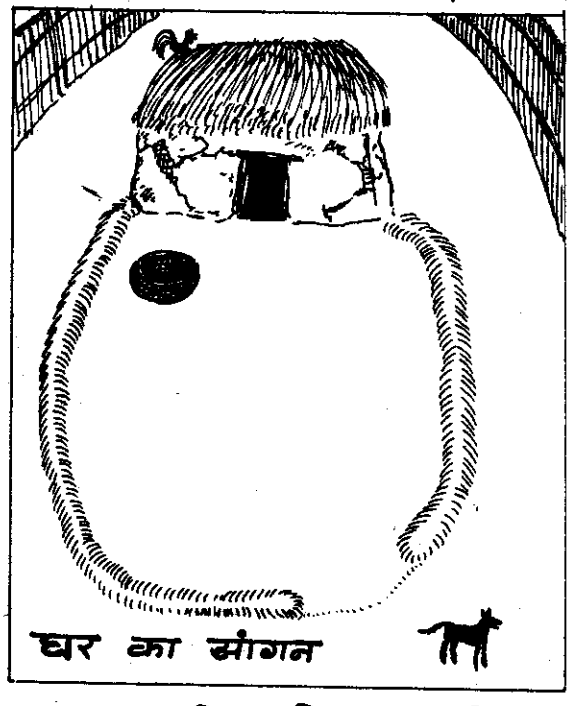

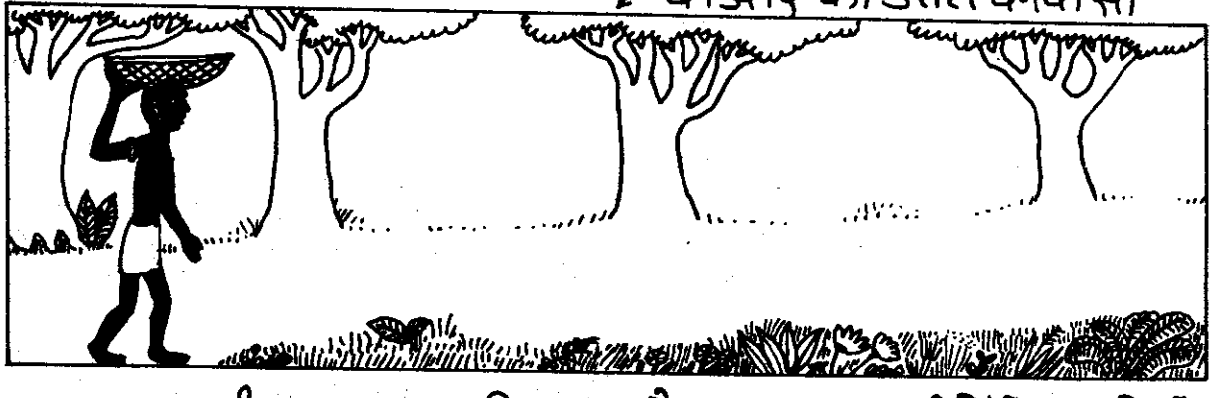

बाजार को जाते वनवासी

आज भी अगर तुम विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वतों के जंगलों में जाओ, या बस्तर के जंगलों में – तो तुम्हें ऐसे बहुत से दृश्य देखने को मिल जाएंगे। पर अब इन वनवासी लोगों का जीवन भी काफी बदलने लगा है। अब उनका जीवन पूरी तरह वैसा नहीं रहा जैसा हर्ष के समय में था। उनके जीवन में क्या बदलाव आए हैं शायद तुम्हें इन बातों का कुछ ज्ञान हो। गुरुजी की मदद से इन बातों पर चर्चा करो और 6-7 वाक्य लिखो।

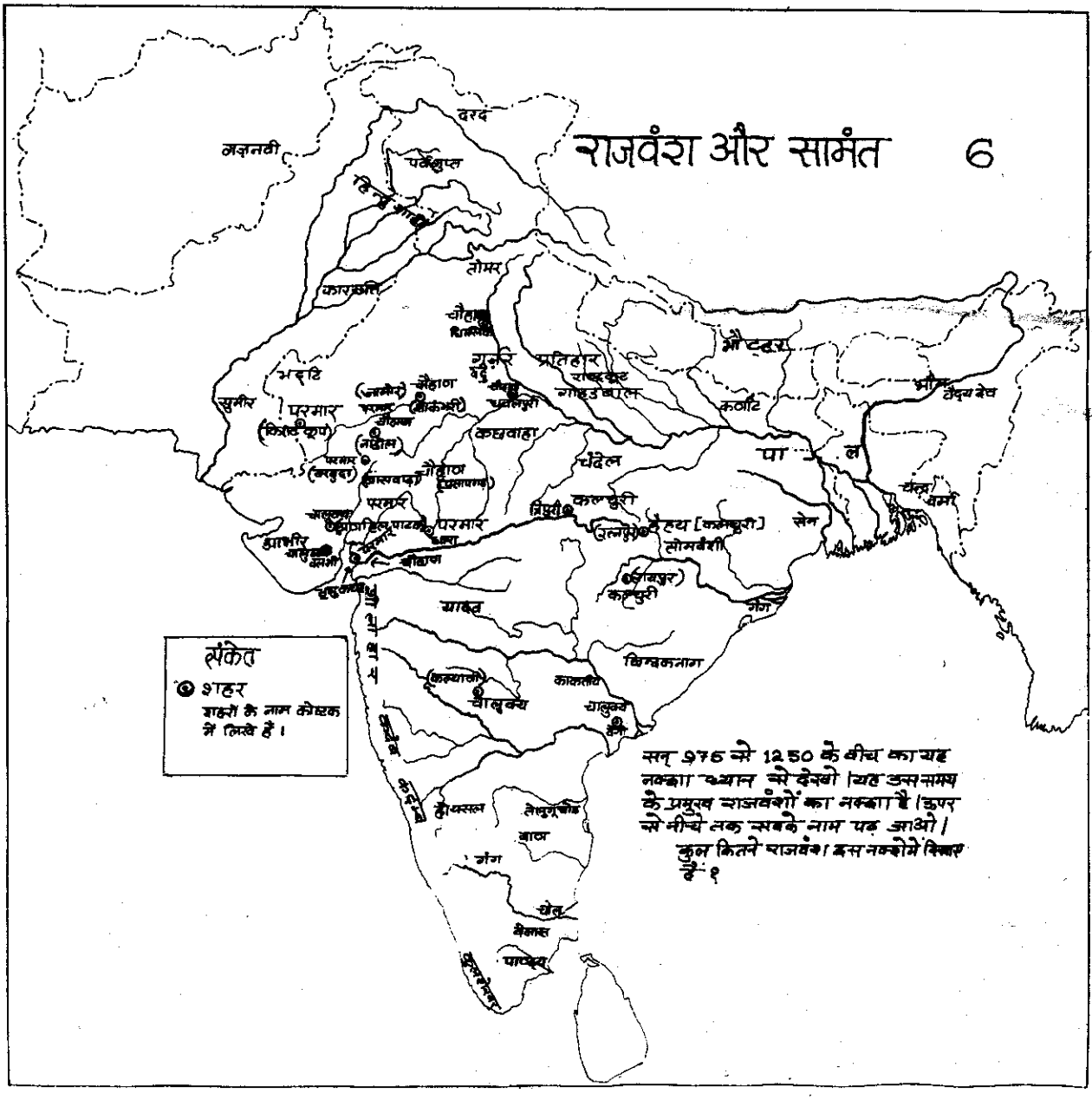

राजवंश और सामंत 6
संकेत
शहर
शहरों के नाम कोष्ठक में लिखे हैं।
गज़नवी
परमार
गुर्जर प्रतिहार
चौहान
कछवाहा
चंदेल
कलचुरी
सोमवंशी
सेन
कर्णाट
पाल
चालुक्य
काकतीय
होयसल
चोल
पाण्ड्य
सन् 976 से 1250 के बीच का यह नक्शा ध्यान से देखो। यह उस समय के प्रमुख राजवंशों का नक्शा है। ऊपर से नीचे तक सबके नाम पढ़ आओ।
कुल कितने राजवंश इस नक्शे में दिखाए हैं?

मानचित्र नं. 1 में तुम भारत के उन भागों को रंगते जा रहे थे जहां-जहां राजा व राज्य बनते जा रहे थे। अब तुम इस नक्शे के अनुसार मानचित्र नं. 1 रंगो। क्यों, भर गया न नक्शा? भरना ही था। हर जगह खेती फैल रही थी, गांव व नगर बन रहे थे, और किसान, कारीगर व व्यापारी अपना-अपना काम धंधा चला रहे थे। हर क्षेत्र के ताकतवर परिवारों ने इस सब पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश शुरू की। कोई परिवार या वंश सौ गांवों पर अपना अधिकार जमा पाया तो कोई परिवार 40-50 गांवों पर अपना अधिकार बना पाया। सब अपने क्षेत्र के राजा कहलाना चाहते थे। कुछ वंश सैकड़ों, हजारों गांवों को अपने नियन्त्रण में कर पाए। ऐसे शक्तिशाली वंश अपने आपको 'महाराजा' भी कहने लगे।

इस सब का नतीजा तुम मानचित्र नं. 6 में देख ही रहे हो। भारत के हर क्षेत्र में छोटे-बड़े कई स्थानीय राजवंश उभर आए हैं।

पर, ध्यान देने की बात यह भी है कि एक ही राजवंश के कई राजा हैं। राजवंश की शाखाएँ छोटे-छोटे क्षेत्र पर अधिकार करके अपना अलग राज्य बनाना चाह रही हैं। उदाहरण के लिए, देखो परमार वंश कितनी जगहों पर राज्य कर रहा दिखाया है? इन जगहों पर परमार वंश की शाखाओं (या परिवारों) के अपने अलग राज्य हैं।

इसी तरह नक्शे में देखो कि किन-किन जगहों पर चौहान वंश के राजा हैं? ऐसे उदाहरण तुम्हें और बहुत से मिलेंगे। कई वंशों की शाखाओं का अपने-अपने क्षेत्र पर अपना अलग राज्य बना था। इसलिए इन्हें नक्शे में अलग दिखाया है। यद्यपि इनके नाम एक ही हैं।

इस तरह की बातें हमें मौर्य वंश या गुप्त वंश के समय देखने को नहीं मिलती थीं। तब एक वंश का एक राज्य था। पर, अब बात कुछ और थी। वंश के अलग-अलग परिवार छोटे-छोटे क्षेत्रों पर अपना राज्य बना रहे थे।

इन परिवारों के लिए अपने आपको राज्य करने वाला वंश बताना बहुत आसान भी नहीं था। आखिर कोई यह

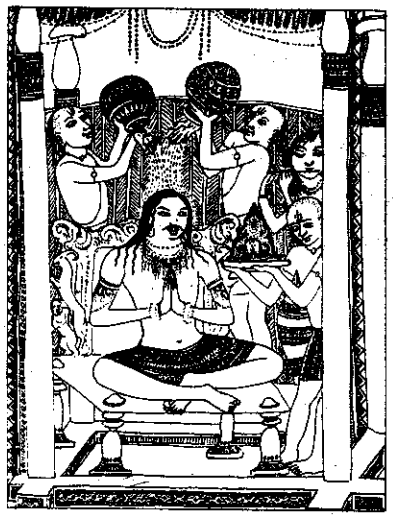

क्यों मानें कि अमुक परिवार के लोग यहाँ के राजा हैं - हमें इनकी बात माननी चाहिए, इन्हें कर व लगान देना चाहिए, अब ये दूसरे वंशों से युद्ध करें तो इनके लिए युद्ध में लड़ना चाहिए ?

लोगों के बीच अपना प्रभाव जमाने के लिए इस समय के नए-नए राजवंश कई उपाय करते थे। ऐसा एक उपाय था ब्राह्मणों को बुलाकर बड़े-बड़े यज्ञ करवाना, उन्हें खूब दान-दक्षिणा देना और उन्हें अपने राज्य में जमीन दान कर बसाना। यह सब करने का प्रभाव जरूर पड़ता होगा, क्योंकि ब्राह्मणों की समाज में बहुत प्रतिष्ठा थी। ब्राह्मणों की मदद से राजाओं के वंशों का इतिहास भी लिखा जाने लगा। इन्हें वंशावली कहा जाता है।

राजा समुद्रगुप्त, या हर्षवर्द्धन जब अपने वंश का परिचय देते थे, तो अपने पिता, माँ, दादा, आदि का जिक्र करते थे। पर इस समय हर क्षेत्र में जो छोटे-बड़े शक्तिशाली वंश उभरकर आए थे वे अपने वंश का परिचय कैसे देते थे ? उदाहरण के लिए यहाँ मध्यप्रदेश के जबलपुर क्षेत्र में राज्य करने वाले कलचूरी नाम के वंश की वंशावली पढ़ो। कलचूरी वंश का एक राजा अपने वंश का परिचय इसतरह बताता है -

"सबसे पहले विष्णु हुए। उनकी नाभि से ब्रह्मा का जन्म हुआ। उनसे जन्मे अत्री ऋषि। अत्री से जन्मे चन्द्रमा। चन्द्रमा से जन्मे बुध, उनसे जन्मे पुरुरवस जिन्होंने उर्वशी से शादी की। इनके कुल में भरत हुए जिन्होंने यमुना किनारे सैकड़ों अश्वमेध यज्ञ किए। भरत के कुल में हुए हैहेय परिवार के चक्रवर्ती कार्तवीर्य अर्जुन, जिन्होंने रावण को कैद किया था। इसी कुल में जन्मे कोक्कल जिन्होंने कलचूरी वंश की शुरुआत की।"

यहाँ तो राजा अपना संबंध मनुष्यों से हटकर सीधे विष्णु व ब्रह्मा जैसे देवताओं से जोड़ रहा है। अपने आपको

अत्री जैसे बड़े ऋषि का वंशज बता रहा है। वह रामायण महाभारत की कथा के लोगों के साथ अपना रिश्ता बता रहा है।

ज़रा सोचो, किसी व्यक्ति को ऐसे महान वंश का बताया जाए तो आम लोगों पर उसका कितना प्रभाव पड़ेगा? लोगों के मन में ऐसे परिवार के प्रति भय और आदर की भावना भी पनपती होगी।

वास्तव में कलचूरी वंश का संबंध रामायण के कार्तवीर्यार्जुन या अत्रिऋषि से रहा हो - ऐसा नहीं लगता। कलचूरी वंश की पुरानी वंशावली में न विष्णु का ज़िक्र है, न कार्तवीर्यार्जुन का। ये बातें बाद के कलचूरी राजाओं ने अपनी वंशावली में जुड़वाई थीं।

इस समय जो भी राजा बन रहे थे वे सब अपने लिए ऐसी वंशावली बनवाते थे। कोई अपना संबंध चन्द्रवंशी पांडवों से जोड़ता, तो कोई सूर्यवंशी राम से, तो कोई और यदुवंशी कृष्ण से। कुछ राजवंश अपने आपको वसिष्ठ ऋषि के अग्निकुण्ड से जन्मा हुआ बताते।

इन बातों से राजा की प्रतिष्ठा और उसका प्रभाव बढ़ता था।

सामन्त : बहुत सारे ताकतवर परिवार राजवंश बन रहे थे और उनमें आपस में होड़ लगी थी। हर राज-वंश ज्यादा से ज्यादा क्षेत्र अपने अधिकार में करना चाह रहा था। उन दिनों लगातार युद्ध का डंका बजा करता था। हर तरफ़ युद्ध का कोलाहल मचने लगा था। युद्ध में दूसरे राजा को हराने की कोशिश तो होती ही थी, पर साथ में राजा रक्त और नीति भी अपनाते थे। तुम इस नीति की शुरुआत समुद्रगुप्त और हर्षवर्द्धन के समय से देखते आ रहे हो। यह क्या नीति थी, तुम्हें याद आई?

इस समय आम तौर पर हारने वाले राजा को खत्म नहीं किया जाता था

विजयी राजा उसे उसका राज्य वापिस कर देता था। बदले में पराजित राजा, विजयी राजा को अपना 'अधिपति' मानता था और पराजित राजा विजयी राजा का 'सामन्त' बन जाता था।

कई बार छोटे राजा युद्ध में हारे बिना भी अपने क्षेत्र के बड़े राजा को अपना 'अधिपति' मान लेते थे, और खुद उसके 'सामन्त' बन जाते थे।

इस बात का तुमने पहले भी उदाहरण देखा है ध्यान करो।

इन बातों का एक उदाहरण मानचित्र नं. 6 में ही देखते हैं। कल्याणी के चालुक्य वंश का उदाहरण लेते हैं। इस शक्तिशाली वंश की ताकत आसपास के दूसरे कई वंश स्वीकार करते थे। उनमें से कुछ थे– छिन्दकनाग वंश, काकतीय वंश, कदम्ब, होय-सल, और यादव वंश।

मानचित्र नं. 6 में इन राजवंशों को ढूंढो और चालुक्य वंश से उन्हें तीर (→) लगाकर जोड़ दो। ये वंश चालुक्यों के ------- हुए। इसका क्या मतलब हुआ?

मतलब यह हुआ कि कदंब राजा जब अपने राज्य में कोई घोषणा करता या आदेश जारी करता तो वह यह जिक्र करता कि वह ________ राजा के चरण कमलों पर सेवा करता है।

चालुक्य राजा को 'महाराजाधिराज' या 'परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर परम माहेश्वर' कहा जाता और कदम्ब राजा अपने आपको सिर्फ 'राजा' या 'महाराजा' कहता, या 'महा-सामन्ताधिपति' कहता। कदंब राजा सामंत होने के कारण चालु-क्य राजा के बराबर कोई उपाधि नहीं धारण कर सकता था।

उसे बीच-बीच में चालुक्य राजा के दरबार में पेश होना पड़ता था और विशेष अवसरों पर अपने अधिपति के लिए मूल्यवान भेंट भी भेजनी पड़ती थी। जब चालुक्य राजा कोई युद्ध लड़ता तो कदंब राजा को अपनी सेना के साथ उसकी सहायता के लिए

पहुँचना होता।

यह सामन्त होने का मतलब था। ऐसी व्यवस्था से सामन्त राजाओं को परेशानी तो थी। पर, इससे उन्हें फायदा भी था। उनका राज्य उनके पास ही रहता। उन्हें अगर किसी दूसरे राजा से युद्ध लड़ना हो या अपने राज्य की रक्षा करनी हो, तो वक्त जरूरत उन्हें अधिपति राजा की मदद भी मिल सकती थी। अधिपति राजा को भी सामंतों से फायदा था। किसी राजा को हराकर उसका राज्य अपने राज्य में मिलाने से कई कठिनाईयां सामने आती। वहां उसे अधिकारियों को नियुक्त करना होता, प्रशासन की पूरी व्यवस्था करनी होती। फिर कोई राजवंश जो बहुत समय से एक जगह जमा हुआ है, उसे वहां से उखाड़ फेंकना आसान तो नहीं था। ऐसे राजवंशों को अपना सामन्त बना लेना ज्यादा ठीक लगता था।

कठिनाई व परेशानी बनती तो एकतरफ। फायदा यह होता कि अधिपति राजा को सामन्त राजा से समय-समय पर सैनिक मदद मिल जाती; मूल्यवान भेंट मिल जाती। उसका गर्व इस बात से बढ़ता कि दूसरा राजा उसे अपना अधिपति मान रहा है।

इन सब बातों को देखते हुए इस समय सामन्त बनाने की नीति बहुत अपनाई जाती थी। पर, इससे सामन्त और अधिपति के बीच लड़ाई झगड़ा और होड़ खतम हो जाती हो- ऐसा भी नहीं था। सामन्तों की कोशिश यही रहती कि वे किसी तरह स्वतंत्र हो जाएं। इस बात का एक उदाहरण देखो।

सन् 1096 में चालुक्य राजा विक्रमादित्य और चोलवंश के राजा के बीच युद्ध हुआ। होयसल वंश का राजा चालुक्य राजा का सामन्त था। वह अपनी सेना ले कर विक्रमादित्य की मदद के लिए आया। पर होयसल राजा के मन में यह इच्छा भी थी कि वह चालुक्य राजा से स्वतंत्र हो जाए। 1116 में, होयसल राजा विष्णुवर्धन ने इसके लिए प्रयास किया। उसने कदंब राजा (जो खुद चालुक्यों के सामंत थे) को अपने साथ लिया और दोनो सामन्तों ने अपने अधिपति राजा पर हमला बोला। इस युद्ध में तो दोनों चालुक्यों से हार गए। पर उनके प्रयास

जारी रहे। कुछ सालों बाद होयसल राजा अपने आपको स्वतन्त्र करने में सफल रहा।

अब होयसल राजा की स्थिति में क्या फर्क आ जाएगा — तुम बताओ।

अभ्यास

(1) तुमने नक्शे में राजवंशों के नाम पढ़े। क्या तुम्हें ये नाम जाने पहचाने से नहीं लगे? ये नाम तुम्हारी पहचान के कई लोगों के भी होंगे। नक्शे में ढूँढो, तुम्हारे पहचान के ऐसे कौन से नाम हैं?

(2) सन् 1000 तक इतने सारे राजवंश कैसे बने - कुछ समझाओ।

(3) नक्शे में तुम्हें एक ही राजवंश का नाम कई जगह लिखा क्यों दिखता है?

(4) राजवंश अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए क्या-क्या उपाय करते थे?

(5) इस समय के राजवंशों की वंशावली गुप्त राजाओं की वंशावली से किस बात में फर्क थी?

(6) यह बताओ कि कोई राजा 'सामन्त' कैसे बन जाता था?

(7) तुमने चालुक्य राजा और उनके सामन्तों का उदाहरण पाठ में पढ़ा। तो बताओ नीचे दिए वाक्यों में से कौन से सही हो सकते हैं? —
- यादव राजा कदंब राजा को भेंट पहुँचाता था।
- यादव राजा चालुक्य राजा को भेंट पहुँचाता था।
- काकतीय राजा अपने आपको चालुक्य राजा के चरण कमलों पर सेवा करने वाला कहता था।
- चिन्दकनाग राजा के दरबार में चालुक्य राजा पेश होता था।
- यादव राज्य के किसान जो लगान देते थे वो चालुक्य राजा को मिलती थी।

(8) चालुक्य राजा ने होयसल वंश के राजा को अपना सामंत बनाया हुआ था। इस नीति से उसे क्या फायदा हुआ? अगर वह होयसल राज्य को अपने राज्य में मिला लेता तो क्या उसे ज्यादा फायदा होता? तुम विचार करके लिखो।

ब्राह्मणों को भूमिदान 7

आजकल पूरे भारत में ब्राह्मण जाति के लोग रहते हैं। चाहे वो पहाड़ों पर बसा कश्मीर, व आसाम हो या राजस्थान के मरुस्थल हों या दूर दक्षिण में केरल और तामिलनाडु हों। लगभग हर गांव में ब्राह्मणों के एक दो परिवार तो होते ही हैं। वे शादी ब्याह करवाते हैं, मंदिर की देखरेख करते हैं या फिर खेती बाड़ी करते हैं।

पर एक समय ऐसा भी था जब ब्राह्मण यूं हर इलाके के गांव-गांव में नहीं पाए जाते थे। ब्राह्मण आर्य लोगों के कबीलों के साथ हुआ करते थे और ये कबीले शुरू में सिन्धु, गंगा यमुना नदियों के मैदान में रहते थे। भारत में उन दिनों और किस तरह के लोग रहते थे- इसका कुछ अन्दाज तुम्हें अशोक के समय की भारत यात्रा से लग ही गया होगा। ब्राह्मण इन दूसरे इलाकों को 'पाप देश' मानते थे। वे ऐसा सोचते थे कि ये दूसरे इलाके ब्राह्मणों के बसने की जगह नहीं है। पर यह बात बहुत दिनों तक नहीं रही। और अब तो हर जगह ब्राह्मण परिवार बसे हुए हैं। ब्राह्मणों के द्वारा बताया गया धर्म और समाज में लोगों के रहने का तौर तरीका भी लगभग हर जगह पाया जाता है। देखें यह बदलाव कैसे आया।

यूँ तो खेती करने वाले आर्यों के समय से ही ब्राह्मण जंगलों के बीच आश्रम बनाकर रहा करते थे। वहां वे कई प्रकार के यज्ञ करते थे, वेदों का अध्ययन करते थे और चिन्तनमनन करते थे। इन्हीं आश्रमों में वे अपने शिष्यों को पढ़ाते भी थे।

कभी-कभी इक्के-दुक्के ब्राह्मण किसी कारण से चलके दूर-दूर के इलाकों में पहुँच जाते थे और वहां बसना शुरू कर देते थे। ऐसा लगता है कि इन नए इलाकों के लोगों ने ब्राह्मणों का कुछ मनमुटाव भी रहा। ब्राह्मणों का सोच-विचार, पूजा का तौर तरीका सब कुछ बहुत फर्क था न! दूसरे लोगों को यह सब अजीब लगता होगा। पर हमेशा तनाव और झगड़े की बात ही नहीं रही। धीरे-धीरे ब्राह्मण नए लोगों के बीच मिलने-जुलने भी लगे।

ब्राह्मणों के माध्यम से कई नए विचार लोगों के बीच आए। जैसे यह विचार कि वेदों के श्लोकों का पढ़ा जाना और यज्ञ संस्कार करना सबसे श्रेष्ठ धर्म है। यह विचार भी फैला कि समाज के लोग चार वर्णों में बँटे होते हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र; और हर वर्ण के लोगों को अपने वर्ण के हिसाब से ही रहना चाहिए। इसी तरह ब्राह्मणों ने जीवन के चार आश्रमों की बात भी की। इस विचार के अनुसार मनुष्य को जीवन के पहले कुछ साल शिक्षा लेने में बिताने चाहिए, फिर उसे गृहस्थी बसा-कर गृहस्थी चलानी चाहिए। उसके बाद ही वह चिन्तन, मनन, तपस्या व सन्यास का जीवन बिता सकता है।

भारत के अलग-अलग इलाकों में कैसे खेती फैली और कैसे छोटे बड़े राजा बनने लगे, यह तुम पिछले पाठ में ही देख चुके हो। इन राजाओं ने ब्राह्मणों की मदद से अपनी वंशावलियाँ बनाईं, यज्ञ कराए और अपना प्रभाव बढ़ाया। ब्राह्मणों के महत्व को समझते हुए राजाओं ने दूर-दूर से, खासकर आर्यावर्त से ब्राह्मणों को बुला-कर अपने राज्य में बसाया।

राजाओं ने ब्राह्मणों द्वारा माने जाने वाले धर्म और समाज के नियमों का भी समर्थन किया। ब्राह्मणों को बसाने के लिए हर क्षेत्र के राजाओं ने उन्हें जमीन या पूरे के पूरे गांव दान में दिए। जब जमीन या गांव ब्राह्मणों को दान में दिया जाता था तब उन्हें एक ताम्रपत्र भी साथ में दिया जाता था। ताँबे के पट्टे पर यह खुदा रहता कि किसने किसको कौन सी जमीन दान में दी। ये ताम्रपत्र आज भी देखे व पढ़े जा सकते हैं। इनका एक चित्र अगले पृष्ठ पर देखो।

आओ पढ़ें कि इन ताम्रपत्रों में कैसी बातें लिखी होती थीं।

गुजरात प्रदेश में अलीना नाम की जगह से मिला राजा शीला-दित्य ध्रुवभट का एक ताम्रपत्र है। यह ताम्रपत्र सन् 766 में जारी किया गया। उसमें कुछ इस तरह से लिखा हुआ है -

"परमभट्टारक महाराजाधिराज परम माहेश्वर शीलादित्य ध्रुवभट ने महिलबली नाम का गांव दान में दिया। यह गांव उपलदेट पाथक

में बसा है और आनन्दपुर के रहने वाले ब्राह्मण, भट्ट आरवंड-मिश्र को दान में दिया जाता है, ताकि वे बलि, चरु, वैश्वदेव, अग्निहोत्र व अतिथि संस्कार के यज्ञ कर सकें। यह दान उन्हें सब अधिकारों के साथ दिया जाता है। उन्हें गांव के किसानों से लगान लेने का हक है, उनसे बेगार करवाने का हक है, अपराधियों से जुर्माना लेने का हक है, भाग, भोग, कर, हिरण्य जैसे करों की वसूली करने का हक है। दान दिए इस गांव की तरफ कोई राजकीय अधिकारी हाथ भी नहीं उठाएगा। जब तक चाँद और सूरज चमकेंगे तब तक वे और उनके वंशज इस गांव को भोग सकते हैं .....यह दानपत्र ज्येष्ठ माह के शुक्लपक्ष की पंचमी को लिखवा गया।.....

सन् 300 से सन् 1200 तक के हजारों ऐसे ताम्रपत्र पास गए हैं। लगभग हर प्रदेश के, हर वंश के राजाओं द्वारा जारी किए गए ताम्रपत्र मिलते हैं।

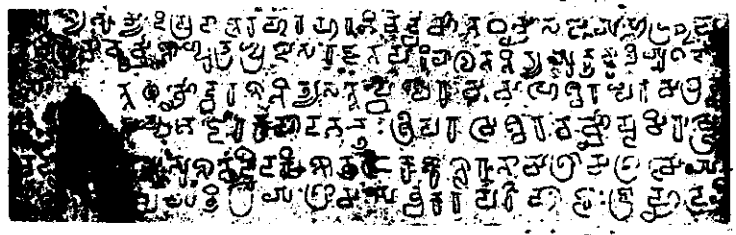

इन्हें पढ़कर पता चलता है कि कई बार राजा ब्राह्मण को किसी जमीन या गांव पर यह अधिकार दान में देता था, कि जो लगान या कर राजा को दिया जाता है, वह दान के बाद ब्राह्मण को मिले। ब्राह्मणों को यह भी अधिकार दिया जाता था कि जैसे राजा आम लोगों से बिना किसी तरह का भुगतान किए काम ले सकता था, वैसे दान दिए गांव के लोगों से ब्राह्मण भी बेगार करा सकता है। दान दिए गांव में राजा के सैनिक या अधिकारी नहीं घुस सकते। यहाँ तक कि गांव में अपराधियों को दण्ड देने का हक भी ब्राह्मणों को दे दिया जाता।

पर कभी-कभी ब्राह्मण को जमीन या गांव का मालिक ही बना दिया जाता था- कि वो चाहे जैसे उस जमीन को जोतें या दूसरों से जुतवाए।

राजा शिलादित्य ने ब्राह्मण आरवंडमिश्र को इनमें से कौन से अधिकार दिए?

कुछ राजाओं के लिए तो यह बात प्रसिद्ध है कि उन्होंने 100-200 ब्राह्मणों को एक साथ दान दे कर अपने राज्य में बसाया। धीरे-धीरे आम लोगों के मन में भी यह धारणा बैठ गई थी कि ब्राह्मणों को दान देने से पुण्य मिलता है। कई धनी लोग भी ब्राह्मणों को दान दे कर अपने गाँव या शहर में बसाते थे।

इसतरह कई सालों में हर जगह पर ब्राह्मण परिवार बसे। समाज में उन्हें केवल प्रतिष्ठा ही नहीं मिली, साथ ही उन्हें धन व संपत्ति के कई अधिकार भी मिले।

शायद इसतरह बसाए गए ब्राह्मण परिवारों के वंशज आज भी हमारे बीच हैं। एक बार हमने अपने परिचय के एक दुबे जी से बातों-बातों में पूछा कि वे होशंगाबाद के पास कब व कैसे आ कर रहने लगे, तो उन्होंने अपने परिवार की कहानी बताई। वे बोले कि बहुत समय पहले की बात है। मध्यप्रदेश के इस इलाके में कोई ब्राह्मण नहीं रहता था। यहाँ गोंड़, कोरकू जैसे आदिवासी लोग रहते थे। फिर यहाँ के एक राजा ने उत्तरप्रदेश के इलाके से ब्राह्मणों के लिए बुलावा भेजा। राजा के बुलावे पर हमारे पूर्वज यहाँ आकर बसे। राजा ने हमें बसने के लिए जमीन दी।

यह ठीक से पता नहीं चल सका कि दुबे जी के परिवार में यह घटना कब हुई। यह करीब सन् 1100 के आसपास की बात लगती है।

तुम भी अपने गाँव या शहर में रहने वाले ब्राह्मण परिवारों का इतिहास पता करो। शायद तुम्हें भी कुछ परिवारों की कहानी दुबेजी की कहानी जैसी मिले। क्या पता किसी पुराने परिवार के पास तुम्हें ताम्रपत्र ही मिल जाए।

अभ्यास

(1) ब्राह्मणों के माध्यम से किस तरह के विचार लोगों के बीच फैले?

(2) राजा ब्राह्मणों को किस तरह के अधिकार दान में देते थे?

(3) भारत के हर क्षेत्र में ब्राह्मण किन तरीकों से बसते गए— समझाओ।

(4) राजाओं ने ब्राह्मणों को क्यों बसाया?

गाँव और शहर के लोग 8

उस पुराने समय में, आज से लगभग हजार-बारह सौ साल पहले अपने देश के इतिहास में किस तरह की बातें हो रही थीं, इसका कुछ अनुमान अब तुम्हें हो गया है। चलो अब उस समय के कुछ गाँवों में पहुँचें, कुछ नगरों में पहुँचें-और देखें कि उन सब बातों का लोगों पर क्या असर पड़ रहा था।

दक्षिण भारत का एक गाँव

दूर दक्षिण में बहती है- कावेरी नदी। जहां यह नदी बंगाल की खाड़ी में गिरती है, वहां वह अनेक छोटी बड़ी शाखाओं में बँट जाती है। यह इलाका नदी का मुहाना कहलाता है। हर साल नदी में बाढ़ आती है, और उसकी सारी शाखाओं में पानी भर जाता है, और आसपास के खेतों में भी पानी फैल जाता है। जब पानी उतर जाता है तो खेतों में उपजाऊ मिट्टी की एक परत बिछ जाती है। पानी की यहाँ कमी नहीं है। लोग धान की दो-दो, तीन-तीन फसलें लेते हैं। कहीं लहलहाते खेत हैं, तो कहीं ऊँची ऊँची नारियल और सुपारी के पेड़ हैं, या फिर केले के बगीचे। यह पूरा प्रदेश सुन्दर मंदिरों और सम्पन्न गांवों के लिए प्रसिद्ध है।

ऐसा ही एक गांव है- तलैच्चंगाडु। आज से 1400 साल पहले लिखे गये तमिल गीतों में इस गांव का वर्णन है। तब यहां दो तीन छोटे मंदिर थे।

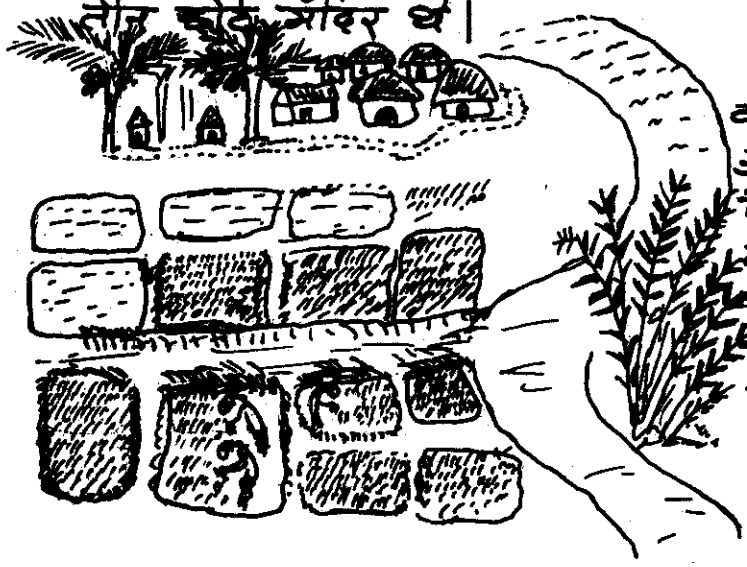

तलैच्चंगाडु आज भी वहीं बसा हुआ है। हाँ मंदिर जरूर बहुत बड़े-बड़े हो गये हैं। काले पत्थरों की ऊँची - दीवारों और बीच में बने ऊँचे शिखर वाले मन्दिर।

यह पत्थर का मन्दिर हाल में नहीं बना- आज से एक हजार साल पहले सन् 960

के आसपास जब चोल वंश के राजा वहां शासन कर रहे थे। यह मंदिर तब बना था, उस समय लोगों में एक प्रथा थी- गांव और मंदिर में जो घटनाएँ होती थीं उनके बारे में मंदिर की दीवारों में लोग शिलालेख खोद देते थे। यह प्रथा सन् 1250 तक चली। इसलिए तो हमें इस गांव के बारे में, इस गांव के इतिहास के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

इन लेखों से इस गांव के मंदिरों के बारे में, यहां रहने वाले ब्राह्मणों के बारे में, वहां के किसानों के बारे में, मजदूरों के बारे में और वहां कभी-कभी आने वाले यात्रीयों के बारे में बहुत कुछ हमें पता चलता है।

यह उस समय की बात है, जब यह पत्थर का मंदिर बना भी न था। तब वहां केवल वेल्लाल जाति के किसान जमीन के मालिक थे। एक दिन किसी चोल राजा ने तलैच्चंगाडु और उसके आसपास के गांवों के प्रमुख परिवारों के संगठन के नाम एक आदेश भेजा। प्रमुख परिवारों के संगठन को 'नाडु' कहा जाता था। आदेश था- "हमने आपके इलाके के गांव तलैच्चंगाडु को कुछ ब्राह्मणों को दान में दिया है। अब इस गांव के जमीन के मालिक ब्राह्मण ही होंगे। आप लोग इस गांव की सीमा निर्धारित करके इन ब्राह्मणों को गांव दे दें।" नाडु (प्रमुख परिवारों के संगठन) ने इस आदेश का पालन किया और तलैच्चंगाडु ब्राह्मणों का हो गया। अब वह एक <u>ब्रह्मदेय गाँव</u> कहलाने लगा।

कई सारे ब्राह्मण परिवार वहां आकर बसने लगे। जैसे-जैसे वे आते गए, उनके घर भी बसने लगे- इस प्रकार धीरे धीरे दो, तीन

सड़कों के दोनों ओर ब्राह्मणों के घर बन गए। इन परिवारों ने गांव की जमीन आपस में बांट ली। मगर ब्राह्मण खुद तो खेती नहीं करते थे। उन्होंने जमीन पुराने वेल्लाल किसानों को बटाई में दे दी। वेल्लाल किसान खुद जमीन पर काम तो करते थे, मगर कटाई, कटाई, मिट्टी खोदना आदि काम परैयर जाति के मजदूरों

से करवाते थे।

ब्राह्मणों के आने के पहले हर गांव में वेल्लाल किसानों की एक सभा होती थी। सभा का नाम था "ऊर"। इसमें गाँव के प्रमुख वेल्लाल किसान सदस्य थे। यह सभा गांव के काम-काज चलाती थी। नहर के पानी का बंटवारा करना, गांव के झगड़ों को निपटाना, राजा को गांव से कर इकट्ठा करके देना। यह सब 'ऊर' ही करती थी।

अब जब ब्राह्मण आ गये तो उन्होंने गांव का काम-काज अपने हाथ में ले लिया। अब जमीन भी उनकी हो गयी - उसपर कर इकट्ठा करके राजा को देना था। यह भी अब ब्राह्मणों की जिम्मेदारी हो गयी। यह सब काम करने के लिए ब्राह्मणोंने एक सभा का गठन किया - मूलपुरुष सभा। इसमें प्रमुख ब्राह्मण परिवार बारी-बारी से सदस्य बनते थे। अब "ऊर" (किसानों की सभा) खतम कर दी गई।

वैसे ब्राह्मणों के आकर बसने से तलैच्चंगाडु गांव के वेल्लालों की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी। ये ब्राह्मण वेदों और शास्त्रों को जानने वाले विद्वान थे, पूरे समाज में उन्हें आदर से देखा जाता था। लोग ब्राह्मणों द्वारा बताये गये संस्कार और रीतिरिवाज अपना रहे थे। ब्राह्मणों के तलैच्चंगाडु में आकर बसने से वहाँ के किसान शायद गर्व महसूस करते होंगे। अब उस पूरे इलाके में तलैच्चंगाडु एक प्रमुख और प्रसिद्ध गांव हो गया।

<u>क्या तुम बता सकते हो कि तलैच्चंगाडु एक ब्रह्मदेय गांव बनने से वहां क्या-क्या बदलाव आये। गांव में रहने वाले वेल्लाल किसानों पर इस सबका क्या असर पड़ा?</u>

इस बीच तलैच्चंगाडु के मंदिर प्रसिद्ध होने लगे। पहले वहां लकड़ी और ईंट के मंदिर थे। अब लोगों ने खूब धन खर्च करके दूर से अच्छा पत्थर मँगवाया, जाने माने कारीगर और मूर्तिकारों को बुलवाया और उनसे पक्के पत्थर के मंदिर बनवाए।

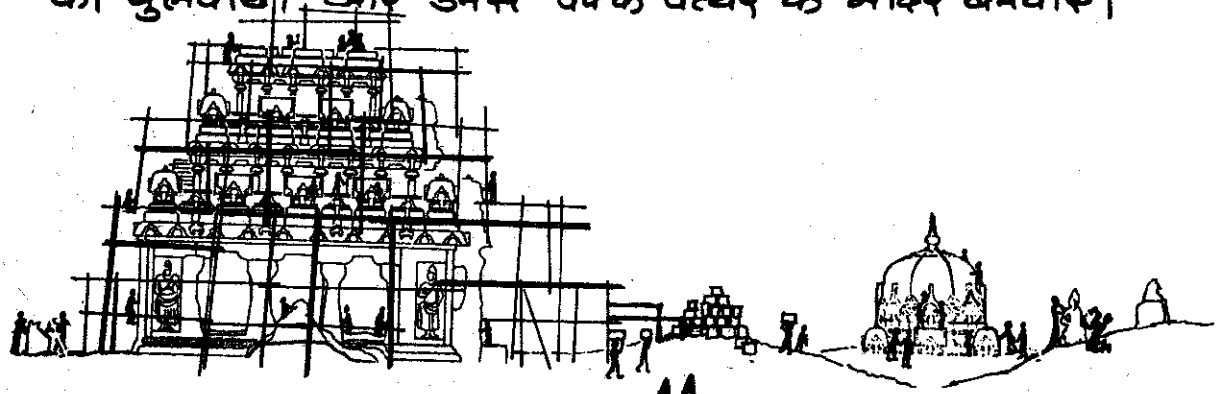

इसतरह यहाँ दो शिव मंदिर और एक विष्णु मंदिर बने। इस समय सब दूर शिव और विष्णु की पूजा लोकप्रिय हो रही थी। सब दूर उनकी मूर्तियाँ बनाकर मंदिरों में स्थापित की जा रही थीं। रोज देवता को सुबह-शाम नहलाना, सजाना, फूल-धूप, दीप, भोग चढ़ाना पूजा का लोकप्रिय तरीका हो रहा था।

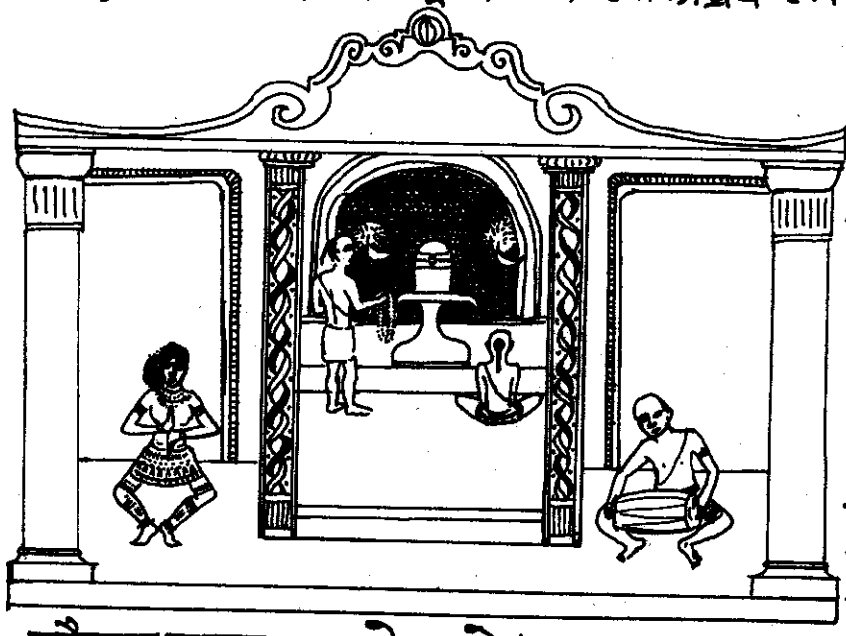

विशेष दिनों में विशेष पूजा पाठ भी होता था। मंदिर में रोज वेद पाठ, नृत्य, गीत आदि का भी आयोजन होने लगा था। मंदिर में आने वालों को भोजन भी कराया जाता था।

तलैच्चंगाडु के मंदिरों में भी अब खूब धूम धाम से पूजा पाठ होने लगा। त्यौहार मनाए जाने लगे। मगर इन सब बातों में तो खूब धन खर्च होता था।

इस समय मन्दिरों को दान देना एक महत्वपूर्ण बात बन रही थी। मंदिर को सोना, पैसा, अनाज आदि दान में दिया जाने लगा। जो दान देता उसका नाम और दान का ब्यौरा मंदिर की दीवारों पर खुदवाया जाता। इससे दान देने वाले की प्रतिष्ठा बनती थी।

तलैच्चंगाडु से मिले सबसे पुराने लेख में ऐसे ही एक दान का ब्यौरा है।

"मलै नाडु (केरल) का एक व्यापारी केशवन ने तलैच्चंगाडु के विष्णु मंदिर में लगातार एक दिया जलाये रखने के लिए कुछ सोना दिया।"

जरा सोचो, केशवन दूर केरल से तलैच्चंगाडु क्यों आया होगा?

मंदिर को केवल सोना या अनाज ही नहीं मिलता था। कई लोग अपनी जमीन भी मंदिर को दान में दे देते थे। तलैच्चंगाडु के लोग तो जमीन मंदिर को दान करते थे। इनका जिक्र मंदिर

की दीवारों में खुदा मिलता है। कभी-कभी मंदिर भी बचे हुए पैसे से जमीन खरीदता था।

इस जमीन का उपयोग कैसे होता था? मंदिर इन्हें बटाई पर वेल्लाल किसानों को दे देती थी। बटाई में मंदिर को जो हिस्सा मिलता था, उससे वह राजा को कर देता था। और बाकी जो बचता उसे अपने खर्च के लिए रख लेता था। मंदिर से ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा कर इकट्ठा करके राजा को देती थी।

1006 के करीब तलैच्चंगाडु के एक शिव मंदिर में एक बात खुदवाई गयी। इसमें किसके दान की बात लिखवी गयी? पढ़कर देखो-

"तलैच्चंगाडु ब्रह्मदेय के मूलपुरुषों का यह निर्णय है। शिवमंदिर के पुजारी और मंदिर के कामकाज चलाने वाले श्री कार्यम सैवार समीति ध्यान दें। हम चाहते हैं कि हर साल चैत के महीने में मंदिर में त्यौहार मनाया जाए और भगवान की विशेष पूजा की जाए। इसलिये हमने तय किया कि मंदिर की कुछ जमीन पर राजा को जो कर दिया जाता है, उसे मूलपुरुष स्वंय देंगे। मंदिर के बटाईदारों से कुछ नहीं मांगेंगे। इससे जो बचत होगी, उससे मंदिर यह उत्सव का खर्च पूरा करें।"

मूलपुरुषों ने मंदिर को क्या दान में दिया? राजा को कर अब कौन देगा- मंदिर कि मूलपुरुष? इससे फायदा किसको हुआ? -मूलपुरुष को, बटाईदार को, राजा को, कि मंदिर को?

कभी-कभी मंदिर मूलपुरुषों को कुछ पैसे देती। मूलपुरुष मंदिर से वादा करते कि उसके ब्याज से हर साल मंदिर के कुछ जमीन पर स्वंय कर जमा करते रहेंगे- मंदिर से नहीं लेंगे।

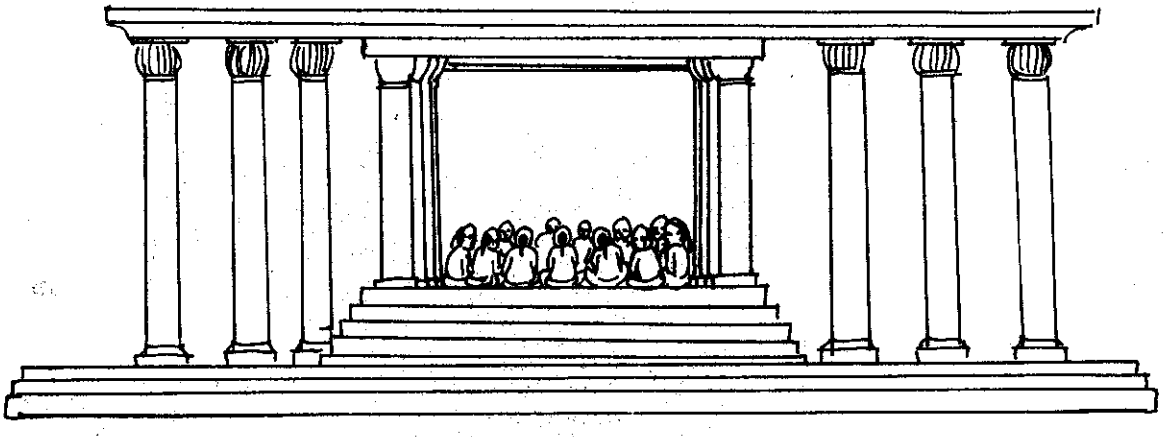

ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा का तलैच्छंगाड़ गांव पर अधिकार था। इसलिए उनके पास मंदिर को दान देने के और भी तरीके थे। एक बार मूलपुरुषों ने तय किया कि गांव के विष्णु मंदिर में 10 ब्राह्मणों को रोज भोजन करना चाहिए। इस खर्च के लिए उन्होंने मंदिर को 100 काशु (सिक्के) दिए। 100 काशु (यानी सिक्के) जुटाने के लिए मूलपुरुष सभा ने चंदा किया था। उसने गांव के बढ़ई से 7 काशु मांगे, सुनार से भी 7 काशु लिए और लुहार से भी, धोबी से साढ़े तीन काशु लिए और गांव में खजूर के रस से शराब बनाने वाले जो लोग थे-उनसे 35 काशु लिए। बचे हुए पैसे अपनी तरफ से जोड़े और मंदिर को दान किया।

इसतरह मंदिर का ठाठ-बाठ बढ़ता ही जा रहा था। मंदिर के पास खूब सारी जमीन इकट्ठी हो गयी। खूब सोना, चांदी गहने जमा हो गये। अब मंदिर में कई सारे लोग काम करने लगे। कई सारे पुजारी, लेखा-जोखा रखने वाले, मंदिर की देखभाल करने वाले, पानी भरने वाले, नाचने वाले, बाजा बजाने वाले, मंदिर के फूल बगीचे में काम करने वाले माली, चौकीदार जैसे कई लोग हो गए। इनका भोजन, कपड़ा, घर, सबका प्रबंध मंदिर से होता था। कभी-कभी उन्हें मंदिर की तरफ से जमीन भी दी जाती थी।

मंदिर के पास इतना धन जमा हो गया कि कभी-कभी जब मूलपुरुषों को पैसे की जरूरत पड़ती तो वे मंदिर से उधार लेते थे। ऐसा ही एक मौका आया 1159 में। उस साल बारिश कम हुई थी, नहर में पानी नहीं चढ़ रहा था। फसल खराब हो गई थी। तलैच्छंगाडु के मूलपुरुषों ने पास के शिव मंदिर से 300 काशु (सिक्के) उधार लिए।

कभी-कभी मंदिर की जमीन-जायदाद को लेकर लड़ाई-झगड़े

भी हो जाते थे। ऐसा ही एक किस्सा 1177 में हुआ। इस घटना का ब्यौरा भी मंदिर की दीवारों पर खुदा हुआ है।

गांव की जमीन के एक टुकड़े पर चार ब्राह्मण खेती कर-वाते थे। एक दिन एक शिव मंदिर की देखरेख करने वालों ने दावा किया कि वह जमीन वास्तव में मंदिर की है। उन्होंने कहा कि उस खेत की सीमा पर एक पत्थर गड़ा हुआ था। जिसमें मंदिर का त्रिशूल बना था। उन चार ब्राह्मणों ने उसे चोरी छिपे उखाड़ फेंक दिया और खुद उसपर खेती करने लगे। ब्राह्मणों का कहना था, कि वह खेत उनका अपना है। काफी वाद विवाद हुआ।

मंदिर के हक को सिद्ध करने के लिए मंदिर के एक नौकर ने आग लगाकर आत्म-हत्या कर ली। उस समय की मान्यता यह थी कि जो व्यक्ति अपने कथन को सिद्ध करने के लिए मरने तक को तैयार हो जाता है, वह सच ही कह रहा होगा। शायद इसलिए मंदिर के नौकर ने आत्म हत्या कर ली।

जब बात यहीं तक पहुँची तो मूलपुरुषों ने अपने गांव के दस्तावेजों में खोज की। पता चला कि वह खेत मंदिर का ही था।

अब इन चार ब्राह्मणों के पास खेत को मंदिर के पास सौंपने के अलावा कोई चारा नहीं बचा। यही नहीं उन्हें उस नौकर की एक कांसे की मूर्ति बनाकर मंदिर में रखनी पड़ी। और उसकी पूजा के लिए कुछ और जमीन भी मंदिर को देनी पड़ी।

लगभग इसी समय तलैचङ्गाड़ु और आसपास के गांवों में हलचल मची हुई थी। तलैचङ्गाड़ु के आसपास और कई सारे ब्रह्मदेय गांव थे। 1170 के बाद इन गांवो में ब्राह्मण अपने वेल्लाल बटाईदारों से फसल का ज्यादा हिस्सा मांगने लगे। कई बटाईदार अधिक हिस्सा नहीं दे पाये तो ब्राह्मणों ने अपने नौकरों को वेल्लालों के घर भेजकर तोड़फोड़ मचानी शुरु की। कुछ बड़े वेल्लालों ने उन्हीं मांग की कि खेतों में जो परैयर मजदूर काम करते थे, उनकी मजदूरी ब्राह्मण खुद दें।

बहुत सालों तक ब्राह्मणों और वेल्लालों के बीच इन बातों को

लेकर संघर्ष चलता रहा। तलैच्चंगाडु के वेल्लालों ने तय किया कि अब वे आसपास के गांवों के वेल्लाल किसानों की मदद जुटायेंगे। ब्रह्मदेय गांवों को छोड़कर बाकी गांवों में वेल्लालों का ही तो बोलबाला था। उनके प्रमुख परिवारों का संगठन या सभा भी थी - जिसे 'नाडु' कहते थे। नाडु में बात उठी तो नाडु ने जगह-जगह की ब्राह्मण सभाओं को चेतावनी दी कि इस तरह अत्याचार चला तो वे खेती नहीं करेंगे। गांव छोड़कर चले जायेंगे।

आखिरकार सन् 1234 में ब्राह्मणों को वेल्लालों से समझौता करना पड़ा। तय हुआ कि नहर से सिंचित जमीन पर बटाईदारों को फसल का एक तिहाई भाग मिलेगा, अगर ढेंकली से सिंचाई होगी तो बटाईदारों को फसल का आधा भाग मिलेगा। कुछ और गांवों में ब्राह्मणों ने परैयर मजदूरों को मजदूरी देना मन्जूर किया।

इस संघर्ष और समझौते से तलैच्चंगाडु के वेल्लालों को कुछ राहत तो मिली। फिर भी ब्राह्मणों का उनपर अधिकार तो बना ही रहा। जमीन अब भी ब्राह्मणों के हाथ में ही थी और गांव पर मूलपुरुषों की ही हुकूमत चलती थी। समझौते के बाद भी मूल-पुरुष वेल्लालों से बेगार कराते थे। उन्हें कोई मजदूरी दिए बगैर उनसे रास्ता बनाना, नाले, नहर, खोदना आदि काम करवाते थे।

इस घटना के कुछ दस-बीस साल बाद मंदिरों की दीवार पर शिलालेख खुदवाने की प्रथा खतम सी हो गई। इसलिए हम तलैच्चंगाडु भी कहानी यहीं खतम करते हैं।

तलैच्चंगाडु की आज क्या स्थिति है? यह पता करने हम चले, कुछ दिन पहले। गांव तो वहीं बसा हुआ है। मंदिर भी है - वैसे ही काले पत्थर के। उनपर आज भी हजार साल पहले खुदे लेख दिखते हैं। मगर आजकल मंदिरों में वह रौनक नहीं है जो चोल राजाओं के समय थी।

उसमें काम करने वाले बहुत कम लोग हैं, बस कुछ पुजारी और नौकर। मंदिर के पास आज भी काफी जमीन है। और यह बटाई पर ही दी हुई है। लेकिन इससे उतनी आमदनी नहीं होती है, जितनी पुराने समय में।

आज भी तलैच्चंगाडु में ब्राह्मणों के कई परिवार हैं, और उनके पास जमीन भी है। मगर ऐसा नहीं है कि गांव की सारी जमीन इन्हीं के पास है। अन्य समाज के लोगों के पास भी जमीन है। ब्राह्मणों की आबादी पहले से काफी कम हो गयी है। यहां के अधिकतर ब्राह्मण अपने पुश्तैनी धन्धे छोड़कर आजकल मद्रास, बम्बई जैसे शहरों में वकालत, डाक्टरी, और सरकारी नौकरी करने लगे हैं।

गांव के कामकाज के लिए अब कोई मूलपुरुष सभा या ऊर नहीं है। और गांवों की तरह यहां भी ग्राम पंचायत है, जिसमें हर जाति के लोग सदस्य हैं। अन्य जगहों की तरह यहां भी जिलाधीश, तहसीलदार, जैसे सरकारी अधिकारियों का शासन है। दूसरे कई इलाकों से भी लोग यहां आकर बस गए हैं। अब किसानी करने वाले कई और समाज के लोग हो गये हैं - केवल वेल्लाल जाति के लोग ही नहीं।

आज भी तलैच्चंगाडु में पैरैयर जाति के खेती-हर मजदूर हैं। पर पुराने समय में उनकी हालत बहुत ही दबी कुचली थी। उन्हें तब अछूत और नीचा माना जाता था। पैरयर खेतिहर मजदूरों की आज यूनियन (संगठन) बन गयी है। इन्होंने अपने हक के लिए कई संघर्ष किए हैं, और सफल भी रहे हैं।

ऊर-सभा और नाडु

तुमने तलैच्चंगाडु का इतना लंबा इतिहास देखा। वह गांव आज कैसा है - यह भी पता। आज तो तलैच्चंगाडु में सरकारी अधिकारी हैं, पुलिस थाना है।

चोल वंश के समय क्या तलैच्चंगाडु की स्थिति ऐसी ही थी? क्या तुम्हें वहां कोई राजा का अधिकारी दिखा? गांव के कामकाज चलाने के लिए वेल्लालों की ऊर या ब्राह्मणों की सभा होती थी। वहां जब कोई जमीन के बारे में कोई वादविवाद उठाता, या फिर किसी बात पर झगड़ा होता, तो क्या कोई सरकारी कर्मचारी या राजा का अधिकारी आकर सुलझाता था?

क्या वे लोग कोई कोर्ट कचहरी जाते दिखे ? और क्या तुम्हें राजा का कर वसूल करने कोई सरकारी अधिकारी आता दिखा ?

नहीं न ! यह उस समय की दक्षिण भारत के गांवों की खासियत थी। सब गाँवों की अपनी-अपनी ऊर या सभा होती थी। गांव का प्रशासन उनसे ही होता था। गांव का लेखा जोखा, कर वसूल करना, झगड़े निपटाना, अपराधियों को दंड देना। यह सब इन्हीं सभाओं का काम था। आजकल जैसे हर जिले में, तहसील में, सरकार के अधिकारी हैं, वैसे उस समय न था। राजा के अपने अधिकारी थे तो सही मगर बहुत कम।

जब कभी राजा को कोई आदेश होता था, तो वह इन्हीं सभाओं को संबोधित करता था। चोल राजा ने जब तलैच्चंगाडु को ब्राह्मणों को दान में दिया तो उसने यह आदेश किसके नाम जारी किया– याद है ?

उस समय नाडु बहुत महत्वपूर्ण होता था। हर 20-30 गांवों में एक नाडु होती थी। उनमें उन गाँवों के प्रमुख वेल्लाल परिवार के लोग होते थे। वे अपने गांवों की देखभाल करते थे। इसी कारण राजा उनसे अपना आदेश लागू कर-वाता था।

अभ्यास

(1) तलैच्चंगाडु गांव . . . . . के सुहाने पर बसा है।

(2) तलैच्चंगाडु का मन्दिर . . . . . में बना था।

(3) तलैच्चंगाडु गांव के इतिहास के बारे में हमें कैसे पता चलता है ?

(4) तलैच्चंगाडु ब्रह्मदेय गांव किसतरह बना ?

(5) नाडु किसे कहते थे ?

(6) किसानी करने वाले लोग कौन थे ?
खेतों में मजदूरी कौन करता था ?

(7) ब्राह्मणों ने अपनी जमीन कैसे जुतवाई ?

(8) (क) 'ऊर' क्या थी ? उसमें कौन होता था ? ऊर के क्या काम थे ?

(ख) 'मूलपुरुष' सभा और 'ऊर' में क्या बातें समान थीं और क्या बातें भिन्न थीं ?

(9) मंदिर में पूजा के लिए क्या-क्या होता था ? मंदिर में काम करने के लिए किस तरह के लोग थे ?

(10) तलैच्चंगाडु गाँव में ब्राह्मणों और वेल्लालों के अलावा और कौन लोग रहते थे ?

(11) मंदिर को दान में क्या-क्या मिला— बताओ।

(12) जमीन को लेकर ब्राह्मणों और मंदिर के बीच जो झगड़ा हुआ वो कैसे सुलझा ?

(13) ब्राह्मणों और वेल्लालों के बीच झगड़ा किस बात को लेकर हुआ ? समझौता कैसे हुआ ?

(14) उस पुराने समय की तुलना में तलैच्चंगाडु में आज क्या बातें बदली हुई हैं ?

उत्तर भारत के गांव 9

तुमने दक्षिण भारत के गाँव कैसे होते थे यह तो देखा। अब चलो देखते हैं, अन्य इलाकों में गांव कैसे थे, किसान कैसे थे।

यह बातें जानने के लिए इतिहासकारों ने उन इलाकों के अभिलेख पढ़े हैं, उस समय लिखी कई किताबों को भी पढ़ा है। दक्षिण भारत को छोड़कर अन्य इलाकों के गांवों के बारे में न विस्तृत वर्णन मिलते हैं, न ही उस गांवों में होनेवाली घटनाओं का रिकॉर्ड। इसलिए इन गांवों का पूरा इतिहास नहीं बताया जा सकता। मगर इन गांवों के बारे में जो बातें पता चल पायीं हैं, उनमें से कुछ बातें तुम भी जानो।

उस समय कई तरह के गांव थे -

कुछ गांव जंगलों और पहाड़ों के बीच बसे थे। राजा हर्ष अपनी बहन राज्यश्री को ढूँढते-ढूँढते-ऐसे ही एक गांव में पहुँचे थे। इन्हें वास्तव में ग्राम नहीं "पल्ली" कहा जाता था। यहां शबर, पुलिन्द, मेड, भील, निषाद आदि कबीलों के लोग रहते थे।

इन जंगलों के पल्लियों के विपरीत थे राज्यों के गाँव। इनमें लोग प्रमुख रूप से खेती करके जीते थे। खेती भी हल-बैल बखर से करते थे। सिंचाई के साधनों का इस्तेमाल करते थे। कौन-कौन से साधन थे- यह शायद तुम्हें याद हो।

इन गांवों में आसपास एक दूसरे से लगे-लगे घर होते थे। आमतौर पर सारे घर ऊँचे भाग पर बसे होते थे। ऐसी जमीन को "वास्तु" कहा जाता था। इसके चारोंओर खेती की जमीन थी - जिसे क्षेत्र कहा जाता था। इसी शब्द से खेत शब्द भी बना है। खेतों के अलावा यहाँ पशुओं के लिए चारागाह भी थे।

ऐसी ही बस्तियाँ ग्राम कहलाती थीं। यहाँ के लोग वर्ण व्यवस्था व जात-पात मानते थे। अक्सर एक ही गाँव में कई जातियों के लोग रहते थे। यहाँ ब्राह्मणों का आदर सम्मान होता था। किसानों की जमीन पर राजा और सामंतो को कर इन्हीं गांवों से मिलता था।

हमें अधिकतर इन्हीं ग्रामों का जिक्र मिलता है - यहीं पढ़े-लिखे लोग थे जिन्होंने पुस्तकें लिखी, यहीं के मंदिरों से अभि-लेख मिलते हैं।

जैसे तुमने पहले देखा इस तरह के गांवों की संख्या इससमय खूब बढ़ रही थी। कई बार राजा व सामन्त नई-नई जगहों पर ऐसे गांव बसाते थे। कभी-कभी पल्लियों में रहने वाले कबीलों को मार भगाकर वहाँ ग्राम बसाया जाता था।

मगर ग्रामों में भी कई तरह के गाँव थे। कुछ ब्रह्मदेय गांव थे- जिन्हें ब्राह्मणों को दान में दिया हुआ था। दक्षिण के ब्रह्मदेय गांवों के बारे में तुमने जान लिया है। वहां की 'उर', 'नाडु', या 'मूलपुरुष सभा' जैसी संस्थाएं जिसतरह गांव के कामकाज का संचालन करती थीं, वैसे काम करने वाली किसी संस्था का जिक्र अन्य इलाकों से नहीं मिलता है। ब्रह्म-देय गांव के अलावा कुछ गांव मंदिर के अधिकार में थे। जैन व बौद्ध संघों या मठों के अधिकार में भी कई गांव थे। लेकिन अधिकांश गांवों पर राजा, उसके रिश्तेदारों, अधिकारियों और सामंतों का ही नियंत्रण था। इनके बारे में कई बातें हमें उस समय के अभिलेखों से पता चलती है।

ऐसे कुछ अभिलेख पढ़कर देखें - उनमें क्या लिखा होता है। राजस्थान के नाडोल नाम के शहर से मिला एक ताम्रपत्र है। इसमें क्या लिखा है - चलो देखते हैं -

इसमें लिखा है कि, "चौहान वंश के महाराजाधिराज अल्हण, नाडोल शहर पर शासन कर रहे थे। उन्होंने अपने बेटे राजपुत्र कीर्तिपाल को नड्डुल और उसके साथ ग्यारह अन्य गांव भोग करने को दे दिये। कीर्तिपाल ने सन 1162 में आदेश दिया कि इन 12 गांव से हर साल दो-दो चाँदी के सिक्के नड्डुल के जैन मंदिर को दिए जाएँगे।"

गांव वालों को यह आदेश करने का कीर्तिपाल को क्या हक था?

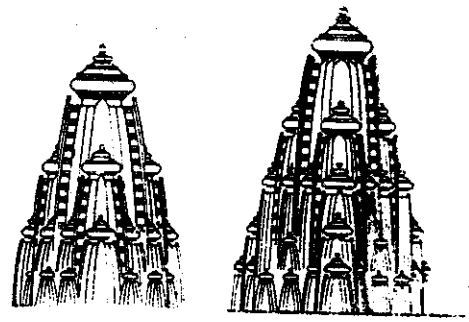

राजस्थान के 'लाल-
-राई' नाम के गाँव से
मिला एक अभिलेख और
देखो। उसमें लिखा है कि
अल्हण का पुत्र कल्हण
शासन कर रहा था। उसने
अपने छोटे भाई कीर्तिपाल के
बेटे राजपुत्र लाखणपाल
और राजपुत्र अभयपाल को

सिनाणव गाँव और आस-पास के अन्य गांवों भी भोग करने को दिए। लाखणपाल और अभयपाल ने 1167 में गाँव की पंच-कुल के समक्ष एक आदेश दिया। आदेश था कि भड़ियाऊव गाँव के हर अरघट्ट पर एक द्रारक जो जैन मंदिर को दी जाये।

<u>कीर्तिपाल और उसके बेटे राजा के क्या लगते थे?</u>

इसतरह के कई सारे लेख कई गांव और शहरों से मिलते हैं। इनसे पता चलता है कि राजा अपने रिश्तेदार, अधिकारी, सेनापति जैसे लोगों को आमतौर पर वेतन नहीं देते थे। राजा उन्हें वेतन देने के बदले में अपने राज्य के कुछ गांव या शहर "भोग" करने के लिए दे देते थे।

तुम्हें याद है न कि मगध राजा अजातशत्रु या मौर्यराजा अशोक के समय में ऐसा नहीं था। राजा अपने अधिकारियों और सैनिकों को वेतन देता था। और आजकल भी सरकारी अधिकारियों को वेतन मिलता है।

पर जिस समय की हम इस पाठ में बात कर रहे हैं (लगभग सन् 100 से 1200 तक की है) उस समय ऐसा नहीं था। राजा अपने अधिकारियों व दरबारियों को वेतन न देकर उनसे कहता "तुम इन 12 गांवों के भोगपति बन जाओ", "तुम इन दो गांवों के भोगपति बनो," "तुम इस शहर का भोग करो।"

जब राजा उनसे ऐसा कहता तो वह अधिकारी या सेनापति (जो कईबार राजा के रिश्तेदार ही होते थे) उन गांवों पर अपना अधिकार जमाते थे। उस गांव से राजा को जो कर मिलता था, उसे भोगपति इकट्ठा करके खुद रखलेते थे। इस धन से वे अपने लिए महल बनवाते, अच्छी-अच्छी चीजें खरीदते, मंदिर बनवाते, मंदिरों, ब्राह्मणों या जैन व बौद्ध मुनियों को दान देते, युद्ध

में लड़ने के लिए अच्छे कीमती अरबी घोड़े खरीदते, शस्त्र खरीदते, सैनिक रखते।

वो दिन आज से काफी फर्क थे। आजकल यह निश्चित होता है कि सरकार लोगों से कौन से कर लेती है और कर में कितने पैसे लेती है। इस बात का कानून बनता है। सरकार जब जो चाहे लोगों से वसूल नहीं कर सकती। पर उन दिनों यह निश्चित नहीं था कि राजा लोगों से क्या कर ले सकता है। इसलिए जब कोई गांव किसी को भोग करने के लिए दिया जाता, तो भोगपति लोगों से कुछ भी वसूल कर सकता था। जो भी वो मांगता लोगों को देना पड़ता। भोगपति समय-समय पर लोगों से कई तरह की वसूली करते थे- उनके ढोर पर, घरों पर, अरघट्ट पर, कुओं पर, शादी ब्याह पर, मछली मारने पर, पेड़ काटने पर, यात्रा करने पर ऐसे किसी भी बहाने लोगों से कर ले लिया करते थे। इसके कुछ उदाहरण तुमने देखे- कि कीर्तिपाल और लाखण- -पाल ने कैसे गांव के अरघट्ट पर नए कर लगाए थे।

जब भी भोगपति गांव से गुजरता तो गांव वालों को उसकी खातिरदारी करनी पड़ती, उसे खिलाना- पिलाना पड़ता, उसका सामान ढोना पड़ता। जब वह अपने लिए महल या किला बनवाता तो उसपर गांव वालों को बिना कोई वेतन के बेगार करना पड़ता। कभी-कभी गांव में भोगपति की अपनी जमीन भी होती थी। इस जमीन को वह बटाई पर किसानों को देता था।

भोगपतियों में कुछ छोटे होते थे, कुछ उनसे बड़े और कुछ उनसे भी बड़े। जिसके पास जितने गांव व नगर भोग करने को हों, उस हिसाब से वह छोटा या बड़ा भोगपति होता था। छोटे-बड़े भोग- -पतियों की उपाधियां बन गई। कुछ भोगपति 'राणा' कहलाते थे कुछ 'रावत' कहलाते, कुछ 'ठाकुर' कहलाते। इसी तरह 'रावल' 'राणक' कई उपाधियाँ थीं। और सब मिलकर राजपुत्र कहलाने लगे। यही शब्द आगे-चलकर राजपूत हो गया। तुमने यह सब नाम जरूर सुने होंगे।

राणा, ठाकुर, रावत, रावल, राजपूत इन नामों के पीछे क्या इतिहास है - इसकी कुछ झलक तुम्हें यहाँ मिली। ये छोटे-बड़े भोगपति एक तरह से राजा के 'सामन्त' ही थे। जब कोई छोटा राजा अपने क्षेत्र के बड़े राजा का बड़प्पन स्वीकार करता था, उसके लिए भेंट भेजता था, उसके लिए लड़ने जाता था। तब वह उसका 'सामन्त' कहलाता था। कुछ इसी तरह भोगपति राजा का बड़प्पन मानते थे, उसके दरबार में पेश होते थे, उसे भेंट भेजते थे, उसके लिए लड़ने जाते थे। और जैसे छोटा राजा अपने राज्य में चाहे जो कर सकता था, भोगपति भी अपने भोग के गांव, नगरों में चाहे जो कर सकता था। वह भी राजा का सामन्त माना जाता था।

भोगपति का सामन्त होना और छोटे राजा का बड़े राजा का सामन्त होना - कई मायनों में एक सी बातें थी। लेकिन दोनों तरह के सामन्तों में तुम्हें कुछ फर्क भी नजर आता है, तो बताओ। इससमय राजा और सामंत एक नई बात कहने लगे थे। वे कहने लगे कि जमीन का मालिक तो राजा है। किसानों को उसपर खेती करनी चाहिए और राजा व सामंतो को कर देना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं करता तो राजा उससे जमीन छीनकर और किसी को दे सकता है। आजकल इस तरह की बातें तुम्हें नजरआती हैं क्या?

गाँव व नगर के लोगों की अपनी कोई समिति, कोई संस्था भी तो होती होगी? यह सवाल जब मन में उठा तो हमने अभिलेखों को ध्यान से पढ़ा। हमने देखा कि जब लाखणपाल ने भड़ियाडव गांव के हर अरघट्ट पर एक हारक औ मंदिर को देने का आदेश दिया था तब उसने गांव के पंचकुल के समक्ष यह आदेश दिया। इसतरह

कई अभिलेखों में 'पंचकुल' या 'महत्तरों' का जिक्र मिलता है। ऐसा मालूम पड़ता है कि 'पंचकुल' में गांव के प्रमुख परिवार शामिल थे। कहीं-कहीं इन्हें 'महत्तर' भी कहा जाता था। ये गांव के प्रमुख परिवार थे इसलिए राजा या सामंत अपने कामकाज में इनकी सलाह लेते थे। वे जो भी नए आदेश देते थे, पंचकुल या महत्तरों को पहले सूचित करते थे।

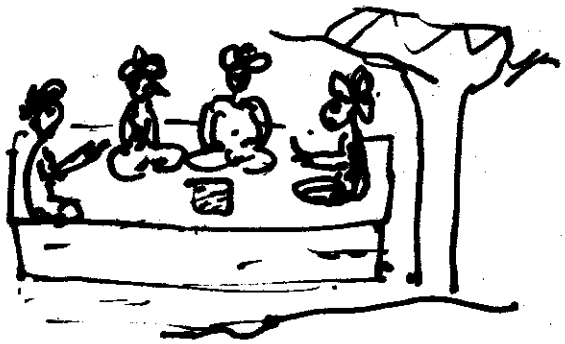

फिर भी दक्षिण भारत में गांवों की सभाओं को हमने जितने काम करते पाया, उत्तर भारत के गांवों में पंचकुल जैसी संस्थाओं का उतना महत्व नजर नहीं आता। कभी-कभी गांव के प्रमुख परिवारों से कोई गांव का मुखिया भी बन जाता। तब उसे ग्रामकूट या ग्रामिक कहा जाता था।

अभ्यास

(1) इस पाठ में तुमने कितनी तरह के गांवों के बारे में पढ़ा? ज्यादातर किस तरह के गांवों के बारे में जानकारी मिलती है?

(2) कौन सी बातें जंगल में बसे हुए 'पल्ली' की हैं और कौन सी 'ग्राम' की—

- हल बैल से खेती
- दूर-दूर बने घर
- कुदाल से खेती
- अरघट्ट
- शिकार करके भोजन जुटाना
- राजा को कर देना
- पहाड़ी खेत
- वर्ण व्यवस्था
- सटे-सटे घर
- सामंत
- जंगलों की चीजों को इकट्ठा कर बेचना
- मंदिर

(3) कोई 'भोगपति' कैसे बनता था? अक्सर कौन लोग भोगपति बनते थे?

(4) भोगपति के पास धन किन तरीकों से आता था?

(5) भोगपति अपने धन से क्या-क्या करता था?

(6) गांव के लोगों को भोगपति के लिए क्या-क्या करना पड़ता था?

(7) भोगपति राजा के लिए क्या करता था?

(8) छोटे और बड़े भोगपतियों की क्या-क्या उपाधियां थीं?

(9) राजपुत्र कौन लोग कहलाते थे?

(10) 'पंचकुल' व 'महत्तर' कौन थे- वे क्या करते थे?

भूगोल

स्कूल का मानचित्र 1

कक्षा 7 के लिए एक कमरा और बनना है

स्कूल का मानचित्र चाहिए !

जुलाई का महीना आया और स्कूल खुल गया, सब बच्चे स्कूल में इकट्ठा हुए। तब प्रधान अध्यापक ने बताया कि इस वर्ष कक्षा 7 में बच्चे बढ़ गए हैं और कक्षा 7 अ और 7 ब दो जगह पढ़ाई होगी। लेकिन स्कूल में तो कक्षा 7 के लिए एक ही कमरा है। प्रधान अध्यापक ने बताया कि हमें स्कूल में एक कमरा और बढ़ाना है, इंजीनियर ने स्कूल का मानचित्र मंगाया है। उन्होंने कहा कि कक्षा 6 में पढ़े बच्चों ने अपनी कक्षा का मानचित्र बनाया था, वे अब स्कूल का मानचित्र बना कर दें तभी जल्दी से कमरा बन सकता है।

रामू बोला कक्षा 6 की बातें तो कुछ हम भूल गए। तब फिर से उन्हें देखकर याद करलें तभी स्कूल का मानचित्र बना सकते हैं। नारायण बोला हमें कागज पेन्सिल के अलावा दो चीजें और चाहिए : (1) नापने के लिए टेप (2) दिशा देखने के लिए चुम्बकीय सुई। प्रधान अध्यापक ने यह चीजें मँगा दी। शायद तुम्हारे स्कूल में भी कमरा बने तो पहले से स्कूल का मानचित्र बना लो।

पहले कक्षा 6 में बनाए मानचित्र की ज़रूरी बातें याद कर लो जिससे मानचित्र बनाते समय ग़लती न हो जाए।

तुमने कक्षा 6 में जब अपनी कक्षा का मानचित्र बनाया था तब कुछ बातें याद कर ली थीं। उन्हें यहां फिर से लिखो :

(1) मानचित्र इस प्रकार बनाते हैं जैसे हम ---------- से धरती को देख रहे हैं।

(2) मानचित्र की सभी चीज़े ---------- में दिखाते हैं।

(3) मानचित्र में ऊपरी हाशिए की ओर ---------- दिशा, निचले हाशिए की ओर ---------- दिशा, दाहिने हाशिए पर ---------- दिशा और बाएं हाशिए की ओर ---------- दिशा बनाते हैं। धरती पर जो चीजें जिस दिशा में है, मानचित्र में उन्हीं दिशाओं में दिखाते हैं।

(4) जमीन पर दूरियां नापकर ---------- के अनुसार छोटा करके कागज पर बनाते हैं।

कक्षा का मानचित्र बनाने के लिए तुमने एक के बाद एक जिस क्रम में सारे काम किए थे, उसी क्रम में स्कूल का मानचित्र बनाने के लिए भी काम करना होगा।

तो आओ अब स्कूल का मानचित्र बनाएं

सूर्य के उगने और अस्त होने की दिशा तो तुम अपने स्कूल में जानते हो। उसकी सहायता से उत्तर तथा दक्षिण की दिशा भी पता कर लो। चुम्बकीय सुई से भी उत्तर-दक्षिण दिशा ज्ञात कर सकते हो।

अब कक्षा के बच्चे चार-चार की टोली में बँट जाएं। हर टोली के दो बच्चे स्कूल के स्केच पर दूरियां लिखेंगे और दो बच्चे दूरियां नापेंगे। इस तरह सब बच्चे एक दूसरे के काम को देखकर यह भी परीक्षा कर सकेंगे कि किसी की कहीं ग़लती तो नहीं हुई?

स्कूल के चारों तरफ घूमकर उसका आकार, कक्षाओं, बरामदे, सड़क से दूरी आदि देखकर कागज़ पर मोटे तौर पर एक स्केच बनाओ।

चित्र 1

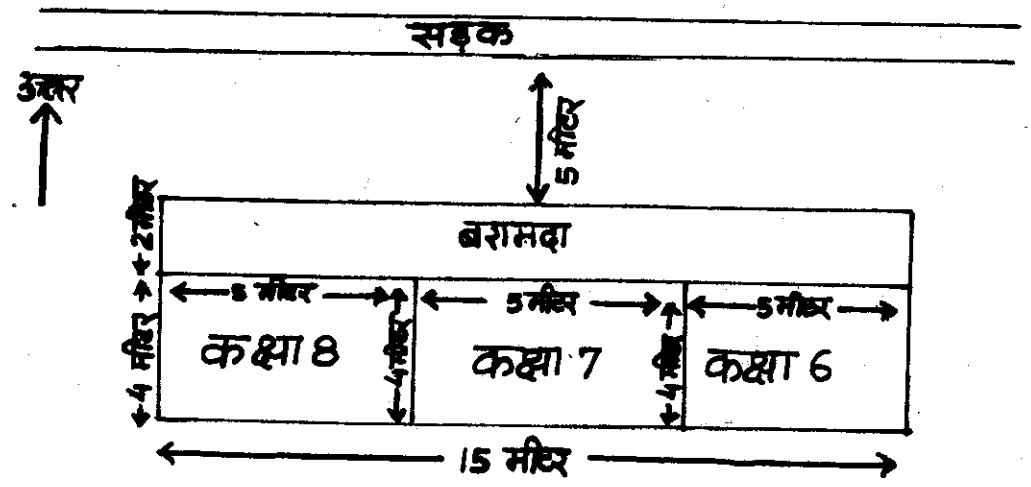

रामू और नारायण की कक्षा के बच्चों ने अपने स्कूल का स्केच ऊपर जैसा बनाया। उन्होंने सबसे पहले स्कूल से सड़क की दूरी नापकर लिखी यह 5 मीटर आई। अब बाहरी दीवारों की दूरी नाप ली, उनके स्केच पर यह दूरियाँ लिखी हैं।

(1) पश्चिमी दीवार की दूरी कितनी आई ?
(2) दक्षिणी दीवार की दूरी कितनी आई ?

" अरे ! हम सब स्केच में दिशाएं दिखाना तो भूल ही गए ।" रामू बोला ।
"पर अभी देर नहीं हुई, स्केच पर तीर से दिशाएं दिखा देते हैं ।"
तुम भी अपने स्केच पर अपने स्कूल की दीवारों की लंबाई नापकर लिखदो। तुम्हारे स्कूल से सड़क कितनी दूर है व किस दिशा में है - यह भी दिखाओ ।
(1) अब रामू और नारायण की तरह तुम भी कक्षा 8 और बरामदे की कितनी लंबाई है, अलग-अलग कर लो । कक्षा 8 की चौड़ाई भी नाप लो तो बात बन जाए ।
(2) अब अन्य कक्षाओं 6 और 7 की लंबाई चौड़ाई नापकर स्केच में भर दो ।

<u>लो, स्कूल का मापन तो हो गया अब मानचित्र बनाने के लिए दूसरा कागज लो ।</u>

चीरू बोला " कक्षा 6 में हमने जो पैमाना लिया था (1 से॰मी॰ = ½ मीटर) यही ठीक रहेगा ।" काशी बोला " तब तो स्कूल की 15 मीटर चौड़ाई दिखाने के लिए हमें 30 से॰मी॰ चौड़े कागज़ की ज़रूरत पड़ेगी ।" उनके गुरूजी जी ने कहा " तुम्हें बताया गया था कि जितनी जगह का मान-चित्र बनाना है और कागज के आकार के अनुसार हम पैमाना बदल सकते हैं ।" बताओ वे क्या पैमाना लें कि 20 से॰मी॰ × 22 से॰मी॰ के कागज़ पर उनके स्कूल का मानचित्र बन जाए । फिर मानचित्र के साथ चिन्हों की सूची और पैमाना भी होगा ।

अब देखो, उनके स्कूल की दीवार की सबसे लंबी दूरी है 15मीटर वही कागज पर आ जाए तो ठीक है । तो यदि 1 से॰मी॰ = 1 मीटर पैमाना लें तो यह दूरी 15 से॰मी॰ से दिखाई जा सकती है । यही पैमाना तय हुआ ।

नोट: पैमाना लेते समय हम यह भी ध्यान रखते हैं कि इतना छोटा भी न हो कि मानचित्र की सभी चीजें दिखाई न जा सकें ।

चित्र 2 पैमाना

1 से॰मी॰ = 1 मीटर

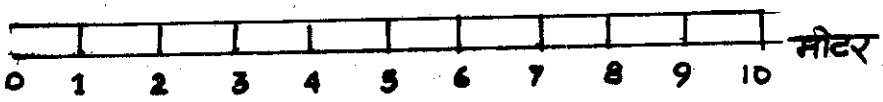

इस पैमाने की सहायता से तुम भी पहले अपने स्कूल की बाहरी दीवारों की लंबाई चौड़ाई से॰मी॰ में निकालकर स्कूल का आकार कागज पर बना लो। अब बरामदे की चौड़ाई पैमाने से निकालकर पहले उसे बना दो। पैमाने के अनुसार कक्षा 6, 7 तथा आठ की लंबाई चौड़ाई से॰मी॰ में निकालकर मानचित्र में उन्हें काट दो।

चित्र 3

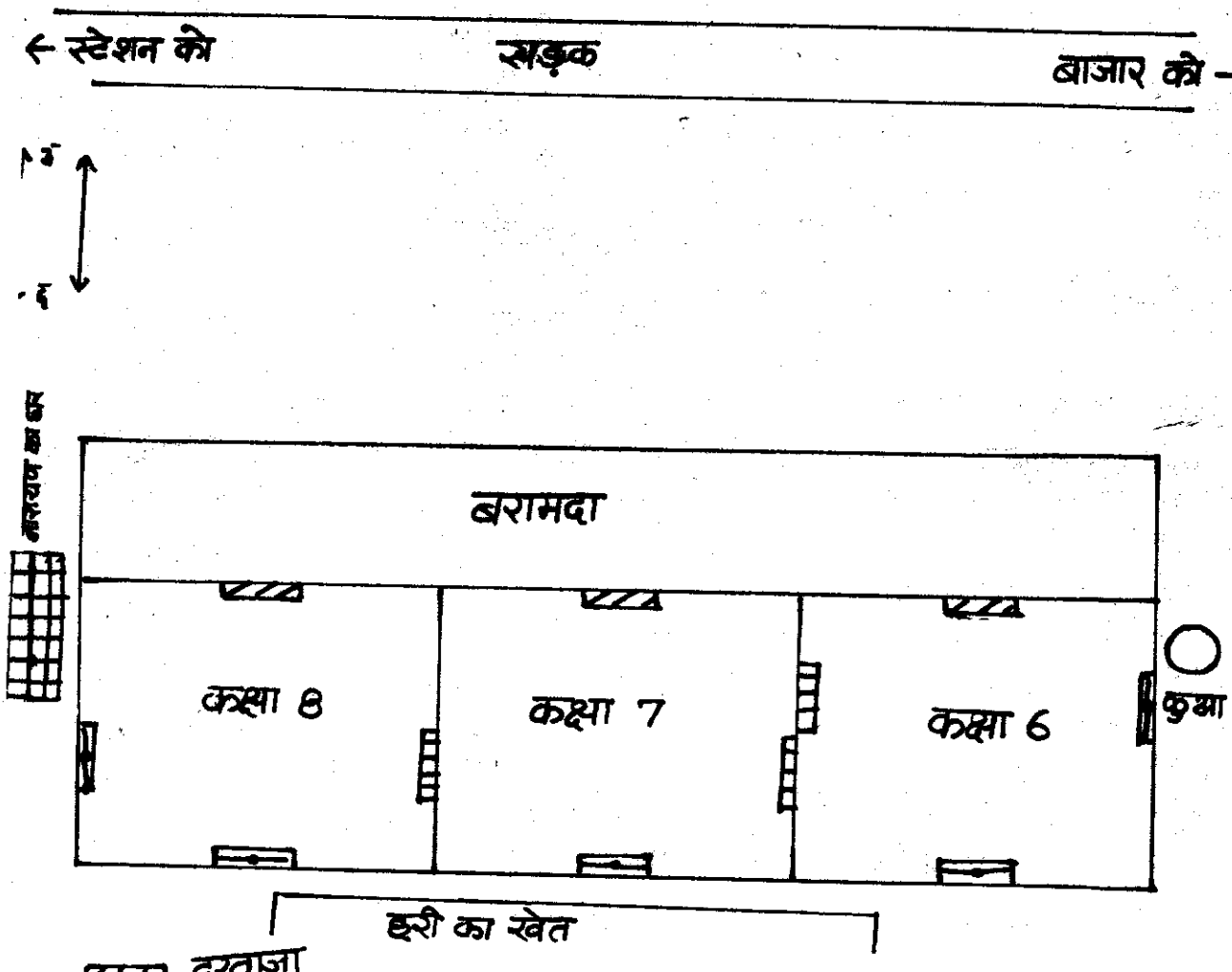

स्कूल का आकार तो बन गया अब खिड़की दरवाज़े के चिन्ह तय करो और उन्हें उसी जगह बनाओ जहां वे कमरों में हैं। चिन्हों की सूची देना ज़रूरी है जिससे और लोग भी तुम्हारा मानचित्र पढ़ सकें। अभी एक चीज़ रह गई, स्कूल में दिशाएं कैसे पता चलेंगी! तो दिशाएं भी बनाओ।

स्कूल की स्थिति : तुम्हारे मानचित्र से यह पता नहीं चलता कि तुम्हारे गाँव या नगर में स्कूल कहाँ पर है। यदि तुम आसपास की चीज़े देखकर उन्हें भी मानचित्र में लिख दो तो स्कूल पहुँचने में सरलता होगी।

पिछले पृष्ठ पर जिस स्कूल का मानचित्र दिया गया है उसके —— पूर्व में कुआ है, पश्चिम में नारायण का घर, दक्षिण में हरि का खेत। उत्तर की सड़क एक ओर बाज़ार जाती है और दूसरी ओर स्टेशन। इनको मानचित्र पर दिखा दो।

अब यह मानचित्र उस स्कूल के प्रधान अध्यापक इंजीनियर के पास भेजेंगे और तब वे तय करेंगे कि कक्षा 7 का दूसरा कमरा कहाँ पर बने।

अपने अध्यापक की सहायता से तुम अपने स्कूल का भी मानचित्र पूरा करो।

ऊँचा पहाड़ – नीचा मैदान 2

तुमने कभी लाल पीले रंगो से तस्वीरें बनाई होगी। उसमें पहाड़ भी दिखाए थे, नदी भी बहती हुई दिखाई थी और पास में मैदान जहां किसान खेत जोत रहे हैं। नीचे ऐसी ही एक तस्वीर दी गई है, जो तुम्हारे जैसे एक बच्ची ने बनाई है। उस बच्चे का नाम है जोधा। जोधा का गाँव नीमपुर, पहाड़ के ठीक नीचे है। नीमपुर गाँव के पास एक देवी का मंदिर है। बताओ गांव के लोग मंदिर जाने के लिए ऊपर चढ़ेंगे या नीचे उतरेंगे?

चित्र 1

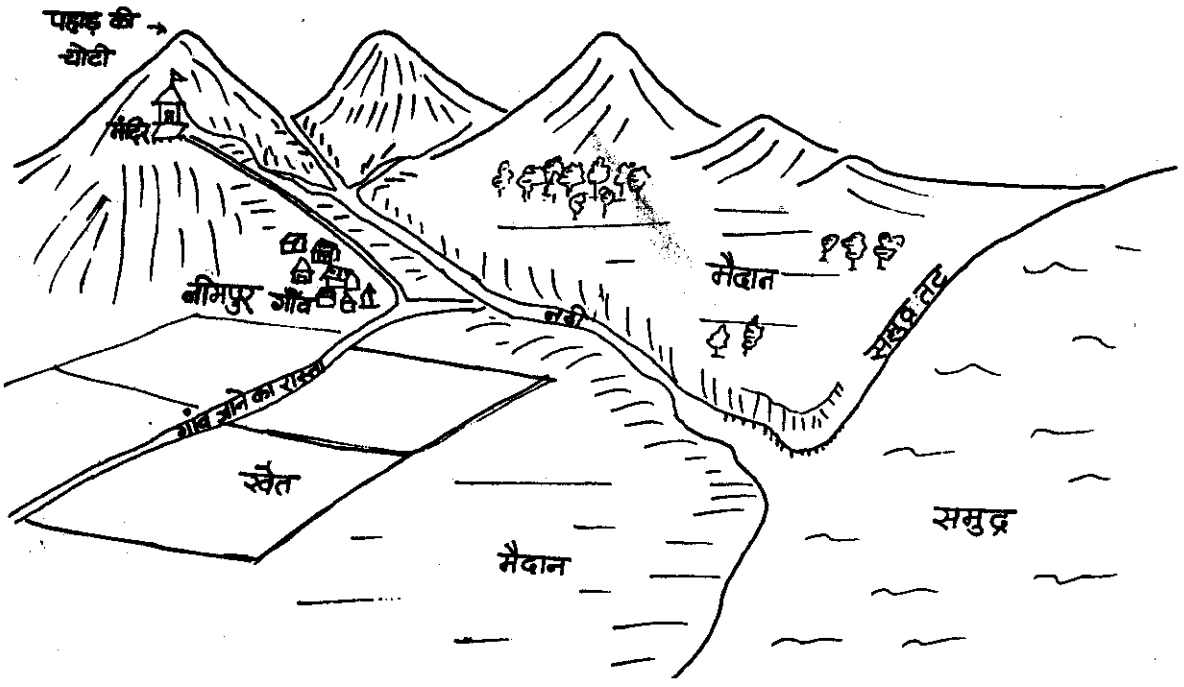

एक दिन जोधा और उसके साथी मंदिर जाने के लिए निकले। उनके गुरूजी ने बताया कि मंदिर पहुँचने के लिए तुम्हें 300 मीटर चढ़ना पड़ेगा और यदि तुम 300 मीटर और चढ़ जाओ तो पहाड़ी की चोटी पर पहुँच जाओगे।

जोधा और उसके साथी धीरे-धीरे ऊपर चढ़ते रहे और मंदिर पहुँच गए। वहाँ उनको बहुत मजा आया, चारों ओर की चीज़े दिखने लगी– नदी, खेत, गाँव का रास्ता, जंगल। तब जोधा के साथी कहने लगे चलो हम लोग पहाड़ के ऊपर तक चढ़ें, चोटी पर से खूब अच्छा दिखेगा।

वे लोग थक तो गए थे लेकिन पहाड़ की चोटी तक पहुँचने के लिए वे लोग फिर चढ़ने लगे। और अन्त में वे चोटी पर पहुँच ही गए। बताओ, वे अपने गांव से कितने मीटर ऊपर चढ़े?

चोटी पर से उन्हें और दूर तक का दृश्य दिखाई देने लगा। अरे! यह नीला-नीला सागर दिखने लगा, समतल, ऊँचा-नीचा। कुछ लहरें अवश्य दिख रही थी। सागर चारों ओर की भूमि से नीचा भी है। और वह देखो, नदी का पानी जाकर समुद्र में मिल रहा है। जोधा का एक साथी बोला - समुद्र में तो बहुत पानी भरा है, कभी वह हमारे गाँव में न भर जाए। वे लोग बहुत डर गए और सोचने लगे, हमारे गुरुजी होते तो बताते।

दूसरे दिन जोधा और उसके साथियों ने गुरूजी से पूछा कि हमारे गाँव से समुद्र इतने नजदीक है, क्या उसका पानी कभी हमारे गाँव तक नहीं चढ़ आएगा? गुरूजी ने बताया - नहीं! समुद्र का पानी हमारे गाँव तक कभी नहीं चढ़ेगा, क्योंकि समुद्र से यह गाँव 300 मीटर ऊँचाई पर है। जब आँधी तूफ़ान आता है तो लहरों के साथ समुद्र का पानी निचले हिस्सों में अवश्य भर जाता है, लेकिन हमारा गाँव तो समुद्र की सतह से काफी ऊँचा है।

तो क्या गुरूजी ने मंदिर और पहाड़ की चोटी की जो ऊँचाई बताई वह भी समुद्र की सतह से...? गुरूजी ने बताया कि तुम बाल्टी में पानी भरो या टंकी में, या तालाब को देखो, पानी की ऊपरी सतह तुम्हें ऊँची-नीची नहीं दिखेगी, सब जगह एक समान। इसी तरह समुद्र की सतह भी सब जगह (पूरी दुनिया में) एक समान रहती है। समुद्र तट से स्थल ऊँचा होता जाता है। इसीलिए हम ज़मीन पर सारी ऊँचाइयां समुद्र की सतह से नापते हैं।

चित्र 2

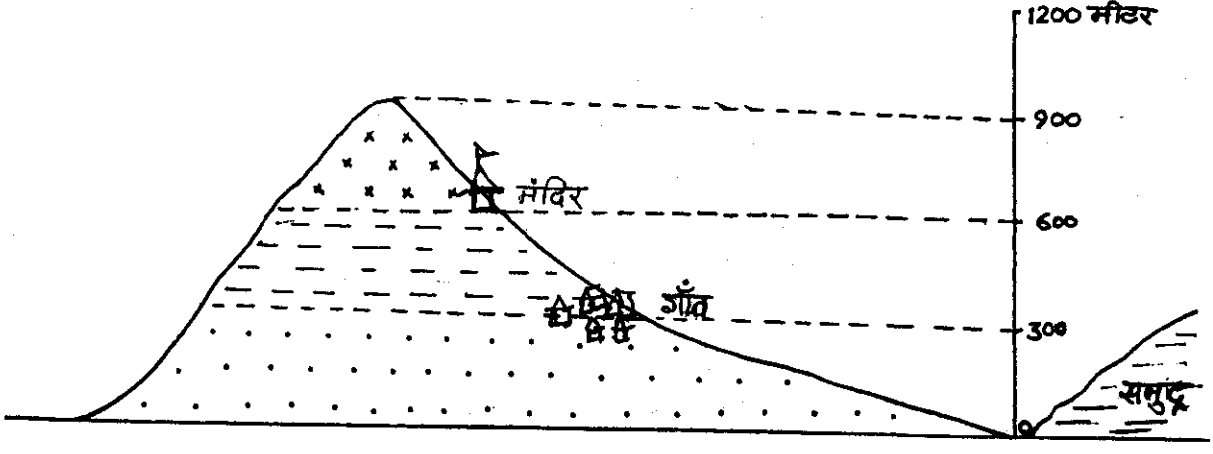

चित्र 2 को देखो और बताओ:

समुद्र की सतह से गाँव .....मीटर ऊँचा है।
समुद्र की सतह से मंदिर .....मीटर ऊँचा है।
समुद्र की सतह से पहाड़ की चोटी .....मीटर ऊँची है।

अब बताओ हमने समुद्र की सतह की ऊँचाई क्या जानी है?

जोधा का गाँव नीमपुर तो समुद्र के नज़दीक है तो उसने झट से समुद्र की सतह से गाँव, मंदिर और पहाड़ की चोटी की ऊँचाई बता दी। हमारे चारों ओर के गाँव और नगर तो समुद्र से सैकड़ों किलोमीटर दूर हैं। हम उनकी ऊंचाई कैसे पता करें?

अब स्थल के सभी भागों की ऊँचाई नाप ली गई है और मानचित्र में दर्शाई जाती है। तुम यदि मानचित्र में ऊँचाई पढ़ना सीख लो तो तुम्हें समुद्र की सतह से किसी भी जगह की ऊँचाई जानने में कठिनाई नहीं होगी।

ऊँचाई का मानचित्र:

तुम चित्र 3 को ध्यान से देखो। समुद्र की सतह से 300 मीटर की ऊँचाई तक की जितनी भूमि है उसे ::::: चिन्ह से दिखाया है। गाँव और मंदिर के बीच का हिस्सा 300-600 मीटर की ऊँचाई का है, उसे - - - - चिन्ह से दिखाया है तथा मंदिर से पहाड़ की चोटी तक 600-900 मीटर की ऊँचाई का हिस्सा × × × चिन्ह से दिखाया है।

चित्र-3

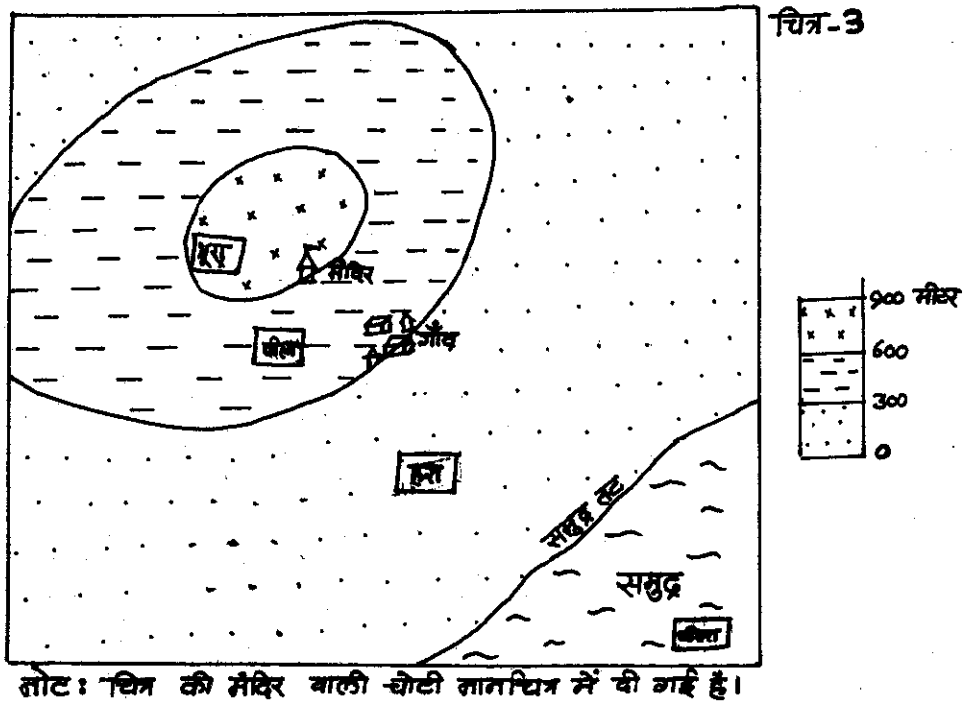

नोट: चित्र की मंदिर वाली चोटी मानचित्र में दी गई है।

तुम छठी कक्षा में जान चुके हो कि मानचित्र में हम सभी चीज़ें ऐसे दिखाते हैं जैसे धरती से उठकर ऊपर से नीचे की ओर देख रहे हों। अब यदि जोधा के गाँव तथा आसपास के हिस्से को ऊपर से देखें तो पिछले पृष्ठ पर बने चित्र जैसा दिखेगा? यह जोधा के गाँव का ऊँचाई का मानचित्र बन गया। अब तुम अलग-अलग ऊँचाई के हिस्सों को अलग-अलग रंगों में रंग लो तो तुम्हें ऊँचाई के ये हिस्से और साफ दिखने लगेंगे। रंगो के सुझाव मानचित्र पर ☐ चिन्ह के अंदर दिए गए हैं।

मानचित्र में रंग:

कक्षा 4 तथा 5 की पुस्तकों में मध्यप्रदेश तथा भारत का एक रंगीन प्राकृतिक मानचित्र दिया गया है जिसमें समुद्र की सतह से ऊँचाइयाँ दिखाई गई हैं। बताओ इन मानचित्रों में समुद्र की सतह की क्या ऊँचाई मानी गई? समुद्र किस रंग से रंगा है?

इन मानचित्रों की कुंजी को ध्यान से देखो –

मध्यप्रदेश के प्राकृतिक मानचित्र में कौन सा रंग कितनी ऊँचाई बताता है? अब मानचित्र को ध्यान से पढ़ो कि वह ऊँचाई कहाँ पर है?

बताओ किन नदियों के किनारे ..... मीटर तक ऊँचाई के प्रदेश हैं, वे गहरे हरे रंग से दिखाए गए हैं।

पीले रंग के प्रदेश ..... मीटर तक की ऊँचाई के हिस्से हैं।

मध्यप्रदेश के सबसे ऊँचें हिस्से ..... मीटर ऊँचे हैं। जैसे, विन्ध्याचल तथा सतपुड़ा पर्वत आदि, वे भूरे रंग से दिखाए गए हैं।

भारत के प्राकृतिक मानचित्र में कौन से नगर 800 मीटर से ऊँचे तथा 1200 मीटर तक ऊँची जगहों पर बसे हैं।

भारत में सबसे ऊँचा प्रदेश कौन सा है? वह किस रंग से दिखाया गया है।

वर्षा आई! नदी बही! 3

अप्रैल, मई, जून में जब खूब गर्मी पड़ती है तो उसके बाद बादल आने लगते हैं। फिर कई महीने तक उनसे वर्षा होती रहती है। तुम क्या सोचते हो यह बादल कहां से आते हैं? और फिर वर्षा कैसे होने लगती है।

तुमने कक्षा चार में प्रयोग किए थे और जाना था कि जल भाप में, फिर जल में कैसे बदलता है। तुमने यह भी जाना था कि गीला कपड़ा धूप में डालने पर क्यों सूख जाता है? पानी गर्म करने रखते हैं तो उससे जो भाप बनती है वह कहां चली जाती है? इन सब बातों को देख-कर हम समझ पाते हैं कि वर्षा कैसे होती है। अब इस बारे में आगे सोचो।

कहीं आग जलती हुई ध्यान से देखो और बताओ कि उससे निकला धुआँ ऊपर क्यों उठता है? गर्म पानी से निकलती भाप ऊपर क्यों उठती है?

भाप भरी हवा: पृथ्वी पर जल की जितनी सतहें हैं- नदी, तालाब आदि। सभी पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो उनका पानी गर्म होकर भाप बनता है। भाप हल्की होने के कारण ऊपर उठती है और हवा में मिलती रहती है। चित्र में देखकर सूची बनाओ कि भाप कहाँ-कहाँ से बन रही है?

चित्र-1 वाष्पीकरण

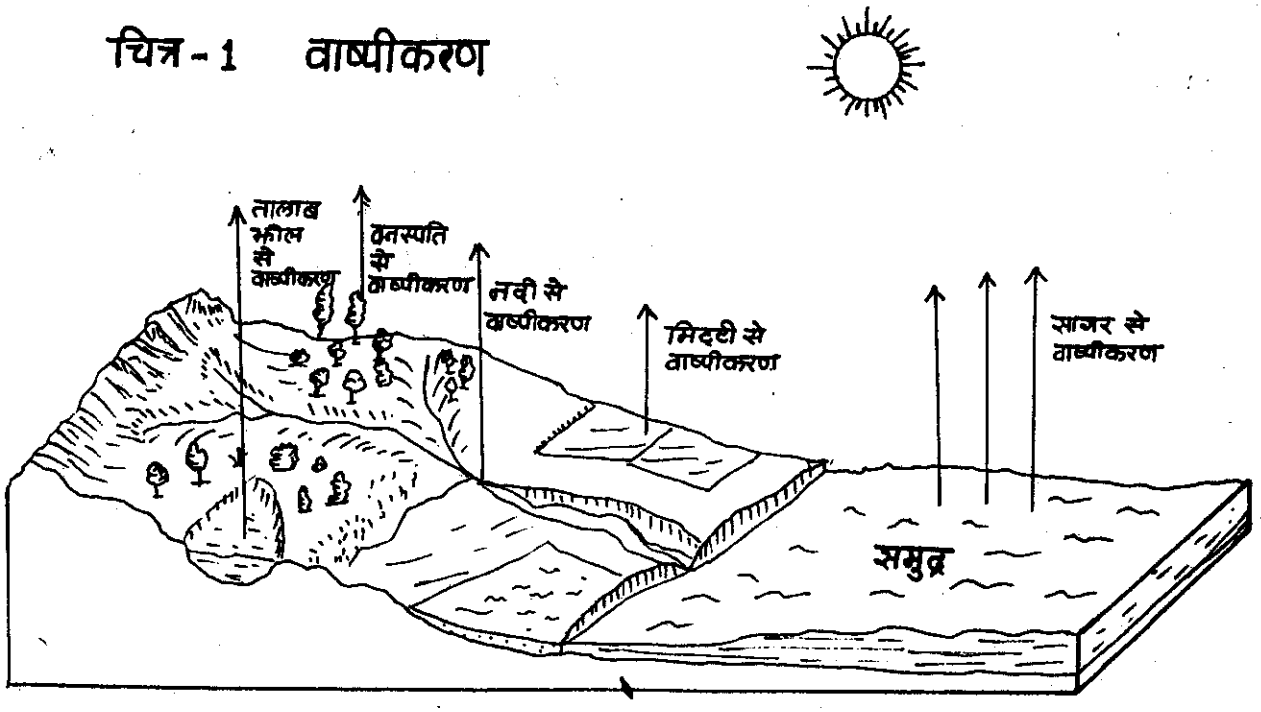

जब खूब गर्मी पड़ती है तब स्थल पर चारों ओर सूखा-सूखा हो जाता है। पौधे, तालाब यहाँ तक कि छोटी नदियाँ भी सूख जाती हैं। तब स्थल पर भाप बहुत कम बनती है। लेकिन तेज धूप पड़ने पर सागरों से खूब भाप बनती है। और गर्म हवा के साथ ऊपर उठती है। चित्र 2 में देखो।

चित्र-2 बादल बनना

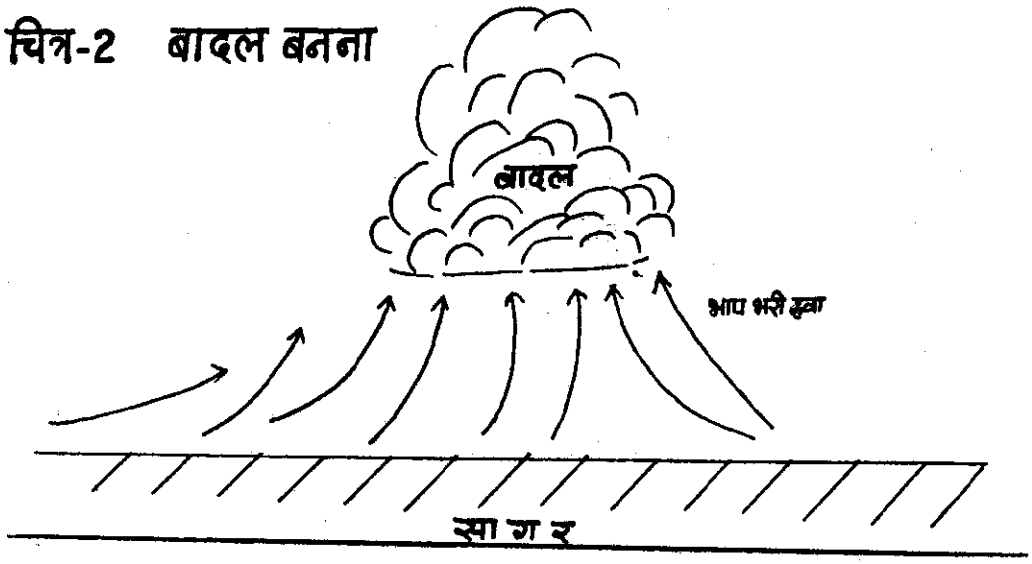

तुम जानते हो कि सागर हज़ारों किलोमीटर लम्बे-चौड़े हैं। तो उन पर भाप बनने की क्रिया भी बहुत बड़े पैमाने पर होती है।

बताओ :

दिन में अधिक भाप बनेगी या रात में ?
कौन से मौसम में सबसे अधिक भाप बनेगी? जाड़े में या गर्मी में ?
वर्षा होने के लिए पहली आवश्यकता क्या हुई ?
क्या ठंडी और सूखी हवा से वर्षा हो सकती है ?

<u>बादल बनना और वर्षा होना :</u> तुमने प्रयोग करके यह भी जाना था कि यदि बर्तन से उठती हुई भाप पर हम ठन्डा ढक्कन रखें तो उस पर पानी की छोटी-छोटी बूँदे बन जाती हैं या भाप फिर से पानी बन जाती है।

इसी प्रकार जब सागरों से उठती हुई भाप गर्म हवा के साथ ऊपर आसमान में पहुँचती हैं तो वहां उसे ठंड मिलती है। क्योंकि जैसे-जैसे

पृथ्वी की सतह से ऊपर जाते हैं ठंड बढ़ती जाती है। ठंड पाकर भाप नन्हीं-नन्हीं बूँदों में बदलने लगती है, जो हमें बादलों के रूप में दिखाई देती हैं। फिर यही बादल जब और ऊपर उठते हैं, ठंड और बढ़ती है तो और बूँदें बनती हैं। यह छोटी बूँदें जुड़कर बड़ी बूँदें बनती हैं। तब ये बड़ी बूँदें हवा में नहीं रुक पातीं और वर्षा के रूप में गिरने लगती हैं। बताओ, वर्षा होने के लिए बादलों का ऊपर उठना क्यों जरूरी है?

ये तो रही कहानी सागर से उठने वाली भाप की। मगर यह बादल स्थल में हमारे यहां कैसे पहुँचते हैं? सागर में ही क्यों नहीं गिर जाते हैं।

बादल आए :-तुम्हारे मन में यह बात आई होगी कि बादल उड़े थे सागर के ऊपर, तब सैकड़ों मील का सफ़र करके हम तक वर्षा करने कैसे पहुँचे।

जब वर्षा का मौसम आता है तो तुम्हारे यहां किस दिशा से हवाएं चलती हैं? इन्हीं हवाओं के साथ बादल आते हैं। यह हवाएं केवल तुम्हारे यहाँ ही नहीं चलती - ये बहुत दूर अरब सागर से आती हैं। इन्हें दक्षिणी पश्चिमी मानसून कहते हैं। मानचित्र में इनके आने की दिशा तीर से दिखाई गई है। इन्हीं हवाओं के साथ केरल, बम्बई, नागपुर, भोपाल जबलपुर आदि के क्षेत्र तक बादल चले आते हैं और वर्षा करते है।

इन हवाओं से पूरे भारत में बादल नहीं पहुँचते। चित्र में देखो भारत में और किस दिशा से हवा चल रही है? और किस सागर से? बंगाल की खाड़ी से उठने वाले बादलों को वह कहाँ- कहाँ ले जाती है। कलकत्ता और लखनऊ के लोगों के लिए किस दिशा में हवा चले तब पानी बरसेगा? यह मानसून की दूसरी शाखा है।

अब तुम समझ गए होगे कि पश्चिमी मध्यप्रदेश में दक्षिण - पश्चिम से आने वाली हवाएं बादल और वर्षा लाती हैं। जबकि गंगा की घाटी में पूर्व से चलने वाली हवाओं के साथ बादल आते हैं और वर्षा करते हैं।

अधिक और कम वर्षा :- तुमने कभी सोचा कि क्या सभी जगह वर्षा एक समान होती है? समुद्र के पास बम्बई और कलकत्ता के लोग बताते हैं कि वहां घनघोर वर्षा होती है, जबकि दिल्ली में उतनी वर्षा नहीं होती। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से उठने वाले बादल पहले इन्हीं तटों पर पहुँचते हैं। ये खूब भाप भरे होते हैं और इनसे घनघोर वर्षा होती है। बादलों को लेकर जब हवाएं भीतरी भागों में पहुँचती हैं उनसे कम वर्षा होती है। राजस्थान पहुँचते-पहुँचते इन हवाओं में बहुत कम भाप बच रहती है। तो ये प्रदेश लगभग सूखे रह जाते हैं।

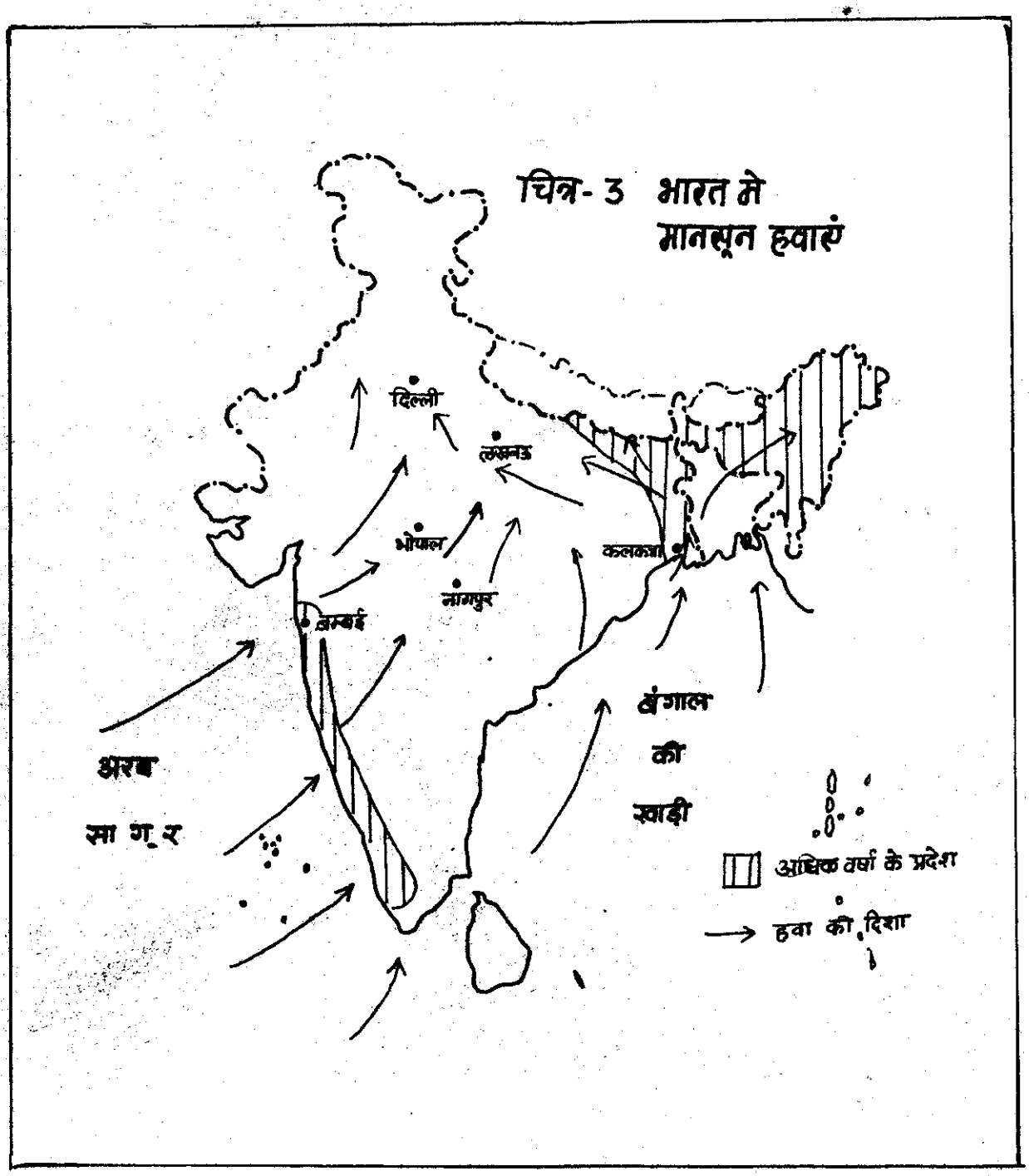

बंगाल की खाड़ी से उठने वाले बादल जब हिमालय तक पहुँचते हैं तो पहाड़ों के सहारे ऊपर उठते हैं। ऊपर उठकर यह हवा ठंडी होती है और खूब वर्षा करती है।

चित्र-4
पर्वतीय वर्षा

अब बताओ भारत के किन भागों में अधिक वर्षा होती है? नीचे दिए गए स्थानों में से चुनो:

1. बम्बई और उसके दक्षिण के तटीय मैदान.
2. मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश में.
3. कलकत्ता और निकट के भाग.
4. पूर्वी हिमालय पर्वत पर.
5. राजस्थान और पंजाब.

धरती पर बरसा पानी : धरती पर पानी गिरा फिर उसका क्या हुआ? कुछ तो धरती में सोख गया, कुछ सतह पर बहने लगा और कुछ की फिर भाप बनी और हवा में मिल गई। धरती में सोखा पानी ही कुओं में निकलता है, इसके बारे में तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे।

नदियाँ : तुमने देखा होगा कि वर्षा होने पर पानी सतह पर बहने लगता है। ढालू जमीन पर पानी कई धाराओं में बहता है। वर्षा के बाद यदि तुम किसी पहाड़ी ढलान पर जाओ तो इसी तरह कल-कल करती छोटी-छोटी धाराएं बहती दिखेंगी। थोड़ी देर बहने के बाद ये सूख जाती हैं। तब तुम देखोगे कि पानी ने बहने के लिए एक मार्ग बना लिया । दुबारा जब पानी बरसा फिर उसी मार्ग से बहने लगा। इस तरह पानी ने धरती को खोदकर बहने का रास्ता बना लिया। यह नदी की घाटी बन गई। चित्र 5 को देखो।

चित्र - 5
नदियों का बनना

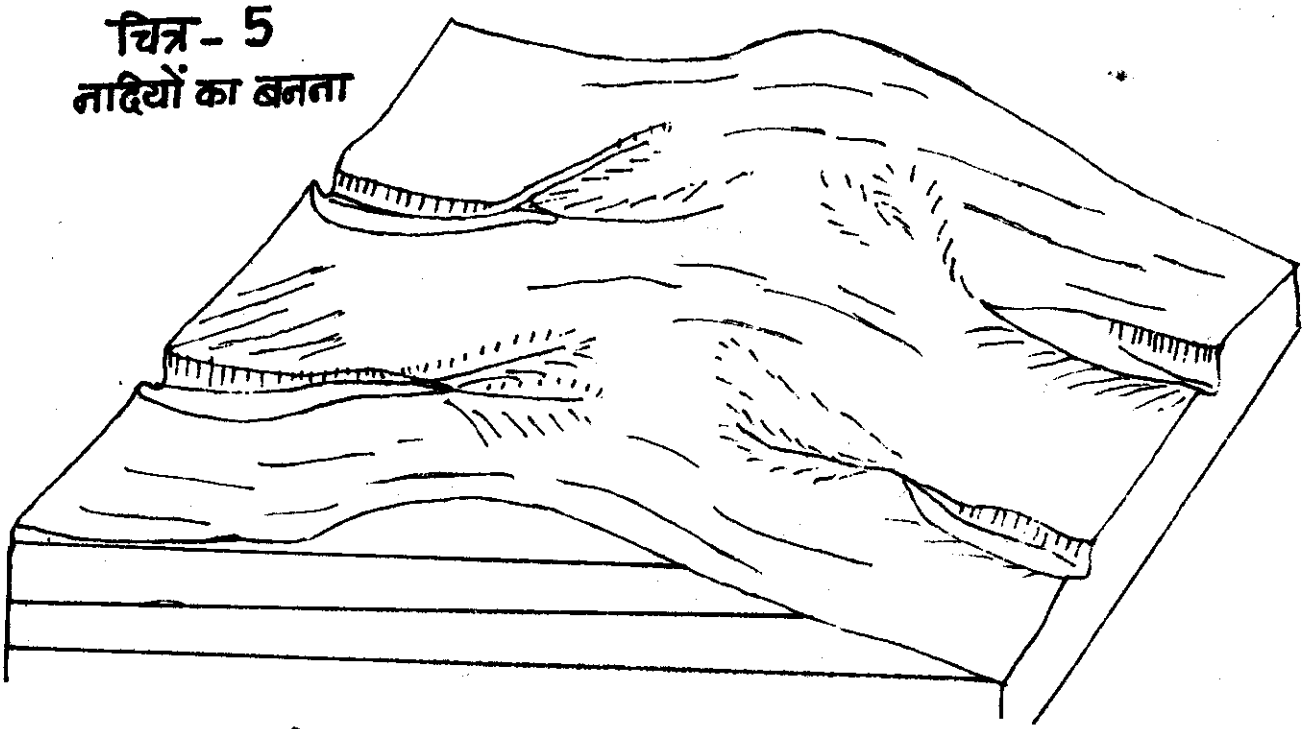

आगे बढ़ने पर और छोटी-छोटी नदियां उसमें आकर मिल गई। नदी में पानी भी बढ़ गया और उसकी घाटी भी चौड़ी और बड़ी हो गई।

तुम भोपाल के दक्षिण में विंध्याचल पर्वत पर छोटी-छोटी धाराएं मिलकर बेतवा नदी को बड़ी होते देख सकते हो। यदि शहडोल जिले में अमरकंटक जाओ तो नर्मदा नदी के उद्गम को देख सकते हो। यहां नर्मदा संकरी-सी बहती है। आगे चलकर इसमें जब छोटे-बड़े नदी नाले मिलते जाते हैं, तब यह धीरे-धीरे बड़ी नदी बन जाती है। उसकी घाटी भी खूब चौड़ी और गहरी बन जाती है। जबलपुर या और नीचे होशंगाबाद में देखो नर्मदा नदी खूब चौड़ी और बड़ी नदी बन गई है। क्योंकि उसमें कई नदियों में बहता बरसात का पानी आकर मिल गया। मानचित्र देखकर बताओ नर्मदा में किन नदियों का पानी मिला? यही नर्मदा की सहायक नदियाँ है।

प्रदेश का ढाल : मानचित्र में तुम यह भी देखोगे कि नर्मदा नदी शहडोल जिले से मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद और खंडवा जिलों में बहती हुई गुजरात पहुँच गई। बताओ यह किस दिशा की ओर बह रही है।

तुमने कभी सोचा कि नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर क्यों बह रही है ? जबकि बेतवा नदी सीहोर जिले से निकलकर भोपाल विदिशा जिलों में बहती हुई ------------ के निकट यमुना नदी में मिल गई।

यह क्या नर्मदा नदी के बहने की दिशा में बह रही है? बेतवा किस नदी की सहायक नदी बनी?

तुमने वर्षा के बाद पानी को बहते हुए देखा होगा। पानी हमेशा उसी दिशा में बहता है जिधर भूमि का ढाल होता है। इसका मतलब यह हुआ कि नर्मदा नदी की घाटी का ढाल पूर्व से पश्चिम की ओर है। जबकि बेतवा नदी जिस प्रदेश का पानी बहाकर ले जा रही है उस प्रदेश का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है।

तब तो बात बड़ी आसान हो गई। जिधर नदी बहती दिखती है, उधर ही उस प्रदेश का ढाल हुआ। तुम नदी के किनारे खड़े होकर देखो तो तुम्हें नदी के बहने की दिशा भी पता चलेगी और उस प्रदेश का ढाल भी मालूम हो जाएगा।

नर्मदा नदी बहते-बहते गुजरात पहुँच गई थी। मानचित्र में देखो वह अन्त में अरब सागर में जाकर मिल गई। जहां नदी सागर में मिली वह नदी का मुहाना है।

देखो जलचक्र पूरा हो गया। अरब सागर से भाप भरी हवाएं उठीं। उनसे बादल बने। हवाओं के साथ वे बादल अपने प्रदेश तक उड़ आए। ऊपर उठकर उनसे वर्षा हुई। वर्षा का जल छोटी-छोटी धाराओं में बहने लगा। यह धाराएं मिलकर नर्मदा नदी में पानी लाने लगीं। नदी खूब चौड़ी और बड़ी हो गई। उसका बहाव भूमि के ढाल की ओर था। फिर वह सारा जल लेजाकर फिर अरब सागर में उड़ेल आई।

चित्र 7 में देखो जल चक्र कैसे पूरा हुआ।

चित्र-7 जलचक्र

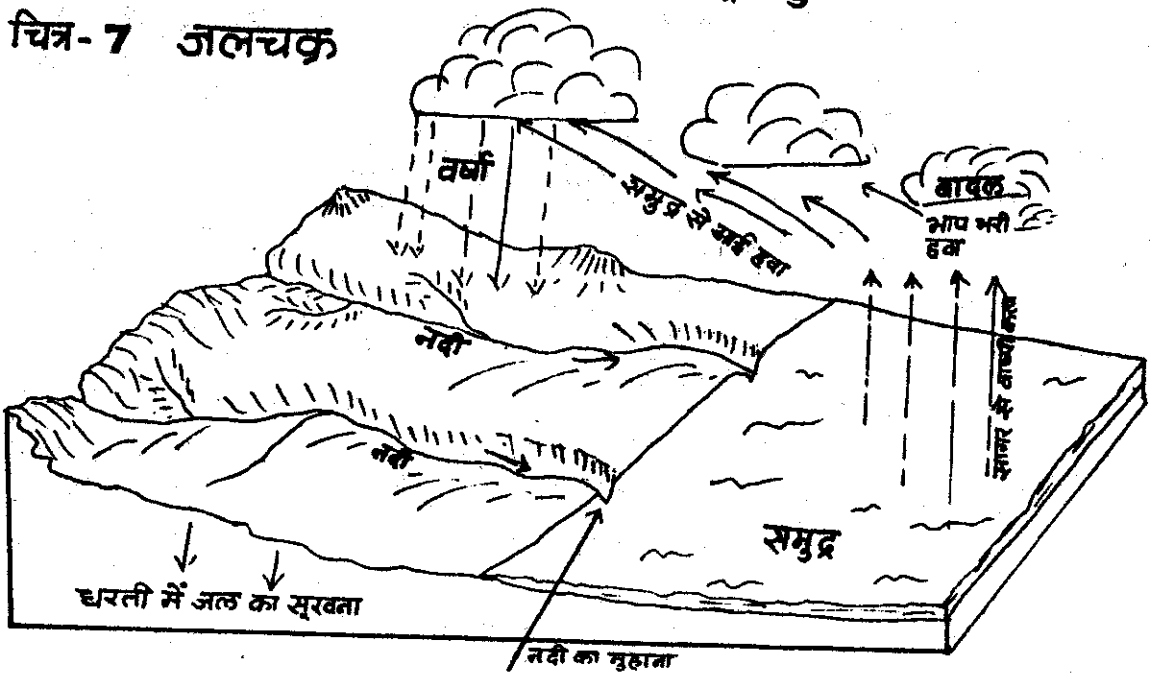

सूखा: पानी नहीं बरसा तो हम कहते हैं वहाँ सूखा पड़ा है। ऐसा होने पर निम्नलिखित में से क्या सच है:-

1. पीने का पानी / कम ज्यादा मिलेगा।
2. चारा कम मिलेगा / ज्यादा मिलेगा।
3. फ़सल हरी रहेगी / सूख जाएगी।
4. जंगल सूख जाएंगे / हरे रहेंगे।
5. नदियों में पानी कम / ज्यादा रहेगा।
6. कुओं में पानी कम / ज्यादा रहेगा।

बाढ़: वर्षा ऋतु में तुमने देखा या अखबार में पढ़ा होगा कि पानी इतना बरसा कि नर्मदा या बेतवा या गंगा में बाढ़ या पूर आ गई।

चित्र-8
नदी का बाढ़ का मैदान

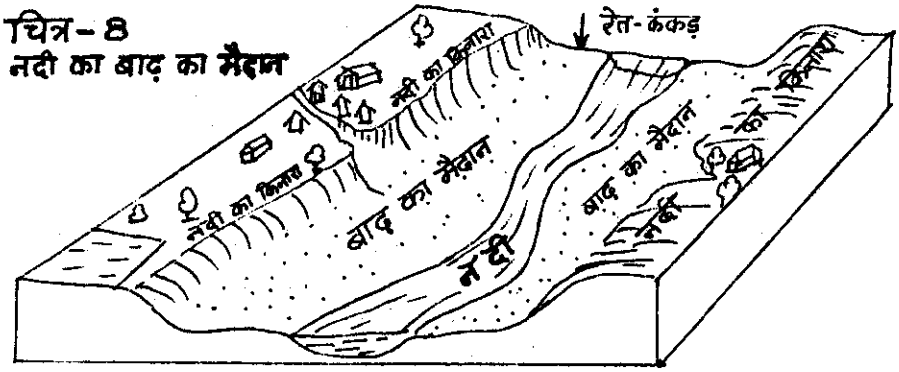

चित्र में दिखाया गया है कि नदी का पाट काफी चौड़ा है। लेकिन वह थोड़े हिस्से में बहती है। बची हुई घाटी में बालू या मिट्टी सूखी पड़ी है। नर्मदा के किनारे नदी का सूखा मैदान तुम देख सकते हैं। इसे <u>नदी का बाढ़ का मैदान</u> कहते हैं

चित्र-9
बाढ़ का पानी किनारे के ऊपर चढ़ आया

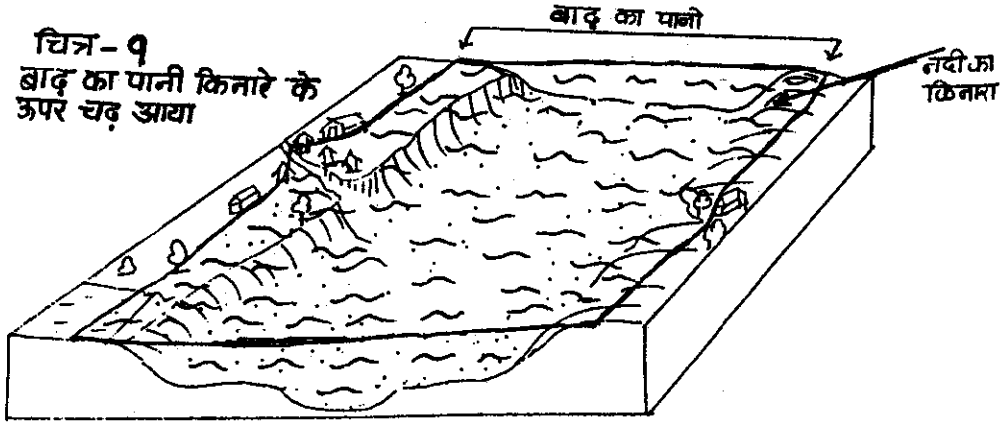

जब बाढ़ आती है तब नदी का पानी पूरे मैदान में फैल जाता है और किनारे तक पानी भर जाता है। सभी बड़ी नदियों में ऐसा बाढ़ का मैदान होता है।

लेकिन आजकल बाढ़ एक गंभीर समस्या बन गई है। बाढ़ आने पर नदियां अपने किनारों को तोड़कर और अधिक भागों में फैल जाती हैं, गाँव बह जाते हैं, फसल नष्ट हो जाती है, जानवर बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। बहुत नुकसान होता है। <u>क्या इस तरह की गंभीर बाढ़ में हम मनुष्यों का भी हाथ है?</u> तुमने वर्षा और धरती में पानी के रिसन की बात पढ़ी। जहां धरती पर वनस्पति अधिक होती है वहाँ धरती में रिसन भी अधिक होती है। क्योंकि पानी वनस्पति के आवरण के कारण रुक-रुक कर बहता है और उसे धरती में रिसने का समय अधिक मिलता है।

नीचे नदी के किनारे के दो दृश्य दिए गए हैं। दोनों की तुलना करो और अन्तर बताओ ?

चित्र 10 में
वनस्पति अधिक है/
कम है।
बाढ़ अधिक है/
कम है।

चित्र–10

नदी में........बाढ़

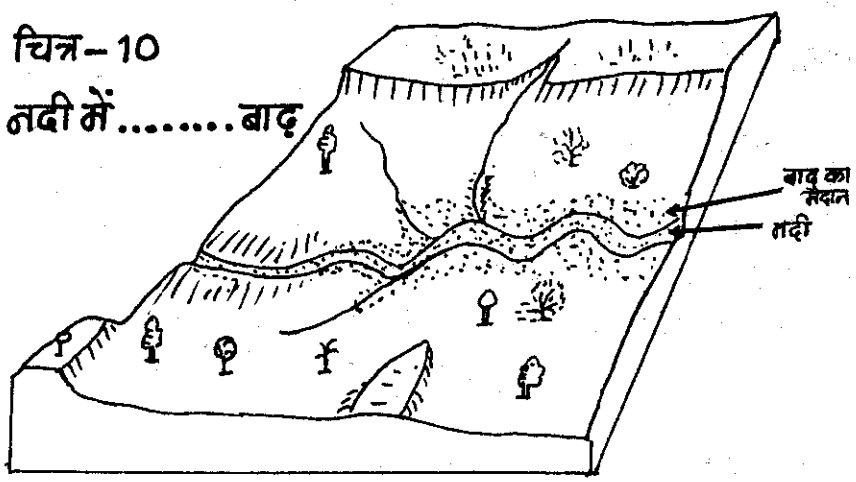

चित्र–11

नदी में... बाढ़

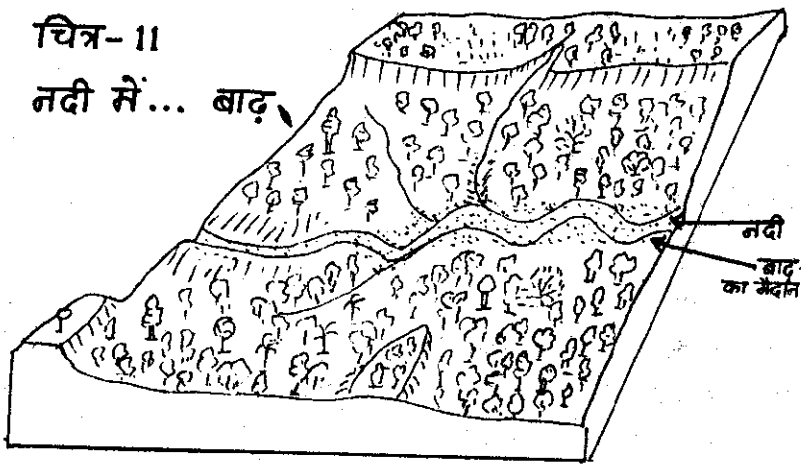

चित्र-11 में
वनस्पति अधिक
है/
कम है।
बाढ़ अधिक है/
कम है।

अब तुम समझ गए होगे कि वनस्पति का आवरण न रहने पर वर्षा का पानी बिना रुकावट के तेजी से बहता हुआ नदी में इकट्ठा हो गया और भयंकर बाढ़ आ गई। यदि वनस्पति का आवरण होता तो धरती में रिसन भी अधिक होती और वर्षा अधिक होने पर भी सतह का जल धीरे-धीरे लम्बे समय तक थोड़ा-थोड़ा बहकर नदी में आता रहता। नदी अपने किनारों को तोड़कर न बहने लगती और किनारे, गाँवों, खेतों, जानवरों आदि को नष्ट नहीं करती।

उदाहरण के लिए हिमालय पर्वत से निकली हुई गंगा नदी को देखो। पहले उसके तथा उसकी सहायक नदियों के किनारे खूब घने जंगल थे। जब हिमालय पर वर्षा होती थी तो उत्तर प्रदेश और बिहार में जहाँ गंगा के बाद के मैदान हैं, बाढ़ तो आती थी लेकिन इतनी भंयकर नहीं। पिछले वर्षों में हिमालय पर वनों की खूब कटाई हुई है। गंगा के मैदान में तो खेती होती है वन लगभग नहीं के बराबर है। तो अब तेज वर्षा होती है तो हिमालय की सीधी ढलानों पर पानी बहता है व बड़ी भंयकर बाढ़ आती है और बहुत हानि होती है।

सूखा और बाढ़ का निदान : अब बताओ यदि धरती पर पेड़-पौधों का आवरण हो तो सूखे और बाढ़ से कैसे बचाव हो सकता है ?

1. नदियों में लंबे समय तक जल कैसे रहेगा ?
2. कुओं में वर्षा कम होने पर भी जल कैसे रहेगा ?
3. जानवरों को चारा जंगलों से कैसे मिलता रहेगा ?
4. बाढ़ कम कैसे आएगी ?
5. नदियों और कुओं से खेती की सिंचाई कैसे हो सकेगी ?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1 जल से भाप कैसे बनती है ?

2 भाप से बादल कैसे बनते हैं ?

3 बड़े पैमाने पर भाप उठने और बादल बनने की क्रिया कहाँ होती है ?

4 सागरों में बनी भाप और उससे बने बादल स्थलों के भीतर तक कैसे आ जाते हैं ?

5 भाप भरी हवाओं से वर्षा सबसे अधिक कहाँ होती है ?

   1. जो समुद्री तट हवाओं के सामने पड़ते हैं।
   2. जो पर्वत हवाओं के सामने पड़ते हैं।
   3. जो भाग समुद्र से बहुत दूर हैं।

6 अ. नदी के बहने के मार्ग को ---------- कहते हैं।

   ब. बड़ी नदी में मिलने वाली छोटी नदियों को ---------- कहते हैं।

   स. जहाँ नदी का जल बाढ़ आने पर फैल जाता है उसे नदी का ---------- कहते हैं।

   द. जहाँ नदी समुद्र में मिलती है उसे नदी का ---------- कहते हैं।

7. नीचे बने चित्र में तीर से बताओ नदी किधर बहेगी ?

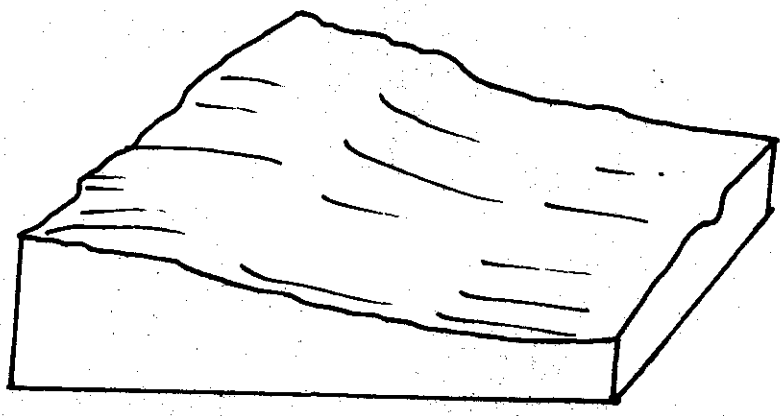

8. नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है जबकि बेतवा नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है, ऐसा क्यों है?

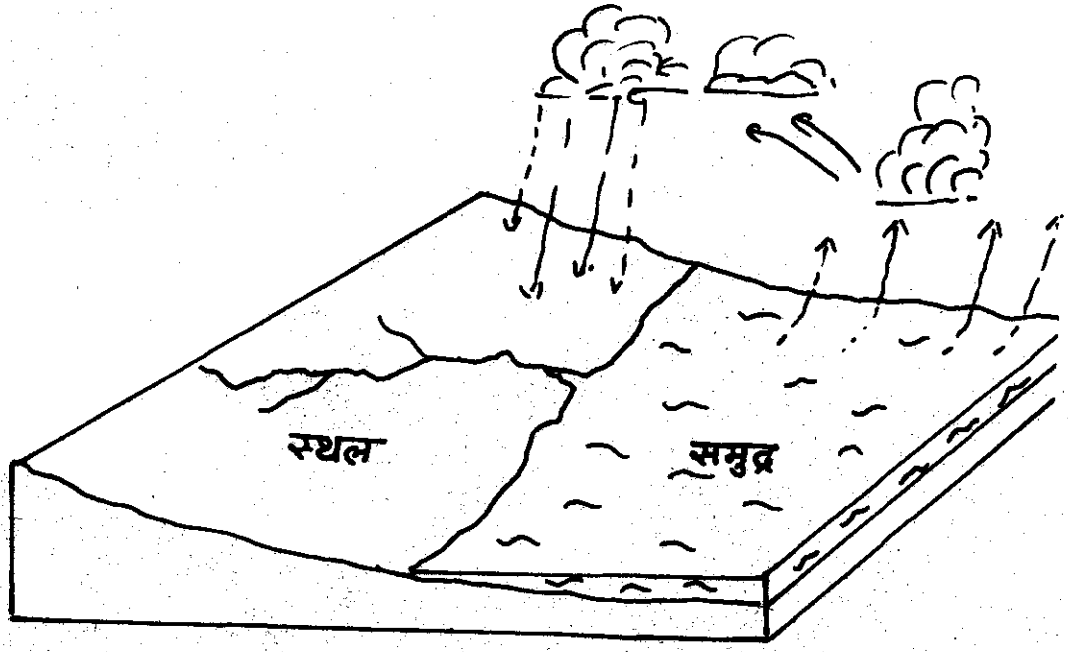

9. जल चक्र की मुख्य क्रियाओं को ऊपर के चित्र में बताइए ?

भू-जल भंडार 4

सोचो, यदि हमें जल कई दिन न मिले तो हमारे कितने काम रुक जाएंगे। पीने के लिए पानी न मिले तो क्या हम सब जीवित रह सकते हैं?

बताओ, हमें जल कहां से मिलता है?

(1)……(2)……(3)……(4)……

जब कई महीने वर्षा नहीं होती, तालाब और नदियाँ भी सूख जाती हैं, तब भी हमें जल कुओं से मिलता रहता है। अब तो नलकूप भी लगा दिए गए हैं। तुमने कभी सोचा कि कुओं या नलकूपों में जल कहां से आता है? क्या पृथ्वी के अंदर जल का भंडार है? हां! पृथ्वी में सतह के कुछ नीचे जल का भंडार है। लेकिन तुमने यह भी देखा होगा कि किसी वर्ष यदि वर्षा कम हो या बिल्कुल न हो तो बहुत से कुएं सूख जाते हैं। जब वर्षा होती है तब कुएं में फिर से पानी आ जाता है। नीचे के चित्र को देखो तो समझ सकोगे कि भूजल का भंडार कैसे बनता है।

चित्र-1 भू-जल भंडार का बनना

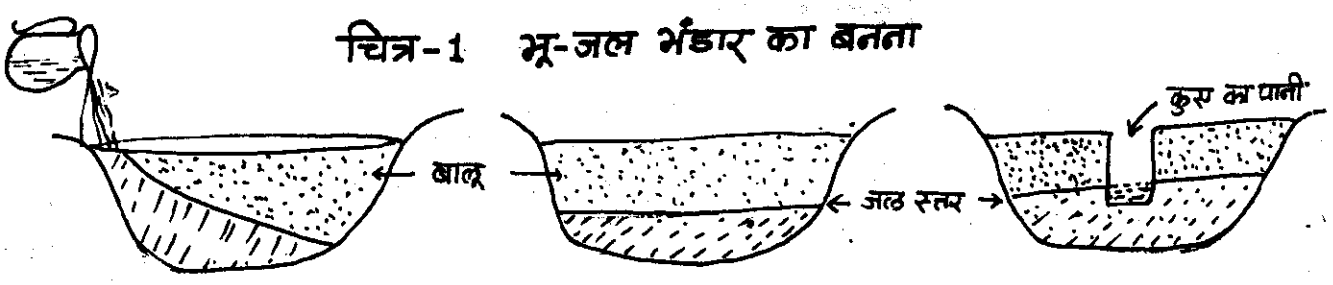

जब वर्षा होती है तब कुओं में पानी आता है? वर्षा का जल कुओं और नलकूपों में कैसे पहुँच गया? कुएं से तो हम भू-जल निकालते हैं, वर्षा का पानी तो उसमें इकट्ठा नहीं करते। वह तालाबों में इकट्ठा होता है, नदियों में बहता है।

हमने देखा था कि गर्मी के बाद जब पानी बरसा था तब बहुत सा पानी धरती ने सोख लिया था। बरसात भर धरती में पानी रिसकर सोखता रहा, हमें प्रकृति का काम दिखाई नहीं दिया। रिसन से धरती में सोखा यही जल हमें कुओं और नलकूपों द्वारा मिलता है। यानी बारिश के मौसम में गिरा पानी ही धरती के अन्दर कैद रहता है। तुमने कक्षा 4 में पढ़ा था कि यदि पानी गंदा हो तो कैसे घड़ों में बालू और कोयला भरकर उसमें से पानी जब रिसता है तो वह साफ हो जाता है। प्रकृति रिसन का यह काम स्वयं करती है। यही कारण है कि चट्टानों से

रिसा पानी जब कुओं से हम खींचते हैं तो हमें बिल्कुल साफ मिलता है। लोग नदी या तालाब होने पर भी कुओं से पीने का पानी इसीलिए लेते हैं। बारिश का पानी धरती में कैद कैसे होता है। धरती के अन्दर झांक कर देखें।

छेददार तथा बिना छेद की चट्टानें : धरती पर मिट्टी की परत के नीचे पत्थर और चट्टानें होती हैं। कुछ चट्टानें जैसें बालू का पत्थर और चूने के पत्थर में छिद्र तथा दरारें होती हैं।

चित्र-2 छिद्र युक्त चट्टानें

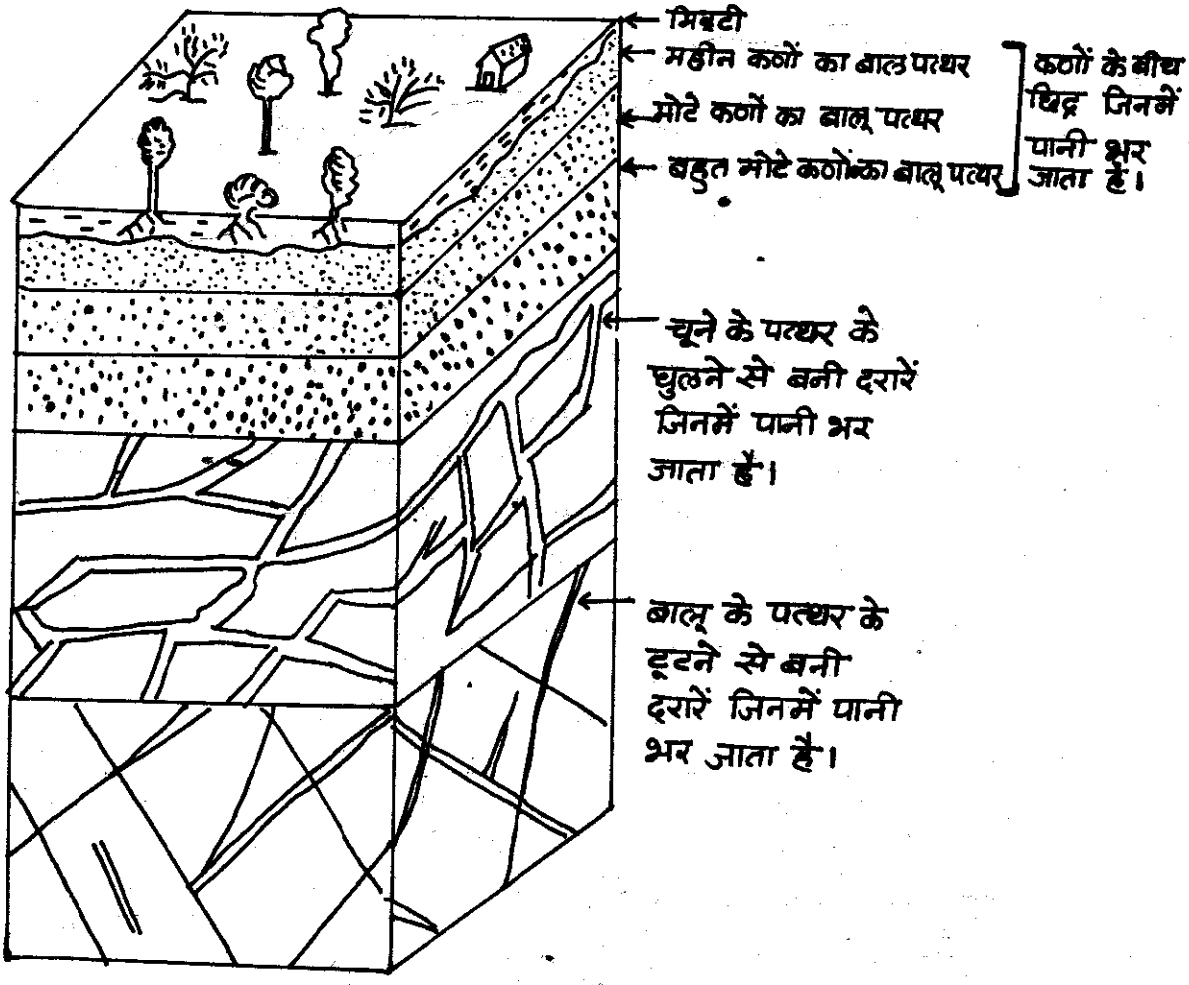

बरसात का पानी मिट्टी में रिसता है। फिर इन छेददार पत्थरों और चट्टानों में रिसता-रिसता नीचे जाता रहता है। इस चित्र में तुम पानी रिसाकर दिखाओ - कहाँ पानी नीचे जाएगा, कहां रुकेगा,

कहाँ बहेगा।

इन छिद्र तथा दरार वाली चट्टानों के नीचे यदि ऐसी चट्टानें हैं जिनमें छिद्र तथा दरारें नहीं हैं तो फिर पानी उनमें से होकर नीचे नहीं जा पाता। महीन कणों से बनी शेल तथा स्लेट चट्टानें ऐसी ही होती हैं। तब पानी ऊपर की छिद्र तथा दरार वाली चट्टानों में भरा रहता है।

चित्र-3 छिद्र तथा अछिद्र चट्टानें तथा भू-जल स्तर

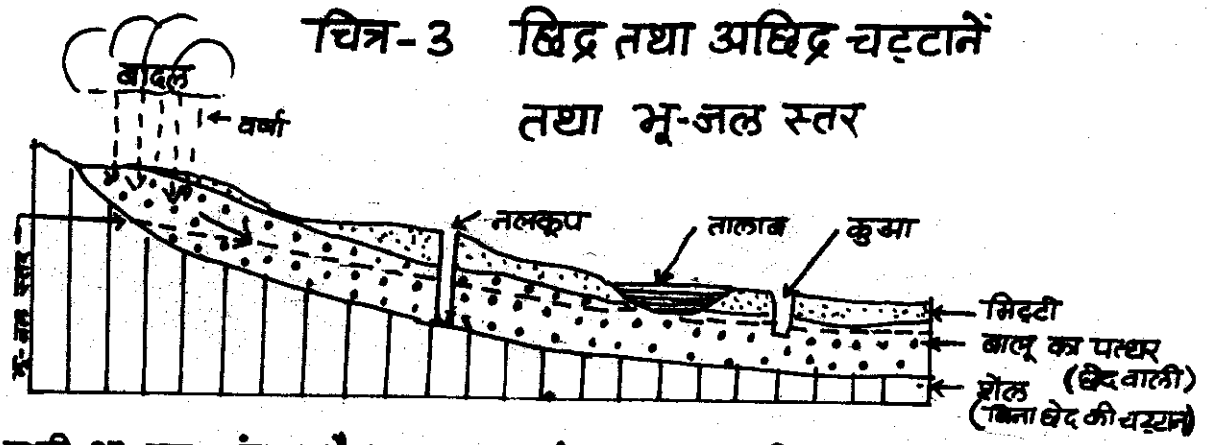

यही भू-जल भंडार है। इस जल भंडार की ऊपरी सतह को भू-जल स्तर कहते हैं। कुएं या नलकूप इसी भू-जल स्तर के नीचे कुछ गहराई तक खोदे जाते हैं। तुमने क्या कभी कुआं खुदते देखा है? भू-जल भंडार की गहराई पर पहुँचने पर चट्टानें गीली मिलती हैं। और खोदने पर पानी रिस कर कुएं में आने लगता है। लेकिन अभी अधिक पानी नहीं मिला। थोड़ा और खोदने पर पानी तेजी से कुएं में भरने लगता है - अब कुआं भू-जल स्तर के नीचे तक बन गया।

चित्र-4 नर्मदा घाटी में भू-जल

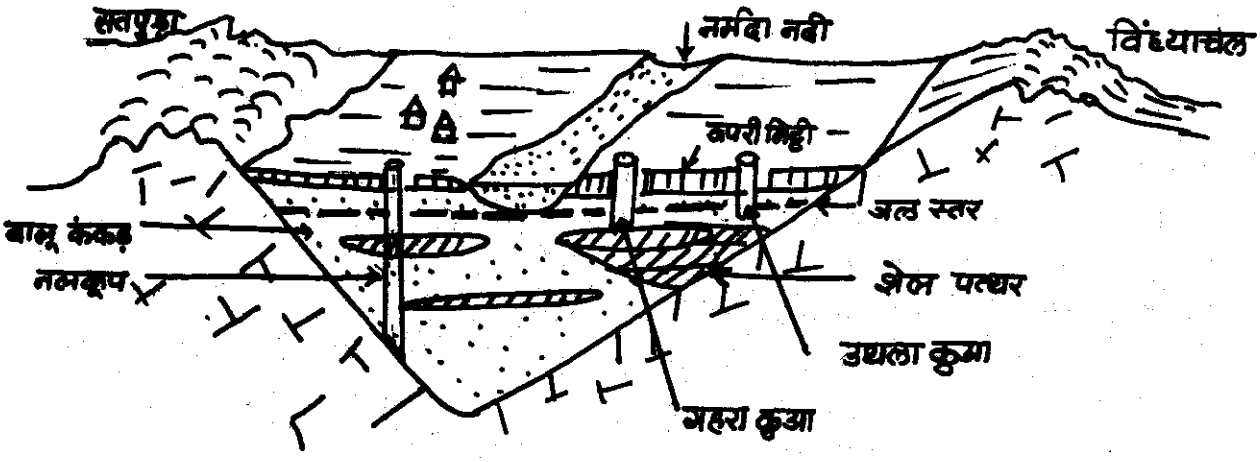

नर्मदा घाटी का एक चित्र दिया गया है बताओ इनमें कौन सी छिद्र वाली और कौन सी बिना छिद्र की चट्टान है? कहाँ पर कुआं खोदा जाए कि उसमे पानी मिले? साधारणतः पीने के पानी के कुएं 3 से 4 मीटर गहरे खोदे जाते हैं। नलकूप में 60 से 90 मीटर की गहराई तक पाइप डालकर, नलकूप बनाकर उसमें पम्प लगाकर पानी खींचते हैं और अधिकतर उनमें काफी पानी मिल जाता है।

भू-जल क्या समान गहराई पर मिलता है? मिट्टी की परत के नीचे जहां अछिद्र या बिना छेद वाली चट्टानें होती हैं, कुआं या नलकूप खोदने पर भी जल नहीं मिलता है या बहुत कम जल मिलता है। पानी के ठहरने के लिए चट्टान में जगह ही नहीं है, पानी बहकर कहीं और चला जाता है। यही कारण है कि ऐसी चट्टानों में कुआं खोदते समय लोग दरारें खोजते हैं, जहां कुआं खोदने पर पानी मिल जाता है। नीचे भोपाल के निकट एक पहाड़ी की चट्टानों का चित्र दिया गया है और दो कुएं खोदे गए हैं, बताओ इनमें से किसमें जल मिलेगा?

चित्र-5 भोपाल के निकट एक पहाड़ी की भीतरी बनावट

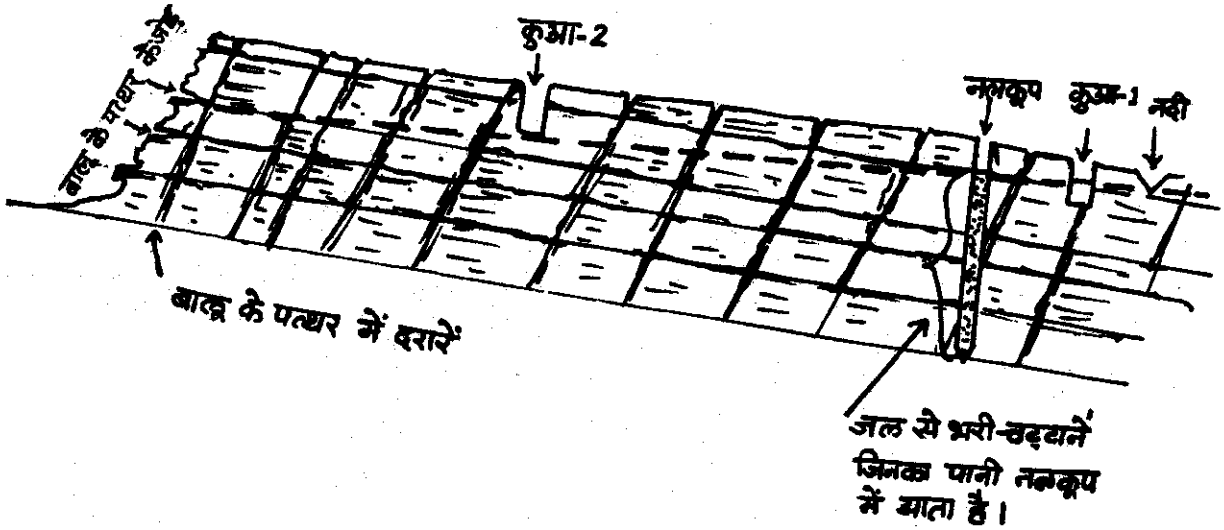

भोपाल के आसपास के लोग बताते हैं कि यहां जाड़े के मौसम में अधिकतर कुओं में चार-पाँच घंटे मोटर से पानी निकालने पर कुएं में पानी नहीं रहता, लेकिन फिर कुएं के चारों ओर की दीवार में पाई जाने वाली दरारों से पानी की धाराएं फूट-कर कुएं में जल भरने लगती हैं। अगले दिन फिर चार-पाँच घंटे

पानी निकाला जा सकता है। सिंचाई के ऐसे कुएं इसीलिए 8-10 मीटर गहरे खोदे जाते हैं, जिससे भू-जल स्तर के नीचे तक का पानी काफी मात्रा में कुएं में इकट्ठा होता रहे।

अब तुम समझ गए होगे कि जब वर्षा कम या बिल्कुल नहीं होती और हम बराबर कुएं से पानी सींचते रहते हैं तब भूजल स्तर नीचे चला जाता है और कुओं में पानी नहीं रहता वे सूख जाते हैं। वर्षा होने पर जब जल रिसकर धरती में पहुँच जाता है, जल स्तर ऊपर उठ जाता है और कुएं फिर से भर जाते हैं। लेकिन जो खूब गहरे कुएं या नलकूप हैं उनमें जल स्तर कम होने पर भी पानी रहता है। बताओ ऐसा क्यों है?

भू-जल की मात्रा : चट्टानों की बनावट तो अपने हाथ में है नहीं। क्या कोई और तरीक़ा भी है जिससे भू-जल का भंडार बना रहे, कुएं सूखे नहीं और हमें बराबर जल मिलता रहे? अपने देश में वर्षा तो 3-4 महीने ही होती है और तभी भू-जल भंडार बढ़ता है। कुछ ऐसा उपाय हो कि उन्हीं 3-4 महीनों में जल का रिसन अधिक हो तो भू-जल भंडार भी अधिक रहे।

तुमने देखा होगा कि जहाँ धरती पर वनस्पति नहीं है, नंगी पथरीली भूमि है वहाँ वर्षा आई और जल नाले की तरह बह गया, रिसन कहाँ हो पाई? लेकिन जहाँ जंगल है, घास है, झाड़ियाँ है, पानी उनमें उलझा रहता है, धीरे-धीरे बहता है और उसे धरती में रिसने का समय मिल जाता है, यही पानी अन्दर जाकर भू-जल को बढ़ाता है। तुम पढ़ चुके हो कि वनस्पति से ढके प्रदेशों में अधिक रिसन के कारण बाढ़ भी कम आती है। इसीलिए जहां जंगल, घास, झाड़ियाँ आदि काट ली गई हैं, समतल भूमि पर खेत बना लिए गए हैं कुओं में बराबर पानी निकाला जा रहा है, वहाँ भू-जल स्तर नीचे चला जाता है। इसीलिए भू-जल भंडार को बढ़ाने के लिए ज़रूरी है कि पेड़ लगाए जाएं, जंगलों में वृक्षारोपण किया जाय, जिससे भू-जल भंडार बना रहे। तालाबों और बाँध बनाकर रोके गए पानी से भी स्वाभाविक है कि रिसन बढ़ती है और भू-जल भंडार बढ़ता है।

भू-जल का बढ़ना : होशंगाबाद में जहाँ से तवा की बाईं मुख्य नहर निकाली गई है, चारों ओर के खेतों में नहर का पानी रिसकर पहुँचता रहता है और मिट्टी में दलदल जैसा बन गया है। वहां खेती कठिन हो गई है। क्योंकि गेहूँ, चना, आदि फसलों में सिंचाई के बाद मिट्टी भुरभुरी होजानी चाहिए, मिट्टी में अधिक पानी नहीं रहना चाहिए।

इस क्षेत्र में निमसाड़िया, रोहना, निटाया, ब्यावरा, पथौड़ी आदि गाँवों के किसान बताते हैं कि नहर की रिसन के कारण कुओं में पानी का स्तर ऊपर उठ आया है। बताओ यहाँ भू-जल भंडार बढ़ गया है या घट गया है? कुओं में खूब पानी होने पर भी उसका उपयोग नहीं हो पाता क्योंकि आसपास के खेतों में नमी पर्याप्त है, वहाँ सिंचाई की आवश्यकता नहीं है।

ऐसे कुओं में रिसन से पानी के साफ होने की भी प्रक्रिया नहीं हो पाती, पानी गंदा रहता है।

इस तरह मिट्टी और कुएं में आवश्यकता से अधिक जल लाभ का नहीं होता, उससे तरह-तरह की समस्याएं खड़ी हो जाती हैं।

अभ्यास के प्रश्न

खाली स्थान भरो :

1. (अ) वर्षा होने पर भू-जल भंडार ---------- है।
   (ब) भू-जल की ऊपरी सतह को ---------- कहते हैं।
   (स) कठोर चट्टानों के ---------- और ---------- में पानी भरा रहता है।
   (द) भू-जल हमें ---------- चट्टानों से मिलता है।
2. कुओं का पानी साफ क्यों होता है?
3. दो छिद्र वाली तथा दो बिना छेद वाली चट्टानों के नाम बताओ?
4. साधारणतः कुएं कितने गहरे खोदे जाते हैं? कुएं, सिंचाई के कुएं, नलकूप
5. वर्षा होने पर भू-जल स्तर ऊपर क्यों उठ जाता है?
6. तवा क्षेत्र में भू-जल स्तर ऊपर उठने की समस्या क्यों खड़ी हो गई है?
7. लोग कहते हैं 'पेड़ लगाओ तो कुएं नहीं सूखेंगे' ऐसा क्यों?

जीवन दायिनी मिट्टी 5

अपने चारों ओर धरती पर तुम मिट्टी देखते हो। तुमने कभी सोचा, मिट्टी से हमें क्या-क्या मिलता है? तुम रोज़ के इस्तेमाल की चीज़ों में से उन चीज़ो को चुनो जो मिट्टी से उपजी है:

1. ..... 2. ..... 3. ..... 4 .....

पेड़-पौधों से हमें कितनी ही चीज़ें मिलती है, जानवरों का चारा, जलाऊ लकड़ी, कपड़ा बनाने के लिए कपास, कागज़ बनाने के लिए बाँस, लकड़ी आदि। अपने चारों ओर के खेतों को देखो। मिट्टी को जोत बोकर हम अनाज, फल, सब्जी उगा लेते हैं।

इस तरह प्राकृतिक संपदाओं में मिट्टी का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। फ़सलें, जंगल, घास, झाड़ियाँ सभी मिट्टी में उपजती हैं। किसी पौधे का उखाड़ कर देखो, उसकी महीन मोटी जड़ें मिट्टी में फैली हुई है। यही जड़ें मिट्टी से पौधे के लिए भोजन लेती हैं। बड़े-बड़े पेड़ों की जड़ें कितनी मोटी और कितनी दूर-दूर तक फैली रहती हैं, वे सब मिट्टी से पेड़ को भोजन देती हैं। यदि मिट्टी न हो तो पेड़-पौधे कैसे उगें और बढ़ें? जहाँ सतह पर केवल कठोर चट्टानें हैं या थोड़ी बहुत मिट्टी है वहाँ पेड़ भी कितने कम हैं वे छोटे-छोटे हैं, बड़े छायादार पेड़ नहीं हो पाते।

मिट्टी कैसे बनती है?

क्या तुमने कभी सोचा कि मिट्टी आती कहाँ से है? तुम जानते हो कि पृथ्वी की सतह कई प्रकार की चट्टानों से बनी है। यह चट्टानें धीरे-धीरे टूटती है। चट्टानों के टूटने से छोटे पत्थरों और पत्थर बनते हैं और टूटते-टूटते वे अंत मे बालू और मिट्टी में बदल जाते हैं। चट्टानों के ऊपर बिछे इसी भुरभुरे पदार्थ को हम मिट्टी कहते हैं। चट्टानों के टूटने फूटने से बनने के कारण ही मिट्टी में वे सभी गुण होते हैं जो इन चट्टानों में होते हैं। जैसे कि अगर हम सीहोर ज़िले के गाँवों की मिट्टियाँ देखें तो वे काले रंग की बारीक कणों वाली दिखाई देती है। सीहोर ज़िले में मिट्टी लावा चट्टान के टूटने फूटने से बनी है। यह चट्टान काले रंग की है। लेकिन यदि तुम टीकमगढ़ ज़िले में जाओ तो वहाँ मोटे कणों की मिट्टी मिलती है, जिसमें बालू अधिक होती है। इसका रंग भी लाल होता है। यह मिट्टी बालू वाली लाल चट्टान से बनी है। गुरूजी की सहायता से जानो कि तुम्हारे प्रदेश में कौन सी चट्टान है और किस तरह की मिट्टी है।

चित्र-1

सतह से नीचे
मिट्टी की बनावट

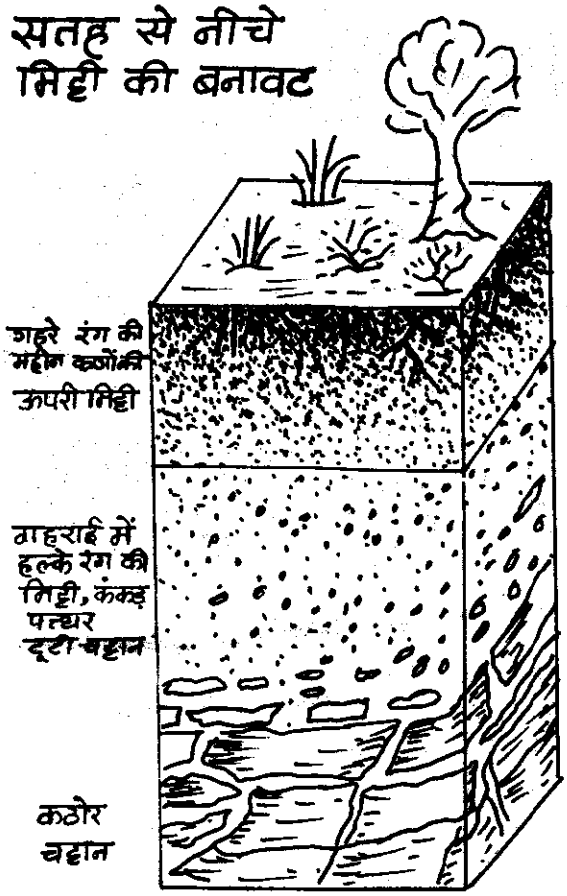

मिट्टी खोदने पर नीचे क्या मिलता जाता है - यह उसका एक चित्र है। सबसे ऊपर जहाँ मिट्टी में पेड़ों की जड़ है - वहाँ कैसी मिट्टी है?
उसके नीचे -
उसके भी नीचे -
और सबसे नीचे
तुमने जब कभी आसपास की मिट्टी खुदती देखी हो, तो क्या ध्यान दिया कि खोदते-खोदते अलग-अलग तरह की मिट्टी निकलने लगती है।

सतह के ठीक नीचे गाढ़े रंग की मिट्टी की परत होती है। यह ऊपरी परत जितनी मोटी होती है मिट्टी उतनी ही उपजाऊ होती है। अगर ध्यान से देखें तो इस परत में घास, पत्तियाँ, पेड़, पौधों की जड़ों आदि की सड़ी गली होता है। इस पदार्थ से मिट्टी उपजाऊ होती है। इसे ही अंग्रेजी में 'ह्यूमस' कहते हैं। इसी ऊपरी परत में पेड़-पौधों की जड़ें फैलती हैं। इसी से पेड़-पौधों को पोषण मिलता है।

ऊपरी परत के नीचे मिट्टी की दूसरी परत होती है, इसका रंग हल्का होता है, यह कठोर भी होती जाती है। मिट्टी की इस परत के नीचे चट्टानों के छोटे-छोटे टुकड़ों की परत है। ये टुकड़े नीचे की कठोर चट्टानों के टूटने से बने हैं और इन्हीं के बारीक होने पर मिट्टी बनती है। इन्हें 'जनक चट्टान' कहा जाता है। इनसे मिट्टी बनने में लंबा समय लगता है।

धरातल की बनावट और मिट्टी-

जिन चट्टानों की टूट-फूट से मिट्टी बनती है वह वहीं हमेशा नहीं रहती। नदी-नाले का पानी उसे बहा ले जाता है और अन्य भागों में बिछा देता है। इसीलिए तुम्हारे यहाँ जो मिट्टी है वो सिर्फ तुम्हारे यहाँ की चट्टानों के टूटने से ही नहीं बनी। दूसरे क्षेत्रों की मिट्टी नदी नालों में बहकर भी यहाँ आई होगी और बिछी होगी।

यही कारण है कि नदियों की घाटियों में मिट्टी की मोटी तह मिलती है, जबकि ढलवाँ धरती पर, पहाड़ पर मिट्टी की अधिक मोटी नहीं होती।

अगर हम किसी गाँव के चारों ओर की मिट्टियों को देखें तो पाते हैं कि ये अलग-अलग प्रकार की हैं।

चित्र-2
धरातल और मिट्टी

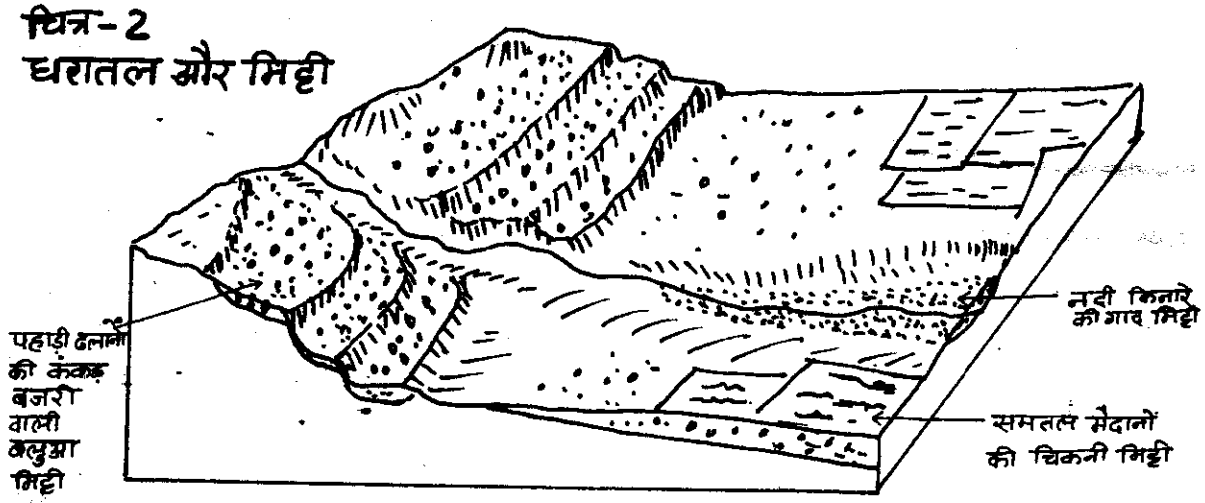

गाँव से कुछ दूर अगर नदी है और हम नदी के किनारे की मिट्टी उठाकर देखें तो वह भुर भुरी लगती है। इसमें चिकनी मिट्टी के साथ बारीक बालू भी मिली है। किसानों से पूछें तो वे इसे गाद या पन मिट्टी कहते हैं। वे बताते हैं कि बरसात में पानी के साथ यह मिट्टी बह-कर आती है और परत के रूप में जमा होती रहती है। इसका मतलब है कि नदी किनारे की मिट्टी कहीं और से आई है। कितनी अच्छी फ़सल खड़ी है इस पर। कोटगाँव में क्या इसी तरह की मिट्टी की बात तुमने पढ़ी थी।

आओ चलें, गाँव की दूसरी ओर पहाड़ी पर। यह क्या, यहाँ तो चट्टानों के बड़े छोटे टुकड़े बिखरे पड़े हैं। इन्हीं के बीच-बीच में थोड़ी

मिट्टी भी है। मोटी रेत और बजरी अधिक है और यहाँ की महीन मिट्टी - बरसाती पानी के साथ बह गई। मिट्टी बहुत कम गहरी है। खेत में कुछ बूँद खड़े हैं, लगता है बरसात में ज्वार जैसी कुछ फ़सलें यहाँ पैदा की गई थीं। अब तो यह बंजर सा है। किसानों का कहना है कि यहाँ हर साल खेती नहीं हो पाती। क्योंकि यह मिट्टी उपजाऊ नहीं है।

कुछ समय पड़ती रखने के बाद ही इस पर खेती की जाती है, वह भी मोटे अनाजों की। बरसात के बाद इसमें नमी नहीं रुकती।

गाँव के समतल भाग में कुछ और दृश्य हैं। यहाँ पहाड़ी मिट्टी की भाँति न तो बजरी वाली मिट्टी है और न नदी किनारे की भुरभुरी बलुई मिट्टी। यह बारीक कणों वाली चिकनी मिट्टी है। इसमें गेहूँ, चावल, कपास जैसी फ़सलें होती हैं जिनको उपजाऊ मिट्टी चाहिए। इसमें ह्यूमस की मात्रा भी अधिक है।

इन तीन स्थानों की मिट्टियों में मुख्यत: चार पदार्थ मिले बताओ कौन से?

(1)..... (2)..... (3)..... (4).....

सभी मिट्टियाँ इन्हीं पदार्थों के मिश्रण से बनती हैं। किसी मिट्टी में एक चीज़ की मात्रा अधिक होती है तो किसी में दूसरी चीज़ की। इन पदार्थों की मात्रा पर मिट्टी का नामकरण किया जाता है। जैसे बालू की अधिकता वाली बलुआ मिट्टी कहलाती है। अत्यन्त महीन कणों वाली चिकनी मिट्टी तथा मध्यम और महीन कणों वाली भुरभुरी गाद मिट्टी होती है। बालू चिकनी और गाद की बराबर मात्रा होने पर दुमट मिट्टी होती है। क्या तुम्हारे आसपास भी अलग-अलग जगह पर अलग-अलग तरह की मिट्टी है। या सब तरफ एक सी मिट्टी है। तुम अपने आसपास के प्रदेश की मिट्टी में कंकड़-बालू, चिकनी मिट्टी और गाद की मात्रा को देखकर तय करो कि कौन सी मिट्टी है।

मिट्टी के गुण -

तुम आसपास से कितनी तरह की मिट्टी इकट्ठी करके ला सकते हो- ले कर आओ, उनका रंग अलग-अलग होगा। तुम कितने रंगों की मिट्टी लाए। मिट्टी के कण भी बारीक होंगे, कहीं मोटे, बारीक बहुत बारीक, मोटे बहुत मोटे कणों के हिसाब से मिट्टी को पहचानो।

कणों के आकार में अन्तर होने के कारण ही मिट्टियों में पानी सोखने की क्षमता में भी अन्तर होता है। यह देखने के लिए तीन छोटे डिब्बे लो। एक में बलुई मिट्टी, दूसरे में चिकनी और तीसरे में गाद भर दो। डिब्बे थोड़ा खाली रखो। अब इन डिब्बों में धीरे-धीरे-पानी डालो। कौन सी मिट्टी से पानी जल्दी रिस के निकल गया? उसका कण कैसा था? जिस मिट्टी में पानी धीरे-धीरे रिसा उसके कण कैसे थे? जिस मिट्टी में पानी मध्यम गति से रिसा उसके कण कैसे थे?

क्या तुमने यह पाया कि बलुई मिट्टी शीघ्र ही पानी सोख लेती है और डिब्बे में नीचे छिद्र हों तो वह नीचे रिसता हुआ देखा जा सकता है। दूसरी ओर चिकनी मिट्टी बहुत देर में पानी सोखती है। ऐसा क्यों? यह इसलिए कि बड़े कण होने के कारण रेतीली मिट्टी पोली सी होती है, जिससे पानी डालते ही इन छिद्रों से नीचे चला जाता है। इसी कारण रेतीली मिट्टी में फसलों के लिए पानी की कमी रहती है। इस पर खेती वर्षा ऋतु अथवा सिंचाई की मदद से होती है। इसके विपरीत चिकनी मिट्टी के कण महीन होते हैं और उनके मिलने पर बहुत बारीक छिद्र बनते हैं, उनसे पानी की रिसन धीरे-धीरे होती है। फलतः पानी धीरे-धीरे मिट्टी में प्रवेश करता है। परन्तु एक बार गीली होने पर लम्बे समय तक आर्द्र बनी रहती है। यह गीली होने पर फैलती है और सूखने पर सिकुड़ने के कारण दरारें पड़ जाती हैं। इस गुण के कारण चिकनी मिट्टी में वर्षा ऋतु में खेती करना कठिन होता है।

भुरभुरी मिट्टी पानी सोखकर फैलती नहीं है और न ही चिपकती है। साथ ही यह पानी को देर तक रखती है। जिस कारण यह खेती के लिए काफी अच्छी समझी जाती है और इस पर खरीफ और रबी दोनों ऋतुओं में खेती की जाती है। चावल, गेहूँ, गन्ना आदि सभी फसलें पैदा होती हैं।

मिट्टी के कटाव को रोकने के उपाय -

तुमने इंडोनेशिया के बारे में पढ़ा था कि वहाँ सीढ़ीनुमा खेत बनाते हैं जिससे पानी के साथ मिट्टी बह न जाय। मिट्टी के कटाव को

रोकने का यह अच्छा तरीका है। लेकिन यह तरीका तो खेतीहर भूमि में ही अपनाया जा सकता है। सोचो ढलान को सीढ़ीनुमा बनाने में, सिंचाई करने में, जोतनो और बोने में कितनी कठिनाई होती होगी। फिर भी पहाड़ी प्रदेश में लोग ऐसे ही खेत बनाते हैं। हिमालय पर्वत की ढलानों पर तुम्हें ऐसे खेत देखने को खूब मिलेंगे ।

चित्र- बरसात के बाद तुमने खेती में नालियाँ देखी हैं?

वर्षा के बाद उन खेतों को ध्यान से देखो जिनमें फ़सल नहीं है। पानी के बहने से छोटी-छोटी नालियाँ बन गई हैं। बताओ यह क्यों बन गईं? इनकी मिट्टी कहाँ गई? कभी नदियों के किनारों को भी देखो, वहाँ भी पानी के बहने से ऐसी नालियाँ बन गई हैं। होशंगाबाद के पास नर्मदा नदी के किनारे को देखना। मिट्टी का ऐसा कटाव खेतों को बहुत नुकसान पहुँचाता है। बताओ, मिट्टी के कटाव के लिए क्या करना चाहिए? आजकल सब लोग कहते हैं कि पेड़ लगाओ। तुमने सोचा कि पेड़ लगाने से मिट्टी का कटाव कैसे रुकेगा? कहीं मिट्टी कटी हो तो उसे ध्यान से देखो। कैसे जड़ें मिट्टी को बाँधे हुए हैं। यदि पेड़-पौधे नहीं हो तो मिट्टी कैसे बँधेगी? पानी आया और बह गई। इसीलिए जहाँ छोटी-छोटी नालियाँ बन गई हैं वहाँ पेड़-पौधे लगाए जाते हैं ।

एक छोटा-सा प्रयोग करके भी देखो। दो खोरवों में मिट्टी भर दो। एक में ऊपर से घास-फूस ढँक दो। पेड़ो में पानी देने वाले हजारे से कुछ ऊपर से दोनों खोखों पर पानी डालो। बताओ किसकी मिट्टी जल्दी बह गई?

जैसे बाँध बनाकर पानी को इकट्ठा कर लिया जाता है वैसे ही यदि ढलवां खेतों में भी पानी को रोकने का उपाय कर लिया जाए तो यह नालियाँ भी नहीं बनेंगी, उससे मिट्टी नहीं बहेगी और मिट्टी पानी भी सोख लेगी। कई बार खेतों के निचले ढलानों की मेढ़ें उँची करके लोग बाँध जैसा बनाते हैं।

अब तुम समझ गए होगे कि अच्छी फसल लेने के लिए मिट्टी बह न जाए, इसका उपाय बहुत आवश्यक है। बताओ यह रोकथाम किन-किन ढंगों से कर सकते हो।

अभ्यास के प्रश्न

1. मिट्टी कैसे बनती है ?
2. सीहोर जिले की मिट्टी काले रंग की और टीकमगढ़ जिले की लालरंग की क्यों है?
3. कणों के आकार के अनुसार मिट्टी में चार प्रकार के कौन से पदार्थ होते है?
(1) ..... (2) ..... (3) ..... (4) .....
4. मिट्टी एक जगह से दूसरी जगह कैसे पहुँच जाती है ?
5. पहाड़ी ढलान पर मिट्टी में कंकड़, पत्थर अधिक क्यों होते हैं ?
6. नदी की घाटी में गहरी और उपजाऊ मिट्टी क्यों मिलती हैं ?
7. सतह से गहराई में जाने पर मिट्टी में कौन सी तीन तहें मिलती है? चित्र बनाकर बताओ।
8. बलुई मिट्टी में पानी शीघ्र रिस जाता है, चिकनी मिट्टी में ऐसा नही होता, क्यों ?
9. सतह पर जब वनस्पति अधिक होती है तो मिट्टी का कटाव कम होता है, ऐसा क्यों ?

नागरिक शास्त्र

नागरिक शास्त्र

1

शहर में उद्योग धन्धे

शहर में कई लोग रहते हैं और कई काम, कई धंधों में लगे हैं। कोई चीज़ें बनाने में लगा है, कोई उनके व्यापार में। किसी को महीने में 10 दिन ही काम मिलता है तो किसी को काम से फुरसत ही नहीं। दर्ज़ी, पेंटर, धोबी, मोची सब अलग-अलग काम करते हैं। कोई टीन का काम करता है तो कोई बीड़ी बनाने का।

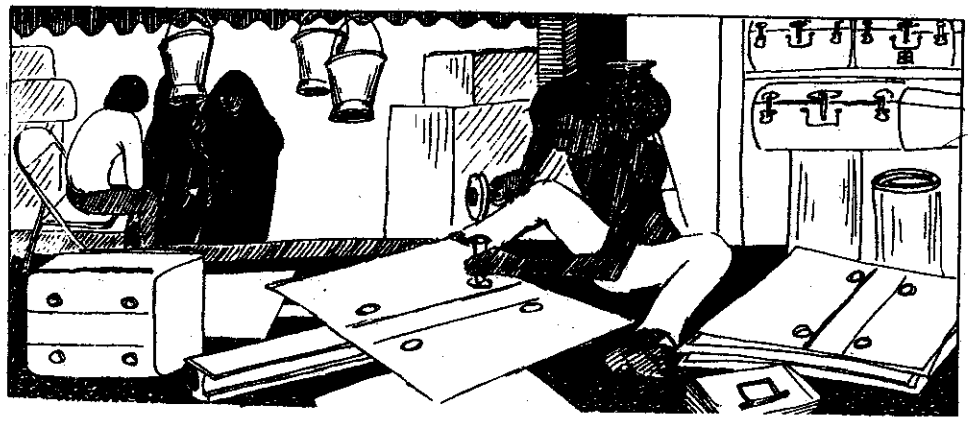

किस ढंग से काम होता है? कौन किससे काम करवाता है? और काम की सारी व्यवस्था कैसे होती है? इन बातों में भी बहुत फ़र्क़ देखने को मिल जाएंगे।

ये बातें देखने चलें तो न जाने कैसे-कैसे नाम सुनाई पड़ते हैं – नौकर, मालिक, ठेकेदार, लेबर, सुपरवाइज़र, मैनेजर चेयरमैन, डायरेक्टर ऐसे बहुत से नाम हमें कारख़ानों के आस-पास सुनने को मिलेंगे।

और अगर हम शहर के बाज़ार की तरफ़ निकल जाएं तो थोक व्यापारी, सेठ, मुनीम, एजेन्ट, दलाल बैठे मिलेंगे। माल उठाने-ढोने का काम हम्माल यानी मज़दूर कर रहे होंगे।

अफ़सर, बाबू, क्लर्क, चपरासी चौकीदार सभी दफ़्तरी नाम और काम हैं। फिर बहुत से वाले... चाय वाला, दुकानवाला, सब्ज़ीवाला ठेलेवाला।

पानवाले और बीड़ी, यह तो सभी जगह मिलते हैं। चलो, बीड़ी की कहानी से बीड़ी बनाने वाले लोगों के बारे में जाने!

बीड़ी और बीड़ी बनाने वाले 2

बात उस समय की है जब बड़े खान पानवाले की दुकान पर हंगामा मच गया। मज़दूर छाप, हँसिया छाप, शेर छाप, गनेश छाप, मोर छाप - बीड़ियाँ अपने अपने खांचे में बैठी थी। मोर छाप परिवार की सब बीड़ियाँ बेचैन थी। उनमें से कुछ बंडल अपने-अपने घर लौटना चाहते थे। एक मोर छाप बीड़ी दूसरे से कहती - दूसरी बीड़ी तीसरे से कहती तीसरी चौथे से। अंत में चौथे बंडल की बीड़ी ने बड़े खान से बात करने की हिम्मत की।

"बड़े मियाँ, बड़े मियाँ, हम अब यहाँ नहीं रहेंगे।"

"कहाँ जाओगे," बड़े मियां ने पूछा।

बीड़ी के तेंदू पत्तों ने कहा "हमें पेड़ों पर लौटना है।"

तम्बाकू चाहता था वह अपने पीले खेतों में लौट जाए। धागा हरे-हरे पौधे पर आकर लग जाना चाहता था और वह मोर छाप वाला कागज वापिस पेड़ की डाली बन कर हवा में लहराना चाहता था।

बड़े मियां ने उनकी बात सुनकर कहा, "मोर छाप बीड़ियों - मैं कुछ नहीं जानता, तुम्हे जाना है तो जाओ। मैं तो तुम्हें तुम्हारे मालिक - सद्दू के पास पहुँचा देता हूँ।"

एक बीड़ी में क्या-क्या लगा है।

किस का घर जंगल है -
किस का घर खेत है -
यह सब बीड़ी का कच्चा माल है।

इतने में सद्दू भाई का दलाल आ टपका। वह सद्दू भाई से बनी बनाई बीड़ियाँ लाकर बड़े खान को देता है।

"सलाम, बड़े मियाँ क्या हाल चाल हैं? हमने तो आपको बेचने के लिए बढ़िया बीड़ियाँ दी थी - एक-एक छाँट-छाँट के।"

दलाल ने कहा। वह सद्दू भाई की जितनी बीड़ियाँ बिकवाता था, उनसे उतना कमीशन ले लेता था। "नहीं नहीं, शिकायत तो कोई नहीं – न जाने क्यों यह मोर छाप बीड़ियों का दिमाग चकरा गया है, जंगल और खेतों में जाना चाहती हैं। बिकने से मना कर रही हैं।" बड़े मियाँ ने कहा। और चारों बंडल दलाल को वापिस कर दिए।

दलाल बंडल लेकर सद्दू भाई के पास वापिस करने चला। वह चार चौकड़ी – बड़ी खुश थी, चलो दुकान से तो छुटकारा मिला। परन्तु सद्दू भाई के ऑफिस में उन्हें एक अलमारी में पटक दिया। दो हफ्ते वह ऐसे ही बंद रहे। सद्दू भाई ने तो जंगल में तेंदू पत्तों का ठेका लिया था और पत्ते तुड़वाने का काम जारी था। वह तो एक- दो घंटों के लिए आते और फिर चले जाते। चार चौकड़ी पर क्या ध्यान देना था। सुनसान अंधेरी अलमारी में चारों बंडल अपने कारखानें के दिन याद करने लगे। बड़े खान की दुकान पर पहुँचने से पहले वे सद्दू भाई के कारखानें में ही तो थे।

उफ़! कारखाने का वो गरम-गरम तंदूर वाला कमरा और दूसरी तरफ छटाई और पेकिंग वाले कमरे। पुरानी यादें ताज़ा करते हुए एक बंडल में से एक सुंदर लंबी बीड़ी बोली- "जब हम बन कर छटाई वाले काका के कमरे पहुँचे थे, हमारा दिल घबराने लगा था। कहीं

काका हमारी छटनी नहीं करदें। फिर तो बेकार दाम पर बिकेंगे। छटाई वाले काका ने बाएं हाथ में हमें लिया जैसे कि हमें बारीकी से मन में तौल रहे हों। फिर धीरे से कंचे की तरह हथेली पर लिया अपनी तीखी नज़र से हमें घुमा-फिरा

के परखा, हमारे एक साथी को बंडल के बीच में से खींचा और अपनी उँगलियों में घुमाया। अपना सिर हिलाते हुए काका ने उसे वापिस डाल दिया और हमें पास कर दिया। काका भी मज़ेदार आदमी हैं। चौकड़ी मारकर बैठे रहते हैं और बंडलों को नचाते रहते हैं। उनकी तरह एकटक नज़र रखना और घंटों वही काम करना कोई मामूली बात नहीं है। बाजू वाले कमरे में हम पर कागज़ का लेबल चिपका दिया गया। सद्दू भाई के दफ्तर में अलमारी के अंदर बंद बीड़ियों का बंडल अपनी कहानी सुनाने लगा तो सुनाता ही गया। एक बंडल से आवाज़ आई, " याद है जब हम तम्बाकू भर के, बंध के तैयार हो गए थे, तो सद्दू भाई के कारखाने में लाए गए थे। भला किसलिए ? इसलिए लाए गए कि हमारी सिकाई की जा सके। सिकने के लिए हमें गरम-गरम तंदूर में झोंक दिया गया था। तंदूर में हम बिल्कुल पक गए थे। और उसके ऊपर गर्मी के दिन।

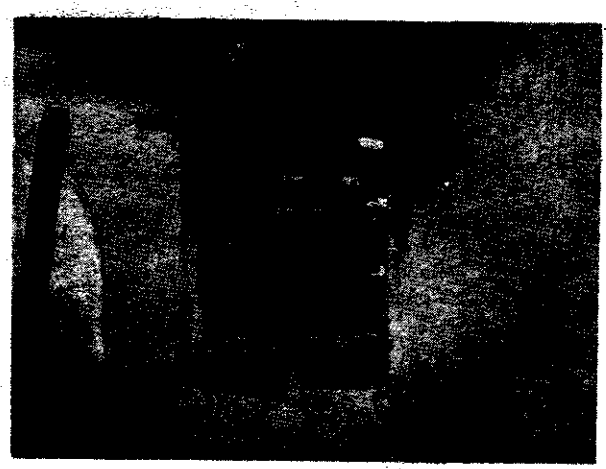

जो मजदूर हमें अद्दी (ट्रे) में लगाकर तंदूर में सिकने के लिए रखता था, वह तो पसीने से लथपथ हो जाता था। तंदूर के पास खड़े रहना आसान काम नहीं था पर उसे तो खड़े रहना पड़ता था। बीच-बीच में हम बीड़ियों को पलटना पड़ता था ताकि हम चारों तरफ से ठीक से सिक जाएं। हम सिक जाते तो हमें निकाल कर दूसरी बीड़ियों की अद्दी तंदूर में रखनी पड़ती। हाँ, उन मजदूरों को तो गर्मी में खड़े ही रहना पड़ता था। सेंकने वाले मजदूर हों या चटाई करने वाले या पेकिंग करने वाले सबको दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती है। कभी बीमार हो जाएं और न आ पाएं तो उस दिन के पैसे गए। हमने तो उन्हें तब भी काम पर आते देखा है जब वे बुखार में तप रहे होते हैं।"

ये बातें चल ही रही थी कि अलमारी के अन्दर बन्द मोर छाप बीड़ियों को एक आवाज़ सुनाई दी। उनका मालिक सद्दू

भाई खर्राटे भरके सो रहा था। जंगल से तेंदू पत्ता तुड़वाने का काम खतम हो गया था। उसने खूब सारे तेंदू पत्ते जमा कर लिए थे। वह बंगलौर शहर से तंबाकू भी मंगवा चुका था। और पत्ते, तंबाकू व धागा जुटाने के बाद वह यह सब चीजें सट्टेदार मुरीम को दे चुका था।

सट्टेदार मुरीम उनके लिए बीड़ियाँ बनवा कर देता था। जितनी बीड़ियाँ बनवाता था उस हिसाब से पैसे ले लेता था। यह सब इन्तज़ाम करने पर, सद्दू भाई चैन से सो रहे थे।

जब उनकी आँख खुलीं तो उन्होंने उठकर अलमारी खोली। अलमारी में बीड़ियों के चार बंडल देखकर मुनीम से पूछने लगे- "यह चार बंडल अलमारी में क्यों रखे हैं?"

"बिकने से मना कर रहे हैं।" मुनीम ने कहा। उसने सारी बात बताई। सद्दू भाई बोले- "भेज दो इन्हें सट्टेदार के पास वापिस। उसने कैसी बीड़ियाँ भरवा के दी हैं। हमारे तो पैसे ही बेकार गए। उससे इन बउलों के पैसे वसूल कर लेना मुनीम जी।"

> अरे! अरे! बीड़ियाँ कितने लोगों के हवाले की जाएंगी।
> कोई उन्हें आजाद ही नहीं करता।
> अभी तक किन-किन लोगों के हवाले हो चुकी हैं बीड़ियाँ-

फिर चार-चौकड़ी मुरीम सट्टेदार के पास पहुँच गई। सट्टेदार सिर पर हाथ मारते हुए बोला "क्या ज़माना आ गया है, बीड़ियां आवाज़ उठाने लगीं हैं। इनकी तो पहले ही छटनी कर देता तो परेशान न करती।"

तीसरा बंडल यह बात न सुन सका, और चिढ़ते हुए बोला, "और तुम करोगे क्या; भाव में रिवच-रिवच, यहाँ छटनी वहाँ छटनी।"

बौखलाते हुए सट्टेदार तीसरे बंडल से बोला "किसने बनाया है तुम्हें?"

तीसरे बंडल ने जवाब दिया, "हमीना की अम्मी ने।"

सट्टेदार ने आवाज लगाई, "अरे, अब्दुल बुला लाओ हमीना को।"

अब्दुल बड़ा खुश था। चलो, दुकान से निकलने का मौका तो मिला। सट्टेदार की दुकान पर तो काम से फुरसत नहीं मिलती। दिन भर बीड़ी बांधने औरतें आती रहती हैं। उनको देने के लिए तंबाकू तोलो, पत्तों की गड्डियां जमाओ, धागा निकालो। तमाम काम रहते हैं। पर यहाँ खतम तो नहीं हो जाते अब्दुल के काम।

औरतें सब सामान घर ले जाकर बीड़ियाँ बना कर लाती हैं। सट्टेदार उन बीड़ियों की जाँच करता है- अच्छी बीड़ियाँ छांटता है। जब वह छटाई कर ले तो अब्दुल छटी हुई बीड़ियों को अलग कोने में जमाता है। सुरीम उसे दिन भर की मज़दूरी देता है। एक दिन या आधा दिन भी छुट्टी करी नहीं कि पैसे गए। आज दुकान के सब झंझट से उसे भागने का मौका मिल गया तो अब्दुल खुश क्यों न हो? गली पर उतरते ही अब्दुल ने कपड़े झटके, और सीटी बजाता हुआ गली मुड़ने लगा-

तेंदु की पत्ती गज़ब
किय्यो भाई
बीड़ी किसने बनाई।
तांती जलेबी, दूधा के लड्डू —
जेबत के बेरा
आ गए सिपाही
बीड़ी किसने बनाई।
तेंदु की पत्ती ने गज़ब
किय्यो भाई
बीड़ी किसने बनाई।

हमीना का घर सड़क के दूसरे कोने पर था - दुकान से बिल्कुल सीधा, पर रोड से सीधे चलने का क्या मज़ा?

गलियां छानता हुआ अब्दुल हमीना के यहाँ पहुँचा। अब्दुल ने हमीना को आवाज़ दी लेकिन हमीना सोच रही थी अपने

पुराने घर के बारे में – "वह सरकारी ज़मीन जहाँ से सरकार ने अब्बा को हटाया था, वहाँ तो अब दफ़्तर बन गए हैं। यह कैसी जगह आकर रहना पड़ा है हमें। यहाँ तो नल, पानी, संडास सब कुछ की कमी पड़ती है।"

"हमीना जीजी, अम्मी से कहना चचा बुला रहे हैं, दुकान पर, जल्दी आना।" घर के सामने से अब्दुल ने पुकारा।

हमीना ने अपनी अम्मी को जाकर बताया तो अम्मी सोच में पड़ गई – "सट्टेदार साहब क्यों बुला रहे हैं? न जाने क्या बात है?"

हमीना अम्मी के साथ सट्टेदार की दुकान पर पहुँची। मुरीम सट्टेदार ने मुँह बना लिया, बोला – "क्यों री हमीना की अम्मी ठीक-ठाक बीड़ी नहीं बना सकती? मालिक ने यह बंडल लौटा दिए। रख इन्हें अपने पास। कंबख्त बीड़ियों के पत्ते और तंबाकू और धागा तक बिकने से इनकार कर रहे हैं। अब मैं इनका क्या अचार डालूंगा। घर ले जाकर इनका दिल बहलाना। मैंने तेरे हिसाब में से पैसे घटा लिए हैं।"

फिर मुरीम सट्टेदार का ध्यान दूसरी ओर चला गया। हमीना ने चुपके से अपनी जीभ दिखाई। अब्दुल कोने से देखकर मुस्कुराया।

> बीड़ियों को अपने 'घर' लौटने की लगी है
> और उधर लोगों को उनकी वज़ह से पैसे का
> नुकसान हो रहा है।
> पर वाकई किसका नुकसान हुआ?
> पान वाले का? दलाल का? मालिक का? सट्टेदार का?
>
> या हमीना की अम्मी का?

हमीना और उसकी अम्मी हमीदा बी बीड़ियों को घर ले आईं। घर आकर उन्होंने बीड़ियों की कहानी सुनी कि कैसे वे जंगल और खेतों को लौट जाना चाहती हैं। हमीदा बी ने उनसे कहा – "जंगल और खेत तो तुम जा नहीं सकती। वहाँ तो तुम्हें अलग-अलग होकर जाना पड़ेगा और वहाँ तक पहुँचना दूर भी पड़ेगा। अब तुम तो हमारे पास यहीं रह जाओ। यहाँ हमारे पास रहोगी तो कोई नहीं बेचेगा तुम्हें।"

चार चौकड़ी कुछ क्षण के लिए तो निराश हो गई। लेकिन हमीना और उसकी अम्मी को देख फिर मुस्कुरा दिए। कितनी अच्छी है हमीना और हमीदा बी! उन्हें सट्टेदार पर गुस्सा आने लगा। हमीना और अम्मी कितनी मेहनत से बीड़ियाँ बनाती हैं। सट्टेदार 1000 बीड़ी बनाने का उन्हें सिर्फ 6 रुपया देता है जबकि सरकारी भाव तो 9 रुपए 45 पैसे था।

हमीना की अम्मी हमीदा बी, सुबह-सुबह उठकर पत्तों को गलाने रख देती हैं। फिर घर का काम-काज निपटा कर, कुछ देर बाद अपनी सूपी जमाती हैं। सूपी में पत्ते, धागा, तंबाकू जमा कर एक टोकनी और एक कैंची अलग ले कर बैठ जाती हैं।

सूपी, टोकनी, धागा, कैंची, पत्ते, तंबाकू
ये सब हमीदा बी के पास कैसे आया?
इनमें से उनकी अपनी चीज़ें क्या हैं?

हमीदा बी बीड़ी बनाना शुरू करती है। बीच-बीच में कभी छोटे मुन्ने को संभालने चली जाती है, कभी-कभी सब्ज़ी बघारने। बीड़ी बनाने के लिए वे पहले पत्तों को काटती हैं, फिर उनमें तंबाकू भरती हैं। तंबाकू पत्तों पर एक समान फैलाना पड़ता है - न बहुत ठुँसा-ठुँसा न ही बहुत खाली-खाली। सट्टेदार हज़ार बीड़ियों के लिए तंबाकू तौल कर देता है। अगर उतनी तंबाकू में हज़ार बीड़ियाँ बनाकर सट्टेदार को नहीं दीं तो वह कहेगा कि तुमने तंबाकू चुराई है और उसके पैसे ले लेगा।

हमीदा बी को देखकर चार-चौकड़ी गुन-गुनाने लगी-

पत्ते को काटा
ज़र्दे से भरा-
पीछे से मोड़ा
आगे से टोका

धागे से लपेटा
और सिकने को भेजा
चुटकी की बीड़ी
सलाई की बीड़ी
ले जा भई लेजा
सारी की सारी

हमीदा बी को बीड़ियों के ये गाने बड़े पसंद आए। गाने सुनकर उनका सिर भी कम दुखता, जो तंबाकू के कारण कभी-कभी जकड़ जाता था। लेकिन खाँसते-खाँसते वह थक जाती है। फेफड़ों में तंबाकू के छोटे-छोटे कण चले जाते हैं। हमीदा बी को डर था उसे टी. बी. न लग जाए। काटने, भरने, बाँधने के कामों में लगातार एक टक देखते-देखते हमीदा बी की आँखे दुखने लगी हैं।

चार चौकड़ी हमीदा बी से कहती "सुस्ता भी लो बी। घर का काम भी करती हो, फिर बीड़ी बनाने बैठ जाती हो। आराम भी करो।" हमीदा बी जवाब देती - "आज तो सिर्फ 200 बीड़ियाँ बन पाई हैं। जितनी बना लूँगी, उतने पैसे मिलेंगे। पैसों की भी तो जरूरत है न।" चार चौकड़ी सोचने लगती - बीड़ी फूंकने वालों! ज़रा बनाने वालों की तरफ मुड़ कर भी तो देखो, तब तुम्हें उनकी मेहनत का अहसास होगा।

हमीदा बी की तरह भोपाल की सैकड़ों औरतें अपने घर पर बीड़ियाँ बनाती हैं। इसकाम में उनके परिवार वाले भी हाथ बटाते हैं। भोपाल शहर में बीड़ी बनाने के काम में लगभग 6000 लोग लगे हैं। ये लोग मुरीम साहब जैसे सट्टेदारों से तंबाकू, पत्ता, धागा ले आते हैं और घर पर बीड़ी बनाकर सट्टेदार को वापिस करते हैं। सट्टेदार हमीदा बी जैसे कई लोगों से बीड़ियाँ बनवाकर सद्दू भाई जैसे लोगों को वापिस करता है। सट्टेदार को तंबाकू, धागा, पत्ता सद्दू भाई जैसे 'मालिक' ही देते हैं। सद्दू भाई जैसे लोग जंगल का ठेका लेकर पत्ते तुड़वाते हैं और तंबाकू व धागे का इन्तज़ाम करते हैं। वे यह सब सट्टेदार को दे देते हैं। सट्टेदार बीड़ियाँ बनाने वालों से बीड़ी वापिस ले लेता है। कुल बीड़ियों का 5% कम करके 1,000 बीड़ी के हिसाब से उन्हें भुगतान कर देता है। यानी 1050 बीड़ी के बनाने वालों को 1000 बीड़ी के पैसे मिलते हैं।

ये बीड़ियाँ सट्टेदार मालिक को दे देता है। मालिक उनकी छटाई करवाता है। जो बीड़ियाँ उन्हें ठीक नहीं लगती उसे सट्टेदार को वापिस कर देता है। सट्टेदार को प्रति हज़ार बीड़ियों के हिसाब से कमीशन देता है।

— बताओ, छटाई से घाटा किसे होता है?

फिर मालिक अपने कारखाने के तंदूर में बीड़ियों के बंडल सिकवाता है। सिकवाने के बाद बंडलों पर कागज चढ़वाता है और फिर अपने छाप का लेबल चिपकवाता है। इस सब काम के लिए उसने 4-5 मज़दूर रखे है।

बीड़ियाँ तो बन गईं, अब इन्हें बेचा कैसे जाए? इसके लिए बीड़ी कंपनी मालिक कई दलाल रखता है। ये दलाल इस कंपनी की बीड़ियाँ दूर-दूर के गाँवो व शहरों तक पहुँचाता है। दलाल मालिक से बीड़ियां लेकर उन्हें बिकवाने का काम करता है। इसके लिए वह मालिक से कमीशन लेता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. बीड़ी का कच्चा माल क्या-क्या है?
2. जो लोग बीड़ी बनाते हैं और जो लोग बीड़ी की सिकाई करते हैं, उनकी मज़दूरी के भुगतान के तरीके में क्या अन्तर है?
3. बीड़ी के उद्योग में मालिक स्वयं मजदूर रखकर कौन-कौन से काम करवाता है?
4. बीड़ी बनाने और बेचने के काम में कौन-कौन लगे हैं? नाम लिखो।
5. मालिक किस-किस को पैसे देता है?
6. सट्टेदार किसे-पैसे देता है?
7. बीड़ी बनाने वालों को किस तरह की बीमारियाँ होती हैं?
8. नीचे दिए गए कथन बीड़ी बनाने के सही क्रम में लिखो।
   (i) घर में लोगों ने बीड़ी बनाकर सट्टेदार को वापिस दी।
   (ii) सट्टेदार ने तेंदू पत्ता, तंबाकू और धागा बनाने वालों को बाँटा।
   (iii) सट्टेदार ने 1000 बीड़ी के 6 रु. के हिसाब से बीड़ी बनाने वालों को पैसे दिए। छंटाई के पैसे काट लिए।
   (iv) सट्टेदार ने मालिक तक बीड़ियाँ पहुँचाई और अपने पैसे ले लिए।
   (v) मालिक ने छटाई करवाई और तंदूर में उन्हें सिकवाया।
   (vi) तेन्दू पत्ता, तंबाकू और धागा सट्टेदार को दिया।

(vii) बीड़ी के बंडल पानवाले को दिए।
(viii) सिकवाने के बाद बंडल बनवाए और अपना लेबल चिपकवाया।
(ix) मालिक ने तंबाकू और धागा खरीदा।
(x) तेन्दूपत्ता जंगलों से ठेके पर तुड़वा कर मालिक अपने यहाँ ले आया।

चमड़ा बनाने की कहानी 3

बाज़ार में चमड़े की बनी विभिन्न वस्तुएं जैसे जूता, बैग सूटकेस, खेलने की गेंद, आदि तो देखने को मिलती हैं परन्तु चमड़ा कैसे बनता है, हमको देखने का मौका नहीं मिलता। अपनी उत्सुकता को हल करने के लिए एक बार हम चार मित्रों ने घर की गली में बैठे मोची से पूछा कि वह चमड़ा कहाँ से लाता है। बक्कू मोची ने जवाब दिया "बाज़ार से"। अपने सवाल को स्पष्ट करते हुए हमने पूछा – क्या हमारे शहर में भी चमड़ा कहीं बनता है? बक्कू मोची ने जवाब दिया- "बनता तो है लेकिन आजकल तो अधिकांशतः चमड़ा कानपुर, आगरा, कलकत्ता, मदुराई, मद्रास आदि से ही आता है। इन शहरों में अच्छा चमड़ा तैयार करने के आधुनिक कारखाने हैं। सस्ते किस्म के जूते बनाने वाले हम जैसे कुछ छोटे कारीगर ही भोपाल शहर के छोटे कारखानों में बना चमड़ा इस्तेमाल करते हैं।" मन की उत्सुकता को तुरन्त खत्म करने के लिए हमने बक्कू मोची से निवेदन किया कि वह हमें किसी ऐसे जानकार व्यक्ति से मिलाएँ जो हमें शहर में चमड़े के छोटे कारखाने के बारे में जानकारी दे सके। गली में रह रहे बुज़ुर्ग कारीगर काका के पास हमें बक्कू मोची ले गया। कारीगर काका बहुत सालों से चमड़े के एक कारखाने में काम कर रहे थे। काका हमें अपने कारखाने ले गए। काका ने हमें बताया कि कच्ची खाल से चमड़ा बनाने तक खाल पाँच मुख्य प्रक्रियाओं से गुज़रती है।

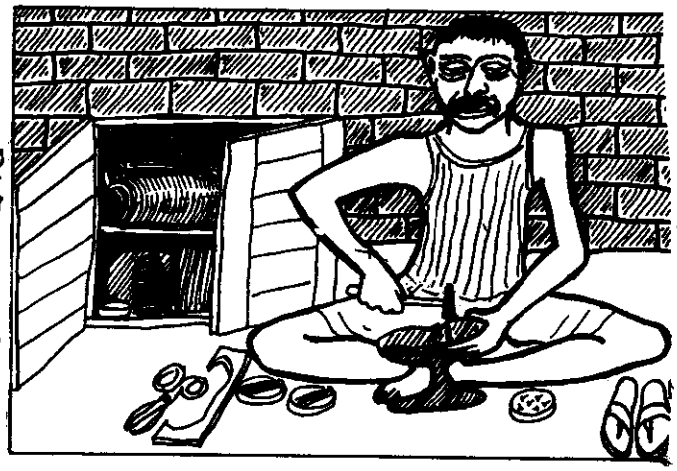

सफाई → बाल निकालना → चूना काटना → कमाना → मुलायम और लचीला बनाना

1 **सफाई :** कच्ची खाल पर मिट्टी, खून आदि लगा रहता है। इसे साफ करने के लिए खालों को पानी में भिगोकर धोया जाता है।

2. **बाल निकालना :** फिर खाल को चूने के पानी में भिगो देते हैं। कुछ दिन बाद एक छोटे फावड़े से बाल निकालते हैं।

3. **चूना काटना :** खाल को कमाने के लिए यह ज़रूरी है कि उसमें चूना न रहे। चूने का असर निकालने के लिए खाल को अम्ल से धोया जाता है।

4. **कमाना :** यह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। कमाने से चमड़ा लचीला मजबूत और टिकाऊ बनता है।
बबूल की छाल का घोल बनाकर खाल को इसमें कई दिनों तक रखते हैं। बीच-बीच में उसे पलट देते हैं ताकि घोल पूरी खाल में फैल जाए।

5. **मुलायम और लचीला बनाना :** कमाने के बाद चमड़े को एक बड़े ड्रम में डालकर तेल, पानी और गुड़ मिलाया जाता है।

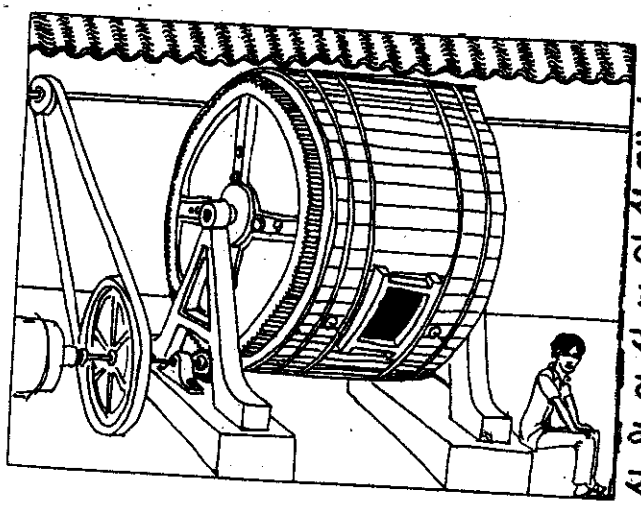

इस ड्रम को मोटर द्वारा घुमाया जाता है। ड्रम से निकालकर एक खास तरीके से घिसने से चमड़ा मुलायम और लचीला बन जाता है।
इस सारी प्रक्रिया में कुल मिलाकर एक चमड़ा तैयार करने में 35 दिन लगते हैं। काका ने कहा - इस कारखाने में सभी काम मज़दूर हाथ से करते हैं जिससे एक मज़दूर प्रति-दिन 20-25 खाल से अधिक तैयार

नहीं कर पाता। आधुनिक कारखानें में तो 100 से 150 खाल तैयार हो जाती है। इन कारखानों में बाल निकालना, कमाना और मुलायम बनाने के लिए मशीनें हैं। काका ने हमें सचेत किया कि वह जो हिसाब किताब बता रहे हैं वह गाय और भैंस की खाल के लिए है। एक दिन में बकरे की कहीं ज्यादा खाले तैयार हो सकती है।

सामने एक व्यक्ति खालों को एक के ऊपर एक रखे आ रहा था। खाल को सुरक्षित रखने के लिए खालों पर नमक छिड़कते और फैला देते। काका ने बताया 'यह सब माल कलकत्ता जाएगा। अच्छा माल है इसलिए अगर वह मशीनों द्वारा और कुछ विशेष रासायनिक क्रियाओं से तैयार होगा तो बेहतर और मुलायम चमड़ा बनेगा। इस कारखानें में तो हम थोड़ी खराब खाल का ही चमड़ा पकाते हैं क्योंकि हमारे कारखाने में चमड़ा पकाने की प्रक्रिया इसी के लिए उचित है। इसलिए यह सब अच्छी खालों को हम नमक लगाकर कलकत्ता, बम्बई, कानपुर या मद्रास भेजते है, जहाँ आधुनिक कारखाने हैं। इस काम के लिए भोपाल में भी कुछ व्यापारी हैं जो खाल को इन कारखानों तक पहुँचाने का काम करते है

— काका के कारखाने में चमड़ा को तैयार करने की आधुनिक तकनीक (जिससे अच्छा चमड़ा तैयार किया जाए) क्यों नहीं लगाई जाती? आपस में चर्चा करो।

अच्छे बुरे खालों का क्या मतलब है? हमने पूछा।

'यह देखो, सब खालें खराब थीं' सामने की तरफ इशारा करते हुए काका ने कहा।

खाल तब खराब होती है जब जानवरों को ठीक तरह खाने को न मिले।

कभी- कभी मरे हुए जानवरों को

घसीट कर गाँव के बाहर पटक दिया जाता है जिससे जानवरों की खाल घिल जाती है। और कभी-कभी अन्य जानवर जैसे कुत्ते-भेड़िए, मरे हुए जानवर का मांस खा जाते हैं, और खाल को नष्ट कर देते हैं।

तभी हमें याद आया कि हम यह समझना तो भूल ही गए कि शहर तक खाल कैसे पहुँचती है। काका ने बतलाया कि हमारे मालिक आमतौर पर खाल व्यापारी के माध्यम से खरीदते हैं। यह व्यापारी गाँव में चमड़े का काम करने वाले लोगों से खाले इकट्ठी करता है। इन व्यापारियों को यह काम करने के लिए पंचायत या ज़िला परिषद से अनुमति लेनी पड़ती है। कभी गाँवों में चमड़े का काम करने वाले लोग सीधे कारखाने के मालिक के पास कुछ खालें इकट्ठी करके ले आते हैं। एक खाल 35 से 45 रु. में मालिक खरीदते हैं।

- तुम्हारे गाँव में जब ढोर मरते हैं तो उनकी खाल का क्या होता है?
- क्या खाल किसी कारखानें में भेजे जाते हैं या फिर तुम्हारे गाँव में ही उनका चमड़ा बनाकर जूते, ढोलक तैयार किए जाते हैं?
- यदि खाल कारखाने को बेचे जाते हैं तो उनकी क्या कीमत मिलती है?

चमड़ा बनाने के बारे में इतनी सारी जानकारी पाकर हम तो अपने आपको चमड़ा बनाने का विशेषज्ञ ही समझने लगे। बात बदलते हुए हमने काका से अपने बारे में और कारखाने में काम कर रहे अन्य मजदूरों के बारे में भी बताने को कहा -

काका शुरू हो गए, 'हम कारखाने पर सुबह 9-8.30 बजे आ जाते हैं और शाम को 5 बजे तक रहते हैं। चमड़े को साफ़ करना, उसको मुलायम करना सभी ऐसे काम कारखानें में काम कर रहे हम दो ही मज़दूर हाथ से करते हैं। चमड़े के काम में काफी गंदगी में रहना पड़ता है। दिन भर गंदे पानी में खड़े रहना पड़ता है और साथ में बदबू भी सहनी पड़ती है। इसी गंदगी की वज़ह से गाँव में चमड़े का काम करने वाले लोग भी यह काम छोड़कर दूसरा काम करना चाहते हैं। जब तक इस

धंधे से पेट पाल सकते तब तक काम भी कैसे छोड़ें? फिर इस क्षेत्र में खूब प्लास्टिक के जूते बाज़ार में आने लगे और इन सस्ते जूतों की वजह से चमड़े का यह धंधा भी कम हो गया। यहाँ के गाँवों के कई लोगों ने इसलिए यह काम छोड़ दिया।" कहते-कहते काका गुनगुनाने लगे—

एक था चमड़ा
दो थे मोची
काटते-मारते
मोड़ते-जोड़ते
बनाते जाते
मज़बूत जूते
ढोते-छीलते
ध्यान से 'कमाते'
सारा काम
वे ही करते
आया प्लास्टिक
कहते 'चलहट'
क्यों करता है चमार
गंदा खट-पट
छोड़ो पकाना-कमाना
अब तो रबर-प्लास्टिक
रेगज़ीन का है ज़माना ●

हमने बीच में ही टोकते हुए कहा कि इस परेशानी से बचने के लिए तो मालिक से आपको हाथ में पहनने वाले दास्ताने और प्लास्टिक के जूते आदि मांगना चाहिए साथ ही आजकल तो चमड़ा बनाने की ऐसी मशीनें आ गई हैं जिससे बदबू आदि से तो बचत हो जाती है। हमारी बात को समझते हुए काका बोले, मालिक, हमारी सुविधा का इतना ध्यान कहाँ रखते हैं? और स्वयं मांग करें तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। हमें 15-20 रु० रोज़ मिल जाते हैं यही बहुत है। पास की झुग्गी—झोपड़ी में रह कर हम जैसे-तैसे गुज़र-बसर कर लेते हैं। गाँव में भी जीवन काटना मुश्किल था। खेती से पूरा नहीं पड़ता था

और दूसरा कोई काम था नहीं।

– क्या कारखाने में काम करने की साधारण सुविधाएं मांगने पर सचमुच काका जैसे मज़दूरों को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है? क्यों? चर्चा करो।

काका से बात करके लौटते हुए हम सोचने लगे कि बीड़ी के बनने में तो मालिक सट्टेदार के माध्यम से बीड़ी बनाने वालों को घर पर ही तेंदु पत्ता, तंबाकू और धागा दे देता था। चमड़े के उद्योग में ऐसा नहीं होता? मज़दूरों को सुबह से शाम तक कारखाने में ही काम करना पड़ता है। बीड़ी बनाने वालों को एक हज़ार बीड़ी पर पैसे मिलते हैं। जबकि चमड़ा उद्योग के मज़दूरों को रोज़ के हिसाब से मज़दूरी मिलती है।

— क्या चमड़े का काम भी घर-घर में दिया जा सकता है?

— चमड़े के काम में प्रति चमड़े के हिसाब से क्यों पैसे नहीं दिए जाते?

— बीड़ी के उद्योग और चमड़े के उद्योग में ये अन्तर क्यों है?

गुरुजी से इन बातों पर चर्चा करो।

अभ्यास के प्रश्न

1. खाल से चमड़ा तैयार करने की पूरी प्रक्रिया क्रमवार लिखो।
2. भोपाल के चमड़ा कारखानें में ये काम कौन करता है?
3. बीड़ी बनाने का काम कर रहे लोगों और चमड़ा पकाने का काम कर रहे लोगों की मजदूरी का भुगतान क्या एक ही तरीक़े से होता है?
4. चमड़े का काम करने वाले मज़दूरों को क्या परेशानी होती है?
5. चमड़े का धंधा क्यों कम हो गया है?

कारख़ानों में क्या होता है ? 4

भोपाल का एक बड़ा कारख़ाना

पिछले अध्याय में तुमने चमड़ा पकाने के कारख़ाने के बारे में पढ़ा था। अगर तुम्हें याद हो तो बीड़ी उत्पादन के लिए हमने कारख़ाना शब्द का उपयोग नहीं किया था। ऐसा क्यों? शायद इसका मतलब यह हुआ कि हम कारख़ाना शब्द का इस्तेमाल हर जगह नहीं कर सकते हैं। कारख़ाने से हमारा क्या मतलब है?

तुमने अक़्सर सुना होगा कि कारख़ाने में ढेर सारी चीज़ें बनती हैं। यह बात तुमने चमड़े वाले काका से कानपुर के चमड़ा कारख़ानों के बारे में भी सुनी। दूसरी बात जो आमतौर पर कारख़ानों के बारे में कही जाती है वह है कि कारख़ानों में मशीनें लगी रहती हैं। और तीसरी महत्वपूर्ण बात कि कारख़ानें में कई मज़दूर आकर काम करते हैं।

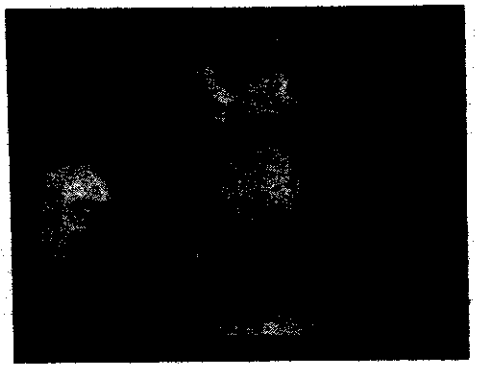

वास्तव में यही तीन बातें – काम करने की एक जगह जहाँ पर लोग आकर काम करते हैं, मशीनें और एक ही जगह पर ख़ूब सारा उत्पादन, यही कारख़ानों की पहचान है।

पर हम कारख़ानों पर इतना जोर क्यों दे रहे हैं? तुमने बुज़ुर्गों को कभी बात करते सुना होगा– "हमारे ज़माने में तो कारख़ानें थे नहीं। हाथ से सब चीज़ें बनती थी। अब ये कारख़ानों का माल - कपड़े, बर्तन सभी कुछ हर जगह पहुँच जाता है।" वास्तव में कारख़ानों के बनने से बहुत सारे परिवर्तन आए हैं। तरह-तरह की चीजें बनने लगी हैं। और हर चीज़ का उत्पादन इतना बढ़ गया है कि ये हर जगह पहुँच जाती हैं।

आमतौर पर धारणा यह रहती है कि मशीनों से उत्पादन बढ़ा है। बात तो सही है। मशीन एक बार चला दी जाए तो वह इतनी तेज़ काम करती है कि उसी समय में कई लोगों का काम कर सकती है। पर साथ ही कारखानों में कई सारे मज़दूरों के एक साथ काम करने से भी उत्पादन बढ़ा है।

मज़दूर मशीनों पर काम ज़रूर करते हैं पर मशीनें उनकी नहीं होती। वे जो चीज़ बना रहे हैं, वह भी उसकी होती है जिसकी मशीन है। इसलिए मशीनों के बन जाने से फायदा उसी का हुआ जो ये मशीनें खरीद सका। मज़दूर दिन भर काम करके अपना निश्चित वेतन ही कमाता है।

चमड़े के कारखाने में तुमने मज़दूरों को काम करते देखा और वहाँ बिजली से घूमने वाला ड्रम भी था। इसीलिए हमने उसे चमड़े का कारखाना कहा। पर बीड़ी तो घरों में बन रही थी। और उन्हें बनाने में किसी मशीन का भी उपयोग नहीं हो रहा था

— क्या तुमने बीड़ी बनाने की जो प्रक्रिया देखी उसे कारखानें का उत्पादन कह सकते हैं?

कारखाने एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़े होते हैं। एक कारखाना दूसरे कारखानों के लिए चीज़ें बनाता है या दूसरे कारखानों में बनी मशीनें व कलपुर्ज़े इस्तेमाल करता है। इस वजह से कारखाने एक दूसरे पर निर्भर होते हैं।

एक छोटा कारखाना तो तुमने देख ही लिया। अब चलें एक बहुत बड़े कारखाने में और देखें वहाँ की विशेषताएँ क्या हैं? कितने लोग यहाँ काम करते हैं? कैसे काम करते हैं? उन्हें क्या मिलता है? कैसी मशीनें हैं? यहाँ बनी चीज़ें कहाँ इस्तेमाल होती हैं?

यह कारखाना है भोपाल का <u>भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड</u> (अंग्रेज़ी में बी. एच. ई. एल. लोग इसलिए हिन्दी में इसे भेल भी कहते हैं)

इस कारखाने के शेड्स ही कई किलोमीटर में फैले हुए हैं। हवाई जहाज से लिया गया यह एक चित्र देखो -

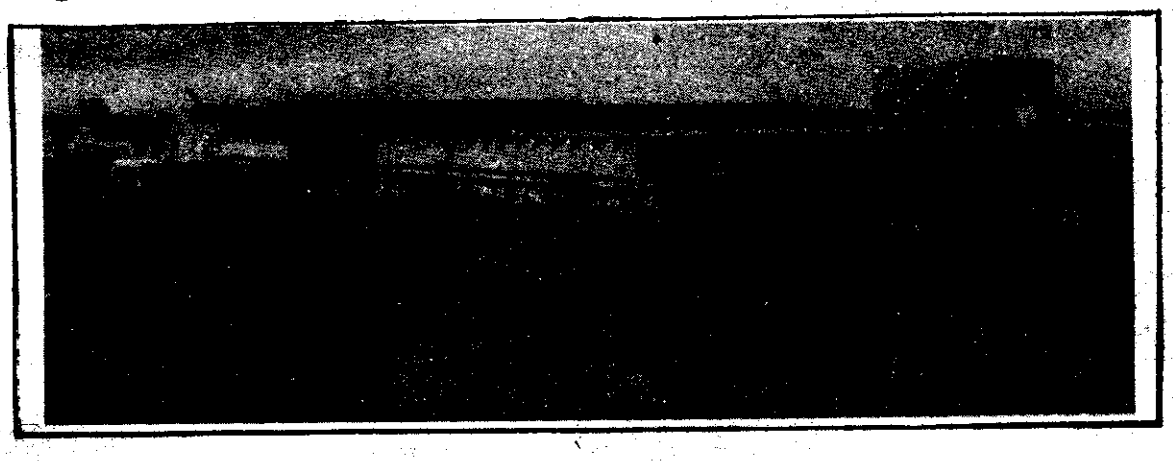

यहाँ पर बिजली की बहुत बड़ी-बड़ी मशीनें बनती हैं। पहले ज़माने में बिजली नहीं हुआ करती थी। आजकल कुछ ही गाँव ऐसे हैं जहाँ बिजली नहीं है।

'भेल' कारखाने में बिजली बनाने की मशीनें व एक जगह से दूसरी जगह बिजली पहुँचाने की भीमकाय मशीनें बनती हैं। बड़ी मात्रा में बिजली पानी या कोयले से बनाई जाती है। कोयले व पानी से बिजली बनाने के लिए जो मशीनें चाहिए वो मशीनें भेल में बनती हैं।

भारत में कुछ ही जगह बिजली बनाई जाती है पर सभी जगह पहुँच जाती है। बिजली के मोटे-मोटे तार और ऊँचे खंभे तो

तुमने देखे ही होंगे और तुम्हारे गाँव या शहर से कुछ दूर बिजली घर भी होगा। इनके माध्यम से बिजली एक जगह से दूसरी जगह से जाई जाती है।
मील में जो मशीनें बनती हैं उनके उदाहरण देखो —

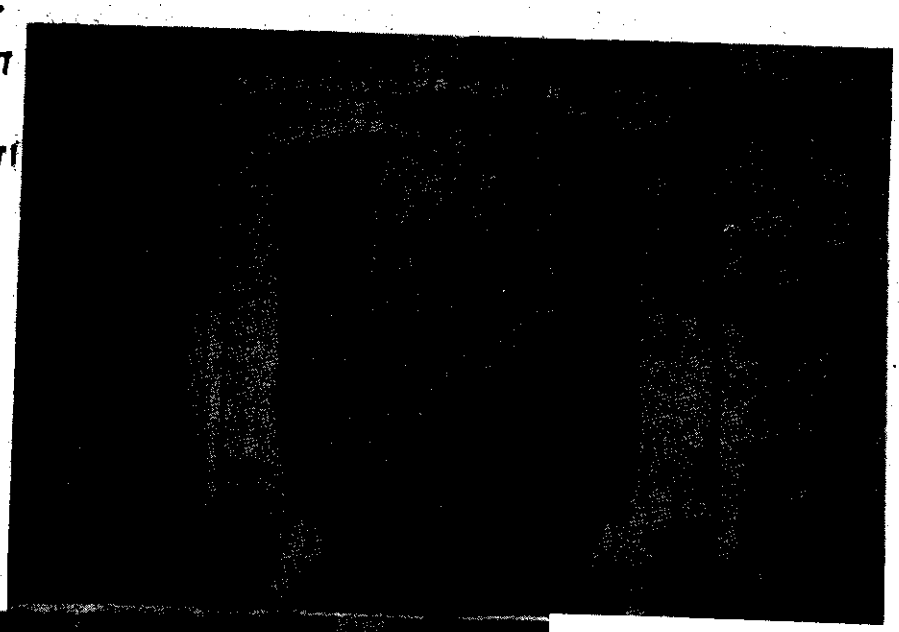

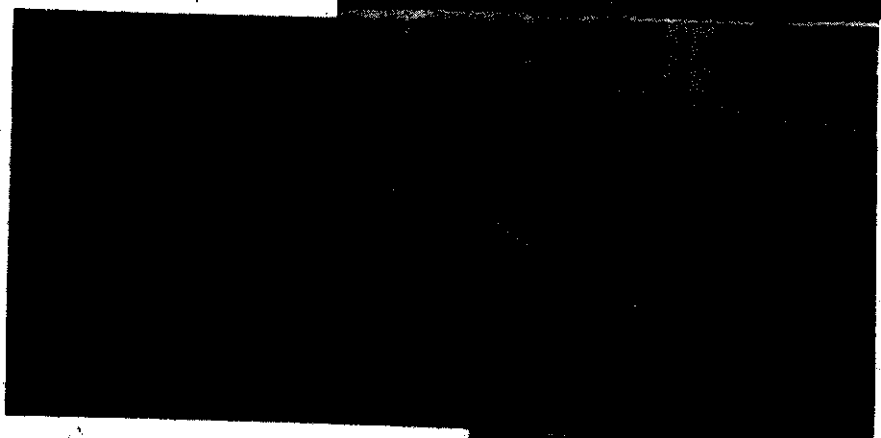

ये कितने बड़े हैं, तुम चित्र से ही अंदाज़ लगा सकते हो! जो आदमी काम कर रहे हैं उनकी तुलना में कितने गुणा बड़ी हैं —
अंदाज़ लगाओ.

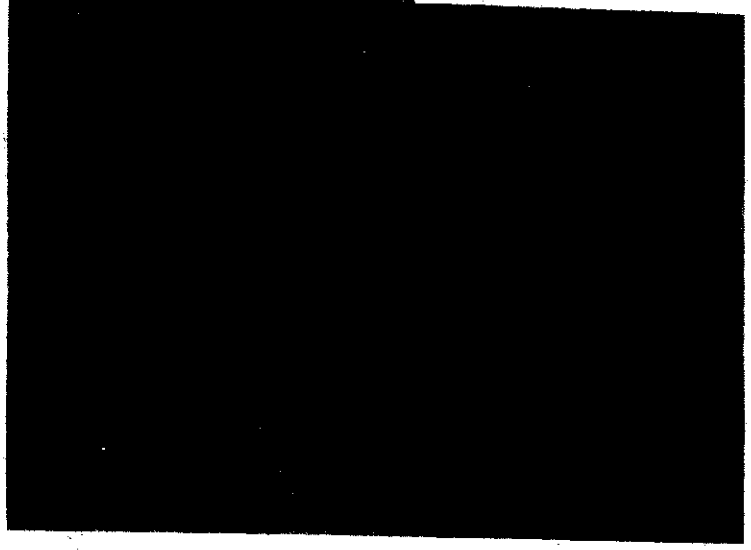

इन सब चीज़ों को बनाने के लिए अलग-अलग शेड हैं, अलग-अलग विभाग हैं।

भेल में काम करने वाले लोग:

इतनी बड़ी-बड़ी मशीनें बनाने के लिए भेल में 19,000 लोग काम करते हैं। ये लोग अधिकतर कारखाने के आसपास बने घरों में रहते हैं। मानों यह शहर के अन्दर बसा हुआ एक शहर है। इसलिए इस इलाके को भेल नगरी कहते हैं। 20 वर्ग किलो-मीटर में बसी इस नगरी में करीब डेढ़ लाख लोग रहते हैं।

अंदाज़ लगाने के लिए कि ये कितनी बड़ी नगरी है, अपने गाँव, कस्बे या शहर से तुलना करो –

— तुम्हारे गाँव / कस्बे / शहर में कितने लोग रहते हैं ?
— इस तरह तुम्हारे गाँव, कस्बे, शहर जैसे कितने गाँव एक भेल नगरी में समा जाएंगे ?
— यदि तुम बड़े शहर में रहते हो तो भेल जैसी कितनी नगरीयाँ मिलकर यह शहर बन सकता है ?

भेल में काम करने वाले 19,000 लोग श्रेणियों में बंटे हैं।

मैनेजर / इंजीनियर सुपरवाइज़र मज़दूर

तीनों श्रेणियों में औरतें भी काम करती हैं – औरतें इंजीनियर भी हैं, सुपरवाइज़र भी और मज़दूर भी।

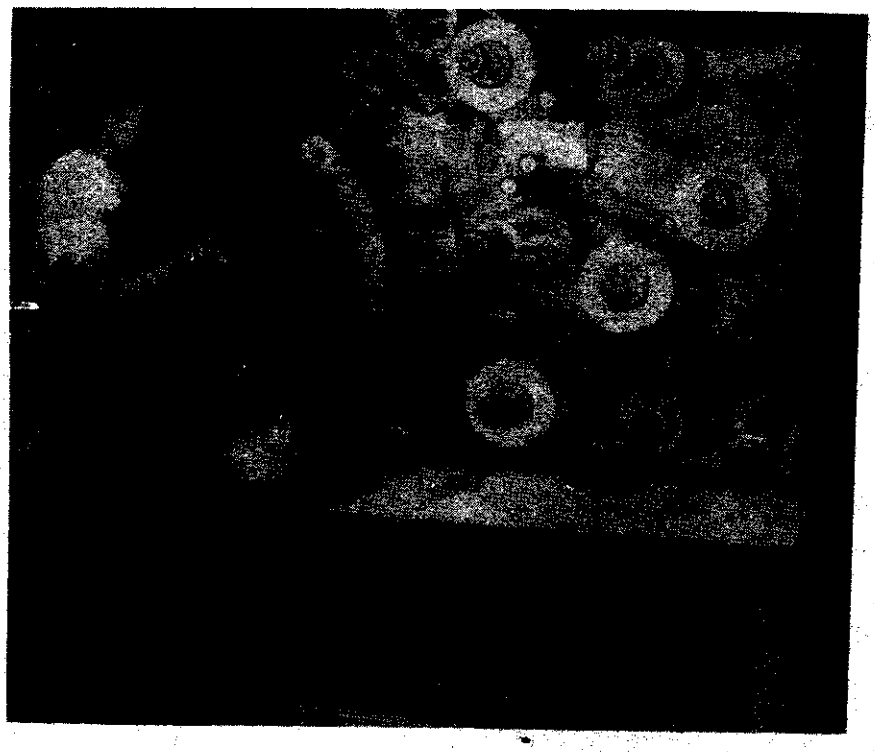

भेल में काम किस प्रकार होता है?

भेल को अलग-अलग आवश्यकताओं के लिए आर्डर मिलते हैं। जिस तरह की मशीनें भेल बनाती है उसका पूरा स्वरूप बनाना काफी कठिन है। फिर उसके लिए सामान खरीदना और फिर उसे बनाना। सभी काम करने पड़ते हैं। यह किस तरह से होता है, चलो एक मशीन के उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं—

बिजली वितरण की कुछ मशीनें होती हैं जो बिजली एक जगह से दूसरी जगह ले जाती हैं। इन्हें ट्रांसफारमर कहते हैं। ये ट्रांसफारमर विद्युत मंडल अपने पावर स्टेशन और सब-स्टेशन पर लगाने के लिए मंगाते हैं।

मानलो पंजाब विद्युत मंडल ने भेल के पास एक ट्रांसफारमर की मांग पेश की। यह मांग भेल का सेल्स या बिक्री विभाग ट्रांसफरमर विभाग को भेज देता है। ट्रांसफरमर विभाग में एक डिज़ाइन विभाग है, डिज़ाइन विभाग मंडल की आवश्यकता अनुसार ट्रांसफारमर का डिज़ाइन या नक्शा या रूपरेखा तैयार करता है। इस ट्रांसफारमर में क्या-क्या चीज़ें लगेंगी इसे भी वे इंगित करते हैं। इस काम के लिए विभाग में कई इंजीनियर हैं चूंकि अच्छी तकनीकी जानकारी के बिना यह काम संभव नहीं। एक बार डिज़ाइन विभाग से रूपरेखा तैयार हो गई तो मशीन के लिए सामग्री की खरीददारी और तैयारी होती है। बी॰ एच॰ ई॰ एल में बनने वाली मशीनों की सामग्री हज़ारों तरह की होती है। छोटी कील से लेकर कागज़, फेविकाल, पुट्ठा, प्लास्टिक, तार, धातु की शीट आदि। और इन्हें मंगाया जाता है हज़ारों छोटे-बड़े कारखानों से। कुछ माल विदेशों से भी आता है।

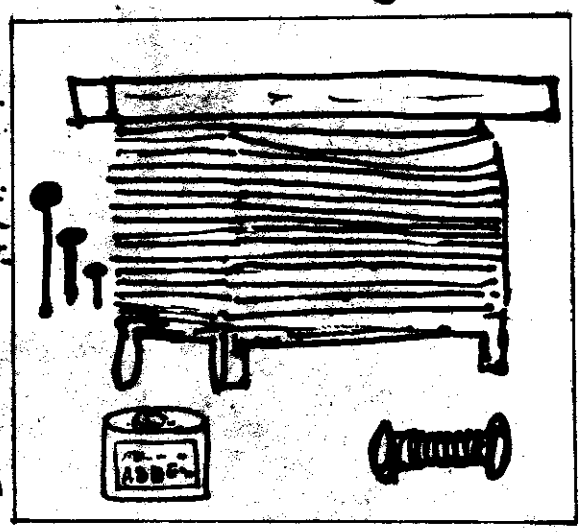

एक बार सामग्री की खरीददारी शुरू हो गई तो साथ-साथ उस पर क्या काम होना है, किसमें छेद करना है, किसमें खाँचे बनाने हैं, ये सब काम की तैयारी होती है। जैसे-जैसे माल आता है— उस पर काम शुरू हो जाता है। कुछ काटने-मोड़ने का काम बी॰ एच॰ ई॰ एल॰ मे होता है और कुछ बाहर छोटे कारखानों को दिया जाता है। भोपाल के ही गोविंदपुरा क्षेत्र में ही कई ऐसे कारखाने हैं।

ट्रांसफारमर के बनने में कई चरण होते हैं। हम यहाँ कुछ चरण दिखा रहे हैं।

ट्रांसफारमर के बीच के भाग में स्टील की पतली-पतली चादरें रख कर बाँधा जाता है यह कैसा कहलाता है।

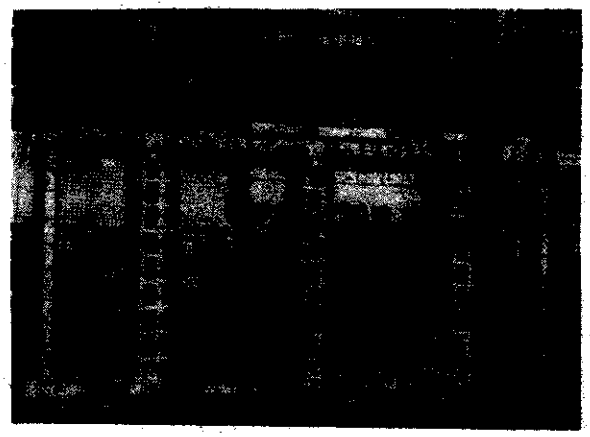

कोर तैयार होकर ऐसा दिखता है। यह ट्रांसफारमर पंजाब विद्युत मंडल (पंजाब स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड- पी. एस. ई. बी.) के आर्डर पर बनाया जा रहा है। इसके ऊपर कई परत कागज़-पुट्ठे लगाए जाते हैं। फिर ताम्बे या पीतल की पत्तियों को कागज में लपेट कर लगाया जाता है।

तुमने देखा होगा कि बिजली के तारों में ऊपर से कुछ कपड़ा या प्लास्टिक लिपटा होता है। यदि दो धातु के तार छू गए तो जल जाते हैं- हम कहते हैं 'शार्ट' हो गया। तो इन बड़ी मशीनों में जिनमें खूब बिजली प्रवाहित हो रही है उनमें धातु की पट्टियों या तारों को दूर रखने के लिए खूब अच्छी कागज व पुट्ठे की परतें लपेटी जाती हैं। इनके लिए कागज़ बड़े रोल में आते हैं और यहीं पर काटे जाते हैं।

जब ट्रांसफारमर तैयार हो जाता है तो उसे एक बड़े स्टील की टंकी में डाला जाता है।

और फिर तैयार मशीन का निरीक्षण होता है। भेल में निरीक्षण विभाग भी अलग है।

जब ट्रांसफारमर पूरी तरह तैयार हो गया तो इसे बिक्री विभाग के सुपुर्द कर दिया जाता है। हिसाब-किताब का अलग विभाग है, जो पूरा हिसाब-किताब रखते जाते हैं। यह हिसाब-किताब बिक्री विभाग को सौंप दिया जाता है।

बिक्री विभाग ने पंजाब विद्युत मंडल को सूचित किया कि उनका ट्रांसफारमर बन गया और ट्रांसफारमर को पंजाब रवाना कर दिया।

एक बार ट्रांसफरमर पंजाब पहुँचा तो सब स्टेशन में इस प्रकार लग गया।

अब यह बिजली वितरण के काम आएगा

मज़दूर और उसका काम

इन मशीनों को बनाने का काम करते हैं, भेल के 12000 मज़दूर। बारह हज़ार! अन्दाज़ा हो पा रहा है 12,000 लोग कितने होते होंगे? ये मजदूर रोज़ 8 घंटे काम करते हैं। और हर बड़े कारखाने की तरह यहाँ पर भी शिफ्ट या पाली में काम होता है।

किसी शेड में एक शिफ्ट में काम होता है, किसी शेड में दो शिफ्ट में तो कहीं 3 शिफ्ट में। पहली शिफ्ट शुरु होती है सुबह 8 बजे से शाम 4 बजे तक। दूसरी शिफ्ट शाम 4 बजे आकर रात 12 बजे तक काम करती है और तीसरी शिफ्ट रात 12 बजे से सुबह 8 बजे तक।

काम से लौटते हुए मज़दूर (शिफ्ट छूटने पर)

इस तरह भेल में कुछ जगह तो चौबीसों घंटे काम होता रहता है। ऐसा ही और कारखानें में भी होता है।

किसी भी कारखाने में वस्तु उत्पादन के लिए दो तरह के मज़दूरों की जरूरत होती है। कुछ तो तकनीकी काम करने वाले मज़दूर जो हाथ से या मशीन पर खास तकनीकी काम करते हैं, "इन्हें" कुशल या "स्किल्लड" मज़दूर कहा जाता है। और दूसरे सहायक मज़दूर जो सामान एक जगह से दूसरी जगह ले जाने, सफाई करने आदि का काम करते हैं।

भेल में भी दोनों तरह के मज़दूर हैं। सहायक मजदूरों को 900 से 1100 रु. प्रति माह वेतन मिलता है। कुशल मज़दूर और मशीन आपरेटर को 1200 से 1400 रु. प्रति मह। यहाँ पर अधिकांश

मज़दूर पक्के (परमानेण्ट) हैं। हाँ, शुरु में जब किसी भी मज़दूर को नियुक्त किया जाता है तो उसे कुछ सालों तक कच्चा या टेम्परेरी रखा जाता है।

कुछ तकनीकी काम यहाँ मशीनों से होता है तो कुछ हाथ से। मशीन पर काम करने वाले मज़दूर को मशीन की गति से काम करना पड़ता है, ऐसे काम हैं - ड्रिलिंग और मिलिंग के। धातु के कई तरह के चादर होते हैं जिनमें छेद करने होते हैं या उन्हें रवास साइज़ में काटना पड़ता है। भेल में इन कामों के लिए मशीनें हैं जो एक सेकेण्ड से भी कम समय में एक शीट में छेद कर देती हैं या काट देती हैं। जो मजदूर ऐसी मशीन पर काम करता है उसे एकटक ध्यान देना पड़ता है।

एक शीट कटी तो दूसरी डालनी पड़ती है। चूक गया तो काम गड़बड़ा जाएगा। सोचो कितने जल्दी-जल्दी उसे ये काम करना पड़ता है? और 8 घंटे खड़े-खड़े यह एक ही काम! मानो तुम्हें घंटों खड़े रहकर ऐसा काम करना होता तो कैसी हालत होती? और ऊपर से सुपरवाइज़र मज़दूर के काम की निगरानी रखते हैं - कहीं कोई काम में चूक तो नहीं रहा है? हर कारखाने की तरह भेल में भी सुपरवाइज़रों का यही काम है। भेल में करीब 3000 सुपरवाइजर हैं। सुपरवाइजर को 1500 से 1800 रु. प्रति माह तक मिलते हैं।

सभी कारखानों में सब मज़दूर एक ही काम तो करते नहीं। उनमें काम बांट दिए जाते हैं। ऐसा भेल में भी होता है। पर यहाँ मैनेजरों ने मज़दूरों से अधिक से अधिक काम करवाने का एक तरीक़ा सोचा है। हर मज़दूर को जो काम दिया जाता है और वह जिस मशीन पर काम करता है इसके हिसाब से हर काम का एक समय निश्चित कर लिया जाता है। मज़दूरों को अपना वेतन तो मिलता ही है पर यदि इस निश्चित समय में काम कर लिया तो उसे कुछ अधिक पैसे मिलते हैं। यदि और जल्दी काम किया तो और अधिक पैसे मिलते हैं। इससे

मज़दूरों में और तेज़ काम करने की होड़ लग जाती है।

उत्पादन बढ़ता जाता है, इस बढ़ते हुए उत्पादन का फायदा किसे होता है?

यह कारखाना किसका है?

यह कारखाना है सरकार का। इस कारखाने का उत्पादन बेचकर फायदा सरकार को ही जाता है। उत्पादन बढ़ाने और बनाए रखने के लिए सरकार कई मैनेजर नियुक्त करती है। यही मैनेजर तय करते हैं कि किस को कैसा काम दिया जाए? क्या उत्पादन हो और कितना? भेल में 2000 मैनेजर व इंजीनियर हैं।

सबसे उच्च श्रेणी के मैनेजरों और इंजीनियरों को 4500 से 6,000 रु. प्रति माह तक वेतन मिलता है।

मज़दूर से लेकर मैनेजर तक सभी 8 घंटे काम करते हैं, फिर भी कितना अन्तर है उनके वेतन में.....!

अभ्यास के प्रश्न

1. कारखानें की क्या विशेषताएं हैं?
2. भेल में कौन सी चीज़े बनती हैं और कहाँ काम आती है?
3. भेल में काम करने वाले लोगों को किन श्रेणियों में बांटा गया है?
4. भेल में काम किस प्रकार किया जाता है? आर्डर आने से मशीन भिजवाने तक की पूरी प्रक्रिया को संक्षिप्त में लिखो।
5. भेल में हर व्यक्ति कितने घंटे काम करता है? कुल कितने घंटे काम होता है? यह कैसे हो पाता है?
6. भेल एक कारखाना है। किस वजह से भेल को कारखाना कहते हैं?
7. भेल में काम कर रहे मज़दूरों, बीड़ी बनाने वालों और चमड़े का काम करने वाले मज़दूरों की तुलना करो।

   एक मज़दूर को कितना मिलता है?

   स्थाई मज़दूर कौन है?

   उनके काम में किस तरह का अन्तर है?
8. भेल में मुनाफ़ा किसे मिलता है?
9. भेल में मज़दूरों से अधिक काम करने के लिए किस तरह प्रोत्साहित किया जाता है?